वसंत

संगीत की देवी माँ शारदे

- गोर्वद्धन सिंह फौदार

शारदे माँ हे! देवी देव प्रिया, धरा उमंग तु लाई हज़ार
हर्षित गगन पवन हर मन है, मनोरंजनी तु आई द्वार।
कण्ठ मुनि गुणी वासिनी, तु आहत अनहद नाद
वीणा वादिनी विद्यादायिनी, राग रागिनी का भण्डार।
षड्ज ऋषभ गंधार मध्यम, पंचम धैवत निषाद प्रिय
सप्तसुरों का सुमधुर सरगम, सप्तक मन्द्र मध्य तार।
आरोह अवरोह तान श्रुति, गुंजे हरदम जन-जन कण में
मोहे रस लय छन्द तेरे उत्तम, भाते तेरे शब्द शृंगार।
वादी, संवाद, अनुवादी, गीत, संगीत का अतुल्य धन तु
तत्, सुषिर, अवनद्ध, घन, हिलमिल सारे भरे झंकार।
ख्याल, ठप्पा, ठुमरी, तराना अद्भुत अमोल है
उपलब्धियाँ
संयमित समय सारिणी, चल अचल तेरे स्वर विस्तार।
गाए ब्रह्माण्ड सारा, गीतं, वाद्यं च नृत्यं त्रयं संगीत
मुच्यते
सृष्टि का तु अनुपम अंग, भरती पल पल जीवन
निखार।
रहकर साथ सदा तेरे, रहा 'सच्चिदानन्द' आनन्दित
ठाठ तेरे दस ताल पठन से, पुलकित बसा मेरा संसार।
हे वाणी पाणि धारिणी, संगीत की देवी माँ शारदे
करूँ मैं तेरी जय-जयकार, करूँ मैं तेरी जय-जयकार।

वसंत

अस्मिता और सर्जना का त्रैमासिक

संपादकीय संपर्क
डॉ लक्ष्मी झमन
मुख्य संपादक, वसंत/रिमझिम
सृजनात्मक लेखन एवं
प्रकाशन विभाग
महात्मा गांधी संस्थान, मोका
मॉरीशस
creativewritingdept@gmail.com
Phone : 4032022
Fax : 4332164

वसंत में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार तथा दृष्टिकोण लेखकों के हैं, इसके लिए संपादकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

पत्रिका विवरण
वर्ष ४५ (२०२३), अंक १५८
एक प्रति – ३५ रु, विदेश 2 USD

वसंत पत्रिका से संबंधित किसी भी तरह के विवाद मॉरीशस-न्यायालय के अधीन ही मान्य होंगे ।

सज्जा सामग्री – इंटर्नेट

मुख्य संपादक
डॉ लक्ष्मी झमन
वरिष्ठ प्राध्यापिका एवं अध्यक्षा
सृजनात्मक लेखन एवं
प्रकाशन विभाग

उपसंपादक
श्रीमती श्रीति रामपल
सृजनात्मक लेखन एवं
प्रकाशन विभाग

प्रकाशक
महात्मा गांधी संस्थान, मॉरीशस

मुद्रक
विक्रम शिवतोहल

टाइप सेटिंग
दिशा बहादुर

आवरण सज्जा
विक्रम शिवतोहल

वेबसाइट
https://www.mgirti.ac.mu
©Mahatma Gandhi Institute Mauritius
ISSN 1694-4100

अनुक्रम

संपादकीय	- डॉ. लक्ष्मी झमन	- 3
लता मंगेशकर	- श्रीमती रत्ना पदारथ	- 5
स्वर कोकिला लता मंगेशकर	- लक्ष्मण प्रसाद डेहरिया	- 10
लता मंगेशकर	- गोवर्धन यादव	- 13
लता मंगेशकर के गीतों में सुरों की लाक्षणिकता	- डॉ सुरेश मेघवाल	- 17
देशभक्ति विषयक लता मंगेशकर के गीतों की विवेचना	- डॉ तलविंदर कौर	- 26
संगीत के क्षेत्र में लता मंगेशकर का योगदान	- डॉ मोनिका गर्ग	- 32
लता मंगेशकर के प्रसिद्ध दर्द भरे गीत : एक अनुशीलन	- डॉ हिमानी भाटिया	- 44
लता मंगेशकर का जीवन संघर्ष	- डॉ. दत्तात्रेय गौतम	- 52
लता मंगेशकर : भारत भाव की महान यात्री	- डॉ साकेत कुमार सहाय	- 56
लता मंगेशकर के गीतों में विरह की भावना	- डॉ भावना शर्मा	- 61

संपादकीय

- डॉ लक्ष्मी झमन

प्रत्येक मनुष्य जीवन में आनंद प्राप्त करना चाहता है, मस्ती चाहता है, नृत्य करना चाहता है और थिरकन चाहता है। मनुष्य की सारी आशाएँ संगीत के माध्यम से पूर्ण होती हैं। संगीत के बिना जीवन अधूरा है। हर व्यक्ति जीवन में हृदय के तारों में राग और सुर चाहता है। जब यह आनंद, यह राग, यह सुर व्यक्ति को प्राप्त होता है तो उसका जीवन रसयुक्त बना रहता है।

यह मान्यता है कि जो संगीत को अपनाता है वह निरोग रहता है। हर समय उसका मन प्रफुल्लित रहता है। संगीत का संसार अत्यंत विस्तृत है। संगीत की विविध कलाओं में किसी भी एक कला में निपुण जो कोई भी हो जाए वह यश का भागी हो जाता है। संगीत सीखने के लिए अत्यंत परिश्रम और साधना की आवश्यकता पड़ती है। संगीत की दुनिया इतनी मनभावन होती है कि जो एक बार इसमें कदम रख दे वह अपने अभीष्ट की प्राप्ति करके ही चैन पाता है। जो व्यक्ति संगीत में रुचि रखता है वह निस्संदेह अपने क्षेत्र में पदार्पण करने के पश्चात् अपनी पसंद की कला में अपनी निपुणता की सिद्धि के लिए घोर तपस्या करता है।

हमारी भारतीय संस्कृति में माता सरस्वती संगीत की देवी के रूप में वंदनीय है। हर संगीत प्रेमी माँ शारदे का अनन्य भक्त बनकर अपनी कला की कसौटी पर खरा उतरने के लिए उनकी आराधना करता है। कलाकार बनना आसान नहीं होता। चाहे वह नृत्य हो, गायन हो अथवा वाद्य वादन हो।

विश्व के महान कलाकारों में लता मंगेशकर का नाम अग्रणी है। यह नाम है पार्श्व-जगत की उस हस्ती का जिसके जन्म से भारत-भूमि गौरवान्वित है। संगीत की दुनिया में वे अत्यंत लोकप्रिय हैं और उनका नाम गिनेस बुक में भी अंकित है। लता जी ने हिन्दी फिल्मों में अपनी आवाज़ का जादू तो बिखेरा ही है, इसके साथ ही भारत के करीब हर भाषा को पार्श्व गायिकी देकर उन्होंने अनगिनत फिल्मों को अपने गाए हुए गानों के बल पर सफल बनाया है।

लता मंगेशकर जी का जन्म 28 सितंबर सन् 1929 में इंदौर में हुआ था। वे मराठी रंगमंच के प्रसिद्ध गायक और अभिनेता मास्टर दीनानाथ की पुत्री थीं। अपने पिता के निधन के बाद उन्होंने मात्र 13 साल की उम्र में अपने परिवार की ज़िम्मेदारी लेनी शुरू कर दी। उनके सहारे 3 छोटी बहनें और एक भाई परवरिश के लिए थे। चार छोटे भाई-बहनों के पालन-पोषण और उनके लिए आर्थिक स्थिति को सुलझाना 13 वर्षीय लता जी के ज़िम्मे आ पड़ा था। 5 साल की उम्र

में वे अपने पिता के साथ नाटकों में अभिनय करती थीं। 14 वर्ष की आयु में सार्वजनिक रूप से शोलापुर के नूतन संगीत थिएटर के माध्यम से स्टेज पर आकर अपनी आवाज़ का जादू बिखेरकर उन्होंने खूब वाहवाही कमाई। सन् 1947 में उनकी उम्र केवल 18 वर्ष की थी जब बसंत जोगलेकर ने अपनी फिल्म 'आपकी सेवा' में उनको पहला ब्रेक दिया था। फिल्म आपकी सेवा के लिए गाना गाते ही 18 वर्षीय लता जी की धूम मच गई। 'आपकी सेवा' के बाद फिल्म मजबूर का गाना 'अंग्रेजी छोड़ा चला गया' लोकप्रिय हुआ। उसके बाद उनका हर गीत संगीत प्रेमियों के हृदय की वीणा के तारों को झंकृत और तरंगित करता चला गया। निसंदेह संगीत और गायन की प्रतिभा उन्हें विरासत में मिली थी।

लता जी के बारे में अवार्ड्स की बात कहना सूरज को दीपक दिखाने के समान है। फिल्मी दुनिया का कोई भी अवॉर्ड ऐसा नहीं बचा है जो लता जी की झोली में न आया हो। लता मंगेशकर की मीठी वाणी निराशा में आशा का संचार करती है। उनके गीतों से हमने जीना सीखा है, संभलना सीखा है और गिरकर उठना सीखा है। आज वे नहीं हैं परंतु उनके गीतों के बोल सदैव संगीत प्रेमियों के कानों में गूँजते रहेंगे। गोप्यो इंटरनेशनल एवं भारतीय उच्चायोग के सहयोग से 10 मार्च 2022 को मॉरीशस के महात्मा गांधी संस्थान के संगीत विभाग के कलाकारों द्वारा दिवंगत लता मंगेशकर जी को श्रद्धांजलि अर्पित की गई थी।

राज करती सबके दिलों पर, नाम है उनका लता मंगेशकर
नाम की ही लता नहीं वे, दी जग को गीतों की भी लता अपार
सुर-सम्राज्ञी जग उन्हें कहे, अमृत बरसाए उनका मधुर स्वर
धन्य है वह भारत भूमि, जहां जन्म लेते ऐसे अनोखे कलाकार
गीतों में सजाए रसों का शृंगार, करती रहीं वे हिन्दी का प्रचार
पत्थर में भी जान आ जाए, कंठ में उनके अद्भुत चमत्कार
माँ शारदे की है वरद पुत्री, अक्षय रहे उनके गीतों की विरासत
रंग, तरंग, उमंग लहराए, है गायन में उनकी ऐसी बरकत
प्रेरणा है, धड़कन है, भारत-रत्न वे, हैं सब उनके आगे नतमस्तक
'वसंत' अपनी झोली में भर लाई है, लता दीदी की गरिमा की सौगात

लता मंगेशकर

- श्रीमती रत्ना पदारथ

सफलता के लिए संघर्ष करना कठिन है पर जीवन जीने के लिए संघर्ष करना अति-आवश्यक है। जीवन चाहे संघर्षों से घिरा हो परंतु कुछ लोग इस संघर्ष को अपने सपनों के आड़े नहीं आने देते। जिन्हें अपनी मेहनत पर पूरा विश्वास हो, उनका नाम एक-न-एक दिन स्वर्णाक्षरों में लिखा जाता है। वे इतिहास के पन्नों पर अमर हो जाते हैं। सदियों तक उनका नाम आदरपूर्वक लिया जाता है। ऐसा ही एक नाम है – भारत की कोकिला लता मंगेशकर का। कहने के लिए तो वे बॉलीवुड इंडस्ट्री की एक बेहतरीन गायिका थीं, जिन्हें 'Nightingale of India'के खिताब से सम्मानित किया गया था। पर क्या वे यूँ ही भारत की कोकिला कहलाईं? क्या यूँ ही उनका नाम आदरपूर्वक लिया जाता है? क्या वे इतिहास के पन्नों पर यूँ ही अमर बन गईं? इसके लिए उनके जीवन गाथा का कुछ सारांश हम ढूंढकर आपके समक्ष प्रस्तुत करते हैं –

लता मंगेशकर जिन्हें पूरा विश्व लता जी या लता दीदी से जानता है, उनका जन्म इंदौर में सितंबर की 28 तारीख 1929 में हुआ था। उनका जन्म एक ऐसे परिवार में हुआ था जहाँ संगीत, शैली या संगीत की विद्या को सम्मान दिया जाता था। क्यों न हो, भारतीय संस्कृति में कला का ज्ञान होना, यह माँ सरस्वती की साक्षात देन होने के समान जाना जाता है। लता जी के पिता दीनानाथ मंगेशकर को स्वयं शास्त्रीय संगीत के महारथी थे – उनकी एक थिएटर कंपनी थी जिसमें संगीत एवं कला में रूचि रखने वालों को अवसर प्राप्त होता था। अब पिता एक दिग्गज शास्त्रीय संगीतकार हों तो यह स्वाभाविक बात है कि घर में शुरू से ही संगीतमय वातावरण में पलने वाले बच्चों पर उसका सीधा प्रभाव पड़ता ही है।

लता जी को पाँच वर्ष की आयु में ही पिता द्वारा संगीत की शिक्षा दी जाने लगी और केवल पिता द्वारा पर उस्ताद अमन अली खान साहब और उस्ताद अमानत खान द्वारा भी तालीभ हासिल हुई। इस छोटी सी आयु में उन्होंने संगीत की विद्या को बड़ी ही लगन और निष्ठा से सीखा जो बिल्कुल अद्भुत थी और इस आयु में इतना शान ग्रहण करना और अपनी निपुणता व्यक्त करना किसी दैवी आशीर्वाद से कम नहीं था।

लता जी एक ऐसे परिवार से थी जहाँ वे सबसे बड़ी सुपुत्री थीं। उनका जन्म इंदौर में हुआ था पर उनकी परवरिश महाराष्ट्र में हुई थी। उनके पिता मराठी समुदाय के थे और लता जी की माता - शंवंनी एक गुजराती समुदाय से थीं और वे दीनानाथ मंगेशकर की दूसरी पत्नी थी। लता जी का

नाम 'लता' पड़ने के पीछे भी एक दिलचस्प घटना का वर्णन है। आपको जानकर आश्चर्य होगा कि लता जी का असली नाम हेमा हरदिकर था। उनके पिता दीनानाथ ने 'मंगेशकर' यह उपनाम के आगे चलकर अपनाया था जो उनके गाँव मँगेशी से लिया गया था तथा जो गोआ के निकट स्थित है, वहाँ के वे निवासी थे। कुछ वर्षों बाद दीनानाथ जी एक प्रेरणादायक नाटक 'भाव बंधन' की मुख्य महिला पात्र 'लतिका' की भूमिका से वे इतना प्रेरित हुए कि उन्होंने अपनी बड़ी पुत्री हेमा का नाम बदलकर 'लता' रख दिया। इस प्रकार हेमा हरदिकर बनी लता मंगेशकर।

लता जी घर की सबसे बड़ी पुत्री थी। उनके बाद उनकी तीन बहनें, मीना, आशा और उषा और सबसे छोटे भाई हृदयनाथ का जन्म हुआ। लता जब केवल 13 वर्ष की थी तब उनके जीवन में एक बड़ा परिवर्तन आया – तेरह वर्ष की आयु में लता ने अपने पिता को गँवाया और उनके पूरे घर की ज़िम्मेदारी लता के सिर आ गिरी। तब जीवन के ऐसे मोड़ पर जहाँ केवल कला के क्षेत्र में उन्होंने अपनी रोज़ी रोटी का ज़रिया बनाया। संगीत और अभिनय को चुनने के पीछे का कारण था, उनके परिवार से जुड़ा हुआ इतिहास। संगीत और नाटक, अर्थात् कला के क्षेत्र से मंगेशकर परिवार ने बॉलीवुड में अपना परचम लहराया।

लता ने 1942 में मराठी सिनेमा 'किती हसाल' में गायक कलाकार के तौर से शुरुआत की। वैसे यह सब तब हुआ था जब दीनानाथ मंगेशकर जीवित थे और वे इस बात से नाखुश थे कि उनकी बेटी सिनेमा में गाना गए और इसी कारण उनका गाना इस फिल्म से हटा दिया गया था और यह उनके पिता के कहने पर हुआ था। दुर्भाग्यवश उसी वर्ष यानि 1942 में दीनानाथ मंगेशकर चल बसे। अब न चाहते हुए भी लता जी को परिवार को पालने के लिए हिन्दी एवं मराठी फिल्मों में छोटी भूमिकाएँ निभाने का अवसर मिला । हालाँकि उन्हें ऐक्टिंग में कोई खास रूचि नहीं थी।

1945 में लता की भेंट फिल्म निर्देशक एस. मुखर्जी से हुई और इसमें गुलाम हैदर का बड़ा सहयोग था। गुलाम हैदर चाहते थे कि लता जी की गायिकी को फिल्मों में अवसर मिले और इसीलिए वह उन्हें एस. मुखर्जी से मिलवाने ले गए थे पर मुखर्जी को लता की आवाज़ कुछ ज़्यादा पसंद नहीं आई और इस बात के लिए उन्होंने इनकार कर दिया पर हैदर ने लता से वादा किया था कि वे उन्हें फिल्म इंडस्ट्री में काम दिलवाकर ही छोड़ेंगे और लता जी को यह आश्वासन दिलवाया कि एक दिन वह बॉलीवुड इंडस्ट्री के निर्माता और निर्देशक उनकी गायिकी के लिए उनके पैरों पर गिरेंगे।

हर बड़े कलाकार को अपने पहले अवसर की प्रतीक्षा होती है उसी प्रकार लता को उनका सबसे पहला और सबसे बड़ा ब्रेक, हिन्दी फिल्म 'महल' के लिए जिसमें उन्होंने सुप्रसिद्ध गाना

'आएगा अनेवाला' का गाना गाया था और यह गीत उस वर्ष का सुपरहिट गाना था। 1950 से लता जी की कामयाबी की चढ़ान बस शुरू ही हुई थी और यह दौर सारी आवाज़ों का था क्योंकि इस दौर में नूरजहाँ और शमशाद बेगम जी की आवाज़ को लोग पसंद करते थे और उस समय लता जी की आवाज़ कुछ हटकर थी। शुरुआत में उनकी ध्वनि को उतनी पसंदगी नहीं मिली पर महल फिल्म के मशहूर गीत के बाद लता जी ने मानो बॉलीवुड इंडस्ट्री में अपने झंडे गाड़ दिए। लता ने उस दौर के लोकप्रिय संगीतकारों के साथ काम किया जैसे शंकर जयकिशन, एस. दी. बर्मन, नौशाद, हेमंत कुमार और सलिल चौधरी।

शंकर जयकिशन को लता जी की आवाज़ इतनी पसंद आई थी कि उनकी लगभग कई फिल्मों में उन्होंने लता जी की ही आवाज़ में अधिकतर गीतों को उनसे गँवाया। देखते ही देखते 1960 तक लता जी बॉलीवुड प्लैबैक गायिकी की महारानी बन चुकी थीं। न केवल संगीतकार पर आम जनता के दिलों में भी उन्होंने अपनी जगह कायम कर ली थी।

1970 में उन्होंने मशहूर अभिनेत्री मीन कुमारी को पाकीज़ा फिल्म के लिए गाने रिकार्ड किए थे जो लता जी को बुलंदियों तक ले गया। लता जी ने एस. दी बर्मन की फिल्म प्रेम पुजारी, शर्मीली और अभिमान में भी गाना गया जो आज भी लोगों के दिलोदिमाग में छाप छोड़ गए।

1970 और 1980 का एक दौर था जब लता जी ने संगीतकारों के बच्चों के साथ भी काम किया। 1990 में लता जी ने खुद का एक प्रोडक्टशन हाउस स्थापित किया जिसमें पहली और अंतिम फिल्म लेकिन बनी पर पूरी तरह से पिट गए। फिल्मी गीतों के अतिरिक्त उन्होंने कई गैरफ़िल्मी गीतों को बखूबी गया। जगजीत सिंह के साथ उन्होंने कई गज़लें गईं जो लोगों को बहुत पसंद आई।

यश चोपड़ा, हिन्दी फिल्म जगत के ऐसे डायरेक्टर हैं जिन्होंने बेहतरीन फिल्मों से फिल्म इंडस्ट्री में अपनी छवि बनाई, जैसे लम्हे, दिलवाले दुल्हनिया ले जाएँगे, डर, ए दिल्लगी, दिल तो पागल है और वीर-ज़ारा में उन्होंने लता जी से गीत गवाया। आपको जानकर हैरानी होगी – वीर ज़ारा फिल्म में जब उन्होंने अपनी आवाज़ दी थी तब उनकी उम्र 75 की थी। लता जी ने कई बंगाली गाने भी गाए जिसका निर्देशन सलिल चौधरी और हेमंत कुमार ने किया था।

लता जी ने स्वयं अपनी ही निर्देशित फिल्म आनंद घन में अपना संगीत निर्देशन किया था। लता जी गायिकी की कला को पूजा-साधना मानती थीं, इसलिए वे जब भी गाना गाती बिना जूतों के गाती थीं। उन्हें कई बार फिल्मफेर अवॉर्ड प्राप्त हुआ था। साल 1972, 1975 और 1990 में नैशनल अवॉर्ड भी मिला था साथ ही साथ 1966 और 1967 में महाराष्ट्र स्टेट अवॉर्ड भी प्राप्त हुआ था। अपने पूरे कल में उन्होंने बहुत नाम कमाया। 1969 में उन्हें पद्मभूषण से सम्मानित

किया गया, 1974 में उनका नाम गिनेस बुक ऑफ वर्ल्ड रेकॉर्ड्स में शामिल किया गया क्योंकि वे अब तक की एकमात्र गायक कलाकार थीं जिन्होंने सर्वाधिक गाने गाए थे। 1989 में उन्हें दादा साहेब फाल्के अवॉर्ड प्राप्त हुआ। 1999 में वे पद्म विभूषण से सम्मानित की गई। 2000 में उन्हें लाइफ्टाइम अचीव्मन्ट का अवॉर्ड प्राप्त हुआ। 2001 में भारत रत्न के अवॉर्ड से उनका सम्मान हुआ और उसी वर्ष उन्हें नूरजहां अवॉर्ड भी दिया गया। लता जी ने 36 भारतीय और विदेशी भाषाओं में अपनी गायिकी की कला का प्रदर्शन किया है। इतना ही नहीं, उन्होंने भिन्न-भिन्न शैलियों में अपनी गायिकी को दर्शाया है, फिर चाहे वह पाश्चात्य संगीत हो, रोमांटिक गीत हो या भक्ति रस में डूब हुआ भजन। उन्होंने सदा ही गीतों के प्रति अपनी पूरी निष्ठा और समर्पण को दर्शाया है।

27 जनवरी 1963 को लता जी ने भारत के प्रधान मंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू को पिघला दिया जब उन्होंने देशभक्ति के प्रेम को दर्शाने वाला गीत 'एँ मेरे वतन के लोगों' गाया। उस गीत को सुनकर सभी की आँखों में आँसू आ गाए। उस भाव को जिस प्रकार लता जी ने व्यक्त किया शायद ही कोई वह कर पाएगा।

1991 में लता जी को 30000 सोलो, दुएट और कोरस गानों के रिकॉर्डिंग के लिए सराहा गया जो 14 भारतीय भाषाओं में गए गए थे और यह केवल 1948 से 1987 के बीच गाए गए थे। इसके अतिरिक्त उन्हें इन्हीं वर्षों के अंतर्गत चार फिल्मफेर अवार्ड्स भी प्राप्त हुए थे।

मधुमती 1958 – आजा रे परदेसी
20 साल बाद 1962 – कहीं दीप जले कहीं दिल
खानदान 1965 – तुम्हीं मेरे मंदिर
जीने की राह 1969 – आप मुझे अच्छे लगने लगे।
वे भारत की एकमात्र ऐसी नागरिक रह चुकी हैं जिन्हें सबसे अधिक सराहना मिली और इसी से उनको पद्मविभूषण से सम्मानित किया गया था। ठीक दो वर्ष पश्चात वे दूसरी सम्मानीय व्यक्ति थीं जिन्हें 2001 में भारत रत्न प्राप्त हुआ और यह अवॉर्ड उन्हें सर्वोच्च काम के प्रदर्शन के लिए भारत का सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार दिया गया था।

भारत की स्वरकोकिला और भारत रत्न लता मंगेशकर का निर्धन 92 वर्ष की उम्र में 6 फरवरी 2022 की मुंबई के बीछ कैन्डी अस्पताल में सुबह के 8.15 को उन्होंने अपनी अंतिम साँसें लीं। वे निमोनिया और कोरोना से पीड़ित थीं। पूरा विश्व उनकी मृत्यु की खबर सुनकर हिल गया था।

लता जी की मृत्यु से पूरे भारत में सन्नाटा छा गया। इस दुखद समाचार से पूरी फिल्म इंडस्ट्री मानो शोक में डूब गई थी। भारत ने सच में अपना एक अनमोल रत्न खो दिया था।

लता जी का अंतिम संस्कार शिवाजी पार्क में पूरे राजकीय सम्मान के साथ किया गया और उनके निधन पर पूरे भारत देश में दो दिनों के राजकीय शोक की घोषणा की गई थी। इतना ही नहीं मॉरीशस में भी जहाँ भारतीय वंशज के लोग बसते हैं, यहाँ पर भी लोगों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

लता मंगेशकर आज भले ही हमारे बीच नहीं है, परंतु उनकी स्वर्णिम विरासत भारत देश की अनमोल धरोहर है जिसे सहेजकर रखना और आगे बढ़ाना अब म्यूजिक इंडस्ट्री का दायित्व है। लता जी ने अपना पूरा जीवन संगीत के लिए समर्पित कर दिया। लता मंगेशकर सदा के लिए अमर रहेंगी।

++++++

संगीत आत्मा की आवाज़ है
गायक केवल शब्दों को बोलता है
भावनाएँ अंतरात्मा की आवाज़ बनती हैं।

बिना ईश्वर की कृपा
गुरु के आशीर्वाद
और माता-पिता की परवरिश के
प्रसिद्धि प्राप्त नहीं होती।

कठिन साधना करके भी
जो ज्ञान का अर्जन करता है,
पुण्य का भंडार एकत्रित करता है,
एक क्षण के क्रोध से
वह सब नष्ट हो जाता है।

\- लता मंगेशकर

स्वर कोकिला लता मंगेशकर

- लक्ष्मण प्रसाद डेहरिया

प्राचीन काल से हिंदुस्तान में एक संगीत गायन को विशेष महत्व दिया गया था। भारत के रीति रिवाज, परंपराओं, संस्कृति में इनका विशेष योगदान रहा। हिंदुस्तान में राजा महाराजा के बड़े आयोजनों में गीत, संगीत, नृत्य के माध्यम से मनोरंजन सामाजिक समरसता का माहौल हमेशा से रहा है। आज़ादी के पूर्व ही हिंदुस्तान में मूक फिल्मों का चलन प्रारंभ हुआ।

बाद में 1913 से 1930 ईस्वी तक मूक फिल्में ही लगभग चलती रहीं। 1931 से बोलती आलमआरा फिल्म से एक क्रांति इस क्षेत्र में आई। इन फिल्मों में ऐतिहासिक पौराणिक और समाज सुधार के लिए फिल्में बनीं। इन फिल्मों में अधिक से अधिक गीत गाए जाते थे। फिल्मों में पार्श्व गायन का आरम्भ हुआ। कई चर्चित पार्श्व गायकों का योगदान इसमें भरपूर रहा।

पंडित दीनानाथ मंगेशकर इंदौर में ड्रामा कंपनी चलाते थे। इनकी कम्पनी द्वारा अनेकों ड्रामे अनेकों क्षेत्रों में किए गए। दीनानाथ जी की पत्नी का नाम सुधामती मंगेशकर था। इनकी पांच संतानें थीं, बड़ी बेटी लता, मीना, आशा, उषा और पुत्र हृदयनाथ मंगेशकर थे। दीनानाथ जी के घर संगीत का माहौल था। शास्त्रीय संगीत ड्रामों के रिहर्सल हुआ करते थे। कुछ लोग उनसे शास्त्रीय संगीत सीखने आते थे। लता जी का जन्म 28 सितंबर 1929 को हुआ था। लता मंगेशकर जी जब 5 वर्ष की थी, वह बरामदे में खेल रही थी। पंडित दीनानाथ जी ने एक विद्यार्थी को, जो शास्त्रीय संगीत सीख रहा था उसे एक राग गाकर सुनाया और इसका अभ्यास करो, मैं अभी आता हूँ कहकर वह नीचे आ गए। उस विद्यार्थी ने गायन शुरू किया पर शुरुआत ठीक नहीं कर रहा था। 5 वर्ष की लता मंगेशकर उसके पास गई और इस राग को गाकर सुनाया। तभी दीनानाथ जी ने लता जी को सुन लिया। वे बहुत खुश हुए। दीनानाथ जी ने अपनी पत्नी से कहा मैं बाहर के लोगों को संगीत की शिक्षा दे रहा हूं परंतु घर में ही विद्यार्थी है। उन्होंने दूसरे दिन सुबह 6:00 बजे लता जी को उठाया और उसे तानपुरा देकर बोले कल जो राग तुम उस विद्यार्थी को बता रही थी उसी राग से शिक्षा प्रारम्भ करो।

लता जी ने स्कूल में शिक्षा ग्रहण नहीं की थी। क्योंकि वह पहले ही दिन स्कूल अपनी छोटी बहन को गोद में रखकर गयी। शिक्षक ने कहा ऐसे में कैसे पढ़ पाओगी, इसे ले जाओ और कल से अकेले आना। लता जी इतनी रुष्ट हुई कि वे फिर स्कूल नहीं गई। उनकी शिक्षा घर पर ही हुई। कुछ समय बाद दीनानाथ जी ड्रामा मंडली के साथ सांगली चले गये। बाद में उनकी मंडली का

कार्यक्रम कोल्हापुर में चल रहा था। आयोजकों ने दीनानाथ जी से प्रार्थना की कि हम इसी स्टेज पर उनका शास्त्रीय संगीत सुनना चाहते हैं। उस समय लता जी 9 वर्ष की थी। उसने कहा पिता जी मैं भी आपके साथ गाऊँगी। स्टेज पर पहले लता जी का शास्त्रीय संगीत हुआ जो कि बहुत सराहा गया। यहां उनका प्रथम स्टेज गायन था। मार्च 1942 में प्रथम बार किसी चलचित्र के लिए गीत गाया। उनके पिता जी के मित्र सदाशिव नेवलेकर आगरा से उन्हें यह गीत गाने का मौका मिला। अप्रैल 1943 में दीनानाथ जी का स्वर्गवास हो गया। उस समय लता जी 13 वर्ष की थी। उसके घर आर्थिक संकट आ गया। स्वर्गीय दीनानाथ जी के मित्र मास्टर विनायक जो प्रसिद्ध अभिनेत्री नंदा के पिता थे ने उन्हें सहारा दिया। उन्होंने काम दिया गीत के साथ अभिनय भी करना पड़ा। वे कुछ वर्षों तक छोटे-मोटे अभिनय करती रहीं। उसी समय भी मास्टर विनायक का भी निधन हो गया। फिर गीत गायन के समय मास्टर गुलाम हैदर से उनका संपर्क हुआ। उसी समय वे निर्देशक निर्माता शशिधर मुखर्जी से मिले। लता जी का गीत सुनवाया परंतु शशिधर मुखर्जी ने कहा कि इनकी आवाज़ बहुत पतली है। उन्हें अपनी फिल्म शहीद जिसके अभिनेता यूसुफ खान (दिलीप कुमार) अभिनेत्री कामिनी कौशल जी के लिए मोटी आवाज़ चाहिए थी। गुलाम हैदर जी ने अपनी एक फिल्म का पूरा गाना लता जी से गवाया और गीत प्रसिद्ध हुआ। लता जी का गायन सर्वत्र गूँजने लगा। उनके गीतों को संगीतकार अनिल विश्वास, अन्य बड़े-बड़े संगीतकारों ने सुना। उन्होंने उर्दू की शिक्षा मौलाना महबूब, शास्त्रीय संगीत शिक्षा अमानत खान से ली। लता जी को पार्श्व गायन में प्रसिद्धि, महल फिल्म के गीत 'आएगा आएगा आने वाला' से मिली। इसके बाद लता जी ने कभी भी मुड़कर नहीं देखा। उन्हें एक के बाद एक फिल्म मिलती रही।

लता जी अपने घर की बड़ी बेटी थी। उन्होंने पिता के निधन के बाद पारिवारिक खर्चे की पूरी जिम्मेदारी उठा ली थी। उन्होंने जीवन पर्यन्त परिवार की सेवा की। उन्होंने विवाह नहीं किया। सन् 1950 से लेकर 1975 तक उनके मधुर गीतों की धूम मची रही। फिल्मों की सफलता के लिए उनके गीतों को ही श्रेय जाता रहा। उन्होंने 1975 के बाद चुनिंदे गीत ही गाती रहीं। उनका संगीतकार पार्श्वगायकों तथा सभी सहयोगियों के साथ सरल एवं सौहार्दपूर्ण व्यवहार रहा।
एक बार पाइजन से वे बहुत बीमार हुई। 3 महीनों तक इलाज चलता रहा। दोपहर के समय मजरूह जी मिलने आते। शेर, शायरी, गजलें सुनाते और शाम तक चले जाते। लता जी कहती थी कि पार्श्व गायन करने के लिए शास्त्रीय संगीत सीखना ज़रूरी है, शब्द उच्चारण, व्याकरण, उर्दू भाषा का ज्ञान भी आवश्यक है।

लता जी के गीतों के लिए उन्हें छोटे-बड़े बड़े अनेकों पुरस्कार मिलते रहे। फिल्म फेयर पुरस्कार, राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार भी मिले। लगभग उनके हर वर्ष ही उनको पुरस्कार मिलने का क्रम जारी रहा। सन 1970 के बाद उन्होंने स्वयं ही कहा मेरी बजाय अब से नए गायकों को पुरस्कार दिए जाए। 1969 में भूषण पुरस्कार, सन 1989 में दादा फाल्के पुरस्कार, सन 1999 में पद्म विभूषण पुरस्कार और 2001 में भारत का सर्वोच्च सम्मान पुरस्कार 'भारत रत्न' भारत सरकार द्वारा दिया गया।

लता मंगेशकर जी ने पार्श्व गायन के साथ अंतिम दशकों में फिल्म निर्माण के क्षेत्र में भी कदम रखा। उनके छोटे भाई हृदयनाथ के साथ मिलकर कई फिल्मों में सहयोग दिया। उनके गाए कई एल्बम बने। चर्चित भजन मीरा का एल्बम बहुत प्रसिद्ध हुआ। वे हिंदुस्तान से लेकर विश्व के अनेकों देशों में आर्केस्ट्रा के माध्यम से अपने गीत जन जन तक पहुँचाती रही । उन्होंने भारत के गीत, संगीत को ऊंचाइयों तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

लता मंगेशकर भारत की एक प्रसिद्ध पार्श्व गायिका के साथ-साथ भारत की अर्थव्यवस्था को सामाजिक समरसता, धर्मनिरपेक्षता को बढ़ाने में जीवन पर्यंत लगी रही। उन्होंने ईश्वर अल्लाह गाना...... सरकारे मदीना, ऐ मालिक तेरे बंदे हम, ज्योति कलश छलके जैसे महत्वपूर्ण गीत गाए। सन 1962 में चीन के युद्ध के बाद दिल्ली में एक फंक्शन में गीतकार प्रदीप द्वारा रचित गीत ऐ मेरे वतन के... गीत गाया। कार्यक्रम में उपस्थित सभी के आंखों में आंसू थे। कार्यक्रम में उपस्थित प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरु की आँखों से आंसू अविरल बहने लगे थे।

स्वर कोकिला लता मंगेशकर जी ने लगभग 5 - 6 हजार से बढ़कर गीत गाए। उनके मधुर गीत सुनने के बाद श्रोता उनकी उन गीतों से अपने आप को जुड़ पाते हैं। उनकी पुरानी फिल्मों से निधन तक की फिल्मों में गाए गीत से फिल्म इंडस्ट्री तथा हिंदी भाषा को बढ़ाने में देश की एकता, अखंडता, धर्मनिरपेक्षता के स्वरूप को बढ़ाने में उनका चिरस्मरणीय विशेष योगदान हिंदुस्तान के लिए सदा रहेगा। उनका निधन 6 फरवरी 2022 को हो गया। निधन के बावजूद उनके गीत आज भी हमारे साथ है और भविष्य में भी रहेंगे।

- छिन्दवाड़ा - मप्र.

लता मंगेशकर

(28.09.1929 : 06.02.2022)

- गोवर्धन यादव

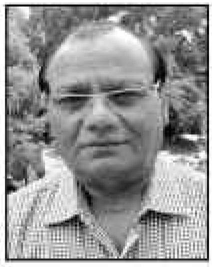

अभी सूर्योदय होना बाकी है। सारी दुनिया आँखों में नींद का अंजन काढ़े मीठे-मीठे सपने देख रही होती है। धीरे-धीरे वह समय भी आता है, जब पूरब के भाल से लाल-सुनहरी आभा लिए सूर्यदेवता आकाश पटल पर अवतरित होते हैं। सुरमयी अंधियारा धीरे-धीरे छंटने लगता है। सारा आकाश लाल-पीले-सुनहरे रंग में नहा उठता है। अपने आराध्य देवता के आगमन पर स्वागत-गीत गाने के लिए पखेरु आकाश में ऊँची उड़ान भरते हुए सामूहिक गीत गाते हैं। चिड़ियों के समूह की चिचियाहट सुनकर अलसाए वृक्ष सहसा जाग उठते है। किसी नव-नवेली की तरह शर्माती कलियाँ अपना घूँघट खोलकर मुस्कुराने लगती हैं। मकरंद के लोभी भवरों की टोली, गुनगुन के गीत गाते हुए पराग का स्वाद चखने के लिए निकल पड़ती हैं। ऐसे मनभावन दृश्य को अपने नेत्रों से देखते हुए सहसा मुझे लता दी का गाना -" ज्योति कलश छलके" सुनना बहुत अच्छा लगता है। गीत का हर एक पद आपको अपनी रौ में बहाते हुए आपको एक अनोखी दुनिया की सैर कराने लगता है।

गीत के बोल कुछ इस तरह हैं-

ज्योति कलश छलके - ४
हुए गुलाबी, लाल सुनहरे
रंग दल बादल के
ज्योति कलश छलके

2. घर आंगन वन उपवन।
करती ज्योति अमृत सिंचन
मंगल घट ढल के.....
ज्योति कलश छलके

३.पात पात बिरवा हरियाला
धरती का मुख हुआ उजाला
सच सपने कल के - २
ज्योति कलश छलके

४. उषा ने आँचल फ़ैलाया
फ़ैली सुख की शीतल छाया
नीचे आंचल के ....
ज्योति कलश छलके

५,ज्योति यशोदा धरती मैय्या
नील गगन गोपाल कन्हैय्या
श्यामल छवि झलके - २
ज्योति कलश छलके ज्योति कलश छलके।

६,अम्बर कुमकुम कण बरसाये
फ़ूल पंखुड़ियों पर मुस्काये
बिन्दु तुहिन जल के

इस गीत की रचना महान कवि स्व.श्री पं. नरेन्द्र शर्मा जी ने की थी। फ़िल्म "भाभी की चुड़ियाँ "में इस गीत को फ़िल्माया गया था। इस गीत के संगीतकार थे श्री सुधीर फ़ड़के और स्वर साम्राज्ञी लता दी ने इस गीत को राग भुपाली में गाकर अजर-अमर बना दिया।

लता दी के जबरदस्त प्रशंसक श्री सुमन चौरसिया ने " लता समग्र" एक पुस्तक प्रकाशित की है, जिसमें लता दी के 2014 तक गाए हुए 26 भाषाओं के गीतों का संकलन किया है। इसके अनुसार स्वर कोकिला जी ने लगभग छः हज़ार पाँच सौ गीत गाए।

श्री चौरसिया ने 2008 में अपने संग्रहालय को लता दीनानाथ मंगेशकर ग्रामोफोन रिकॉर्ड संग्रहालय नाम दिया है। संग्रहालय की ओर से लता मंगेशकर पर केन्द्रित तीन पुस्तकों का प्रकाशन भी किया गया। पहली किताब है 'लता समग्र', जो लता जी के गाए करीब साढ़े सात हज़ार गीतों का कोश है। इसमें हिन्दी के साथ ही अन्य देशी- विदेशी भाषाओं के गीत, गैर फिल्मी गीत, अप्रदर्शित फिल्मों के गीत शामिल हैं। इस कोश में गीत की पहली लाइन के साथ फिल्म का नाम, वर्ष, गीतकार और संगीतकार के नाम भी दिए गए हैं। ये एक तरह का संदर्भ ग्रंथ ही है। दो और किताबें हैं, जिनमें लता जी के गीतों पर गीत समीक्षक अजात शत्रु की लिखी समीक्षाएँ हैं।

अयोध्या परिसर में स्वर-कोकिला भारत रत्न लता दीदी की स्मृतियों को अक्षुण्य बनाने के लिए एक विशाल वीणा, जिसकी लम्बाई 10,08 मीटर है, स्थापित की गई है। इसके साथ ही संगीत के क्षेत्र में उनकी उपलब्धि, आत्मा को छूने वाली उनकी आवाज़, शालीन व्यक्तित्व आदि को भी स्थान दिया गया है।

<u>लता दी पर लिखीं गयीं पुस्तकें।</u>

(१) लता मंगेशकर-इन हर ऑन वॉइस (Lata Mangeshkar-in her own voice) लेखिका: नसरीन मुन्नी कबीर

(२) इन सर्च ऑफ लता मंगेशकर (In search of Lata Mangeshkar) लेखक: हरीश भिमानी

(३) लता मंगेशकर: अ बायॉग्रफी (Lata Mangeshkar: a biography) लेखक: राजू भारतन

(४) ऑन स्टेज विद लता (On stage with Lata) लेखिका: नसरीन मुन्नी कबीर और रचना शाह

(५) लता: सुर गाथा लेखक: यतींद्र मिश्रा

(६) लता: वॉइस ऑफ द गोल्डन एरा (Lata: voice of the golden era) मंदर वी बिचू

(७) संघर्ष, सफलता और लता-डा. संजय मोदी।

एक संगीत विशेषज्ञ के रूप में श्री पंकज राग ने फ़िल्मों और संस्कृति पर गहन शोध किया है और सन् 1931 से 2005 तक के फ़िल्म संगीत निर्देशकों पर आधारित उनकी पुस्तक 'धुनों की यात्रा' बहुचर्चित रही है। इस पुस्तक में आपने लता दी पर विस्तार से प्रकाश डाला है।

कवि प्रदीप के एक गैर फ़िल्मी गीत- "ऐ मेरे वतन के लोगों,जरा याद करो कुर्बानी" को जब आपने (दीदी) 27 जनवरी 1963 को भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल जी नेहरु की गरिमामय उपस्थिति में इस गीत को गाया, तो पंडित जी की आँखें छलछला आयी थीं।

भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री माननीय श्री नरेन्द्र मोदी जी ने सुर कोकिला लता मंगेशकर के पिता मास्टर दीनानाथ मंगेशकर की 80वीं पुण्यतिथि पर रविवार को मुंबई में लता दीनानाथ मंगेशकर अवार्ड आयोजन में हिस्सा लिया। इस दौरान पीएम को पहले लता दीनानाथ मंगेशकर पुरस्कार से सम्मानित किया गया जिसके बाद पीएम मोदी ने कार्यक्रम को संबोधित करते हुए कहा कि " मैं संगीत जैसे गहन विषय का जानकार तो नहीं हूँ, लेकिन सांस्कृतिक बोध से मैं ये महसूस करता हूँ कि संगीत एक साधना भी है और भावना भी। जो अव्यक्त को व्यक्त कर दे- वो शब्द है। जो व्यक्त में ऊर्जा का, चेतना का संचार कर दे- वो नाद है और जो चेतन में भाव और भावना भर दे, उसे सृष्टि और संवेदना की पराकाष्ठा तक पहुँचा दे- वो संगीत है। संगीत से आपमें वीररस भरता है। संगीत मातृत्व और ममता की अनुभूति करवा सकता है। संगीत आपको राष्ट्रभक्ति और कर्तव्यबोध के शिखर पर पहुँचा सकता है।"

" हम सब सौभाग्यशाली हैं कि हमने संगीत की इस सामर्थ्य को, इस शक्ति को लता दीदी के रूप में साक्षात देखा है। हमें अपनी आंखों से उनके दर्शन करने का सौभाग्य मिला। मेरे लिए तो ये अनुभव और भी कहीं बढ़कर रहा है। मेरे लिए लता दीदी सुर साम्राज्ञी के साथ साथ मेरी बड़ी बहन भी थीं। पीढ़ियों को प्रेम और भावना का उपहार देने वाली लता दीदी से अपनी बहन जैसा प्रेम मिला हो, इससे बड़ा सौभाग्य और क्या होगा?"

" पुरस्कार जब लता दीदी जैसी बड़ी बहन के नाम से हो, तो मेरे लिए उनके अपनत्व और प्यार का ही एक प्रतीक है। इसलिए, मना करना मेरे लिए मुमकिन ही नहीं है। मैं इस पुरस्कार को सभी देशवासियों के लिए समर्पित करता हूँ।"

आवाज़ ही पहचान है।

आज भले ही लता-दी हमारे बीच नहीं हैं। लेकिन उनकी सुरीली आवाज़ एक अनमोल खज़ाने के रूप में हमारे पास है। अभिनेता जितेन्द्र और स्वप्न सुंदरी हेमामालिनी द्वारा अभिनीत फ़िल्म "किनारा" में कलम के बेताज बादशाह श्री गुलज़ार के द्वारा लिखित गीत, जिसे संगीत-बद्ध किया आर.डी बर्मन साहब ने और लता दी ने गायक श्री भूपेन्द्र के साथ कोरस में इस गीत को गाया है--" नाम गुम जायेगा...चेहरा ये बदल जायेगा। मेरी आवाज़ ही पहचान है। गर याद रहे"। सच भी है कि दीदी की मखमली आवाज़ ही उनकी अपनी पहचान है।

मैं तो मात्र एक अदना-सा लेखक हूँ। लता दी पर संपूर्णता से लिखने में मैं अपने आपको असमर्थ पाता हूँ। हाँ, यदि मैं संगीत और संगीत की बारीकियों को समझ होता तो शायद और भी लिखने का साहस जुटा पाता।

फ़िल्म "महल" एक प्रसिद्ध गीत है- " आएगा...आएगा आने वाला आएगा।" इस गीत में यह विश्वास प्रकट किया गया है कि जो चला गया है वह फ़िर लौट कर आएगा। इस गीत के बोल पर विश्वास करते हुए कि "दीदी" आप फ़िर लौट कर आएँगी। ज़रूर आयेगीं इस धरा पर। और फ़िर आपकी कोयल-सी मखमली आवाज़ फ़िर हिंद के बगीचे में अपना जादू बिखेरेगीं।

स्वर साम्राज्ञी लता की दिव्य स्मृतियों को कोटि-कोटि नमन।

विनम्र श्रद्धा सुमन अर्पित।

- 103, कावेरी नगर,छिन्दवाड़ा (म.प्र.)

++++++

लता मंगेशकर के गीतों में सुरों की लाक्षणिकता :-

- डॉ सुरेश मेघवाल

लता मंगेशकर ने कई तरह के गीतों में सुरों की लाक्षणिकता की खूब अभिव्यक्ति की है। सुर का अर्थ स्वर , आवाज़ होता है। जैसे -

" इतना भी बेकसों को ना आसमाँ सताए
के दिल का दर्द लब पे फ़रियाद बन के आए
जो कुछ था पास अपने वो हम लुटा चुके हैं
अपने ही हाथों अपनी हस्ती मिटा चुके हैं
उजड़े हुए चमन में अब क्या बहार आए
क्या शान है शमा की परवानों को जलाना
है दो घड़ी की रौनक़ एक रात का फ़साना
परवानों को जलाकर शमा भी जलती जाए।" [1]

इस गीत को मैं लता मंगेशकर के सर्वोत्कृष्ट 20-25 गीतों में आसानी से समाविष्ट कर सकता हूँ। पंडित गोबिंदराम ने इस गीत में लता मंगेशकर के सुरों की विलक्षण रेंज जिस प्रकार श्रोताओं के समक्ष प्रस्तुत की, वह बेमिसाल है।

महान संगीतकार पंडित गोबिंदराम ने इस गीत की रचना में मुखड़े को प्रमुख रूप से मध्य और मंद्र, पहले अंतरे को तार और दूसरे को फिर मध्य और मंद्र सप्तकों में सँजोया है। लता के सुरों के साथ ऐसे खूबसूरत सांगीतिक प्रयोग चालीस और पचास के दशक के लगभग सभी महान संगीतकारों ने किए। इसी वजह से लता के ये गीत आज भी श्रोता को सर्वोत्कृष्ट संगीत की ताज़गी और आनंद का अहसास कराते हैं।

लता मुखड़े की दूसरी पंक्ति में लब पे पर एक लाजवाब हरकत लेकर इस बेहतरीन गीत के लिए समाँ बाँध देती हैं। लता ने अपनी गायकी में कण स्वरों का शानदार प्रयोग किया है। पहले शब्द लब में धैवत मुख्य स्वर के साथ पंचम और मध्यम हैं तो पे गाते हुए उन्होंने मुख्य स्वर मध्यम और उसके साथ कण स्वर पंचम लगाकर फिर मध्यम को आंदोलित किया है। प्रत्येक लफ़्ज़ की अदायगी से नायिका का ग़म छलकता है। 'आए' पर लता ने जो उतरती हुई तान ली है उसमें सम्मिलित प्रत्येक स्वर में दर्द लफ़्ज़ों की तीव्र भावनाप्रधान अदायगी लता की महारत का विशेष प्रान्त था।

चूँकि गीत में तड़प एवं विषाद दो प्रमुख भाव हैं, दोनों अंतरों को पंडित गोबिंदराम ने मुख्तलिफ़ अंदाज़ में स्वरबद्ध किया। पहले अंतरे में लता ने नायिका की तड़प ज़ाहिर की है तो दूसरे अंतरे में नायिका का विषाद प्रस्तुत किया है। लिहाज़ा, पहले अंतरे लता के सुर तार सप्तक में विचरण करते हैं और दूसरे अंतरे में मध्य एवं तार सप्तक दोनों में विचरण करते हुए भाव प्रस्तुत करते हैं इस गीत की बड़ी विशेषता है। राग काफी के सर यहाँ दिखाई देते हैं। इस तरह यहाँ लता मंगेशकर के सुरों की लाक्षणिकता दिखाई देती है।

" रसिया पवन झकोरे आए, हो रसिया पवन झकोरे आए
जल थल झूमे नाचे गाए, मन है ख़ुशी मनाए, रसिया
प्यार की रुत आई जीवन में, लहर ख़ुशी की दौड़े मन में
मस्त जवानी दिल को पकड़े, करती हाए हाए, रसिया
बुलबुल ने ये गीत सुनाया, फूल हँसे गुंचा मुस्काया
दो दिल बैठे आहें भरते, कौन किसे समझाए, रसिया। "[2]

इस गीत में बसी हुई बेइंतहा मिठास एवं खड़े / शुद्ध स्वरों के जादू के लिए इस लाजवाब गीत को चुनना ही पड़ा। हिंदी फ़िल्म संगीत में जब कभी मधुर गीतों की बात होगी तो लता का यह सुर किसे न याद आएगा! ईश्वर को किसने देखा है? ईश्वर की अनुभूति लता का स्वर अवश्य कराता है। शास्त्रीय संगीत की नज़र से इसे आँकते हैं तो भी इससे बेहतर कोई सुर न होगा और जहाँ भाव सौंदर्य की बात आए, तो भी क्या कोई तुलना हो सकेगी? इस गीत की प्यारी सुरावली एक अनोखी विशेषता है। काफी बड़े हिस्से में एक शब्द पर सिर्फ एक ही नोट रखा गया है, जिसे खड़े सुर भी कह सकते हैं। असर यह हुआ है कि प्रत्येक शब्द पर लता द्वारा दिया गया प्रतीत होता है।

प्रस्तुत गीत को पंडित गोबिंदराम ने लता के तरल सुरों को देखते हुए सफ़ेद 4 की ऊंची स्केल में रचा है। लता मुखड़े में बेमिसाल नज़ाकत के साथ आये, गाए शब्दों को उसी नोट पर रहते हुए गाती हैं। मुखड़े में रसिया पर एक शानदार मोड गाते हुए लता श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करती हैं। बिल्कुल वही नोट बरकरार रखते हुए धीरे-धीरे उन्होंने अपना स्वर धीमा किया है। एक हल्का 'पाँ' यहाँ उन्होंने लिया है। 'मनाए' शब्द पर लता ने एक आलाप लेते हुए एक शानदार गमक लिया है जो इस गीत के सौंदर्य को और बढ़ाता है। इसी हरकत के साथ वे मुखड़े के पहले स्वर ऋषभ पर लौटकर आ जाती हैं। अनेक गीतों में लता को ऐसी जगहों पर मॉड लेकर मुखड़े के पहले सुर पर आते हुए देखा जाता है मगर पंडित गोबिंदराम ने विविधता प्रस्तुत करते हुए, यहाँ

मांड की जगह गमक को पिरोया हुआ है। संगीतकारों की ऐसी गहरी सोच और लता के सुरों के बेजोड़ साथ ने ही इन गीतों को यादगार बनाया है।।

दोनों अंतरे थोड़े भिन्न हैं परन्तु बड़ी ही योग्यता से बाँधे गए हैं। पंडित गोबिंदराम ने लता के सुरों की तरलता एवं परिधियों को मुखरता से दर्शाया है। पहले अंतरे की शुरुआत, प्यार की रुत आई जीवन में, पंडित गोबिंदराम ने तबले की सम छोड़कर शुरू की है जिससे गीत में अनोखा सौंदर्यस्थल उत्पन्न हुआ है। दूसरे अंतरे की शुरुआत सम से हुई है। इन छोटी-छोटी लेकिन खूबसूरत सांगीतिक बारीकियों से पुराने दौर के अनेक गीत सुंदर बन पड़ते थे। लता इन खूबसूरतियों को बेहतरीन अंदाज में प्रस्तुत करती थीं। पहले अंतरे की दूसरी पंक्ति में भी सम छोड़ी हुई दिखाई देती है। पहला अंतरा पूर्ण रूप से मध्य सप्तक में रखा हुआ है लेकिन मस्त जवानी दिल को पकड़े खंड पर तो वह तार सप्तक के षढज को छू जाती हैं। सफ़ेद 4 की पट्टी का तार सप्तक को यूँ भावों को प्रकट करते हुए, छू जाना लता के तरल सुरों के लिए बड़ी आसान सी बात थी। दौड़े मन में, करती हाब शब्दों में लता द्वारा ली हुई मींड चैन उड़ा देती है।

" आँखों से दूर-दूर हैं पर दिल के पास जो
कौन हैं मेरे वो, हो कौन हैं मेरे वो
कोई बता दो रे, मुझे कोई बता दो कौन हैं मेरे वो
गुपचुप मेरे मन में जो बसे कौन हैं वो मीत, मेरे कौन हैं वो मीत
क्या उनसे मेरी है कोई पूरब जनम की प्रीत, पूरब जनम की प्रीत
पहली ही मुलाक़ात में अपने से लगे जो, कौन हैं मेरे वो
एक मीठी सी उलझन में उलझा है मेरा जी, उलझा है मेरा जी
प्राणों का पपीहा भी पल-पल पुकारे पी, पल-पल पुकारे पी
मैं आज किन के नाम की माला रही पिरो, कौन हैं मेरे वो
दुनिया में सभी से है निराला मेरा अनुराग, निराला मेरा अनुराग
बाहर से कुछ ना देखूँ भीतर जले चिराग़, भीतर जले चिराग़
मैं उसको चाहती हैं जानें नहीं जिनको कौन हैं मेरे वो ।" [3]

गीत लता मंगेशकर के कोमल स्वरों की एक बेजोड़ मिसाल है। बॉम्बे टॉकीज़ द्वारा निर्मित फ़िल्म मशाल से संगीत म. डी. बर्मन और लता मंगेशकर का शानदार साथ कायम हुआ। इस गीत से जुड़ी सबसे महत्वपूर्ण बात है कि यह गीत अभिनेत्री रूमा देवी घोष जो किशोर कुमार की पहली पत्नी थीं, का लता श्रुति-संवाद में प्रतिनिधित्व करता है। मेरे अनुसार, लता मंगेशकर

का रूमा देवी घोष पर फ़िल्माया गया यह इकलौता गीत होगा। हालाँकि, फ़िल्म मशाल की प्रमुख नायिका सुमित्रा देवी लेकिन रूमा देवी की भी अहम भूमिका रही है।

कवि प्रदीप लिखित इस गीत के मूल भाव शृंगार के हैं। इसके माध्यम से अभिनेत्री अपने प्रेम का इज़हार करती है। चूँकि फ़िल्म में रूमा देवी की भूमिका एक नेत्रहीन लड़की की है, इस गीत के मुख्य भावों में नायक को देखने की उमंग और उत्कंठा के भाव भी पिरोए गए हैं। यहीं इस गीत की सबसे बड़ी विशेषता भी है। आँखों से दूर-दूर, ये शब्द नायिका की नेत्रहीनता को भी संगीत-विद्यार्थियों के लिए समझने की बात है कि किस खूबसूरती से लता ने लफ़्ज़-अदायगी करते हुए नायिका की उत्कंठा, शारीरिक अवस्था (नेत्रहीनता) को भी सुरों में प्रतिबिंबित किया है। बोल खूबसूरत है और इन भावों की उचित अभिव्यक्ति करना कोई आसान बात नहीं है और वह भी तब, जब लता मंगेशकर कुछ 20-21 वर्ष की ही थीं। इस लेख का गीत ही नेत्रहीन नायिका पर फिल्माया गया एक और बेहतरीन गीत है।

संगीतकार एस.डी. बर्मन ने प्रस्तुत गीत की बड़ी खूबसूरत स्वर-रचना की है। गीत में राग शिवरंजिनी की छाया दिखी है। कवि प्रदीप ने बोलों में, नायिका की नायक को देखने की उत्कंठा को, प्रश्नों द्वारा प्रस्तुत किया है, लिहाज़ा, उस खंड को लता ने तार सप्तक में अभिव्यक्त किया है और जहाँ नायिका अपनी खुशी का इंतजार करती है।

" जाते हो तो जाओ हम भी यहाँ वादों के सहारे जी लेंगे
खुद दे के किसी को दिल अपना
कुछ खेल नहीं जीना लेकिन घुट-घुट के सही मर-मर के सही
जैसे भी बनेगा जी लेंगे
रुसवा ना करेंगे हम तुमको, सीने से लगा लेंगे ग़म को
उमड़े जो कभी दिल से आँसू, हम दिल ही दिल में पी लेंगे
सीने से लगाकर यादों को ख़ामोश रहेंगे रातों को
शिकवे जो ज़बाँ पर आए कभी, होठों से ज़बाँ को सी लेंगे। "[4]

यह लाजवाब गीत लता के सुरों की बेजोड़ नक्काशी का पुस्तक में प्रतिनिधित्व करता है। रागों की मर्यादा में रहकर, सुरों में किस प्रकार उतार चढ़ाव लाए जा सकते हैं, यह सज्जाद हुसैन की मौसिकी सुनकर ही जाना जा सकता है। क्या कमाल की प्रतिभा रही होगी सज्जाद हुसैन, और उनकी कसौटी पर खरी उतरने वाली लता में सफ़ेद 3 में बने गीत को गाना काफी कठिन होता

है। उसे आधार बनाकर स्वर को तार सप्तक के मध्यम तक ले जाने की, सज्जाद हुसैन की चुनौती को लता ने बड़ी कुशलता से निभाया। इन बेजोड़ सांगीतिक प्रयोगों के बावजूद, धुन की अंतर्निहित मैलोडी के साथ कहीं कोई समझौता इस गीत में नज़र नहीं आता।

गीत के मुखड़े को सफ़ेद 3 के मध्य सप्तक के षढज से शुरू कर मंद्र सप्तक में एक विशिष्ट आकार देते हुए, तार सप्तक के ऋषभ तक ले जाया गया है। इस पूरे सफ़र में लता के सुर सुनने वालों को लाजवाब कर देते हैं। मुखड़े के प्रत्येक शब्द में लता की कहीं तान है, कहीं हरकत, कहीं मींड वादों में जो हरकत है वह सुनने वालों को लगभग झकझोरते हुए गीत का समाँ बाँधती है। 'लेंगे' शब्द में तो एक खूबसूरत मींड गाकर लता कहर बरपाना शुरू करती हैं। 'खेल' और 'जीना' इन अक्षरों पर हरकत लाजवाब है। संगीत की कलाकारी आख़िर इसी को तो कहते हैं! दोनों अंतरों की दूसरी पंक्तियों की स्वर-रचना सज्जाद ने एक समान ही की है लेकिन पहली पंक्तियों में भिन्नता है। जहाँ मुखड़ा मध्य सप्तक के षढज से शुरू हुआ था, वहीं दोनों अंतरों की शुरुआत तार सप्तक के षढज से हुई है। दोनों अंतरों के पूर्वार्ध में लता के सुरों को ताल नहीं दिया गया है, सारा खेल तर्ज़ और लता के सुरों का है। पहले अंतरे की पहली पंक्ति के रुसवा, ये तीनों अक्षर तार सप्तक के षढज में रचे हुए हैं। ना इस अक्षर को तार सप्तक के ऋषभ पर लाते हुए एक नज़ाकत लाई गई है। फिर करेंगे पर लता ने एक बेमिसाल मींड ली है। हम और तुम को इन अक्षरों पर लता ने उतार-चढ़ाव वाली एक जानलेवा तान ली है और इस मोड़ पर लता का सुर तार सप्तक के गंधार को छूता है।

दूसरे अंतरे की पहली पंक्ति में कर और यादों को, इन अक्षरों पर फिर एक बेमिसाल तान प्रस्तुत करते हुए लता का स्वर तार सप्तक के मध्यम को छू जाता है। लता ने रातों को पर पहले मींड गाई है फिर गाते हुए तार सप्तक के ऋषभ को छुआ है। फिर वहीं से दूसरी मींड लेते हुए आलाप लेते हुए मध्य सप्तक के मध्यम तक उनका सुर आया है। यह गायन सुनकर तो मानो ईश्वर प्राप्ति का अनुभव होता है ।

"आ गए दिल में तुम मेरी महफ़िल में तुम
बचके नज़रों से मेरी कहाँ जाओगे
हैं ये मिलने के दिन फूल खिलने के दिन
हम पुकारेंगे और तुम चले आओगे
तुम से मिलने यहाँ मुझ को आना पड़ा
गीत गाया हुआ फिर से गाना पड़ा

देख लो है मोहब्बत में कितना असर
मिल गई फिर हमारी तुम्हारी नज़र
ज़िंदगी है जवाँ अब जुदाई कहाँ
जिस जगह जाओगे तुम हमें पाओगे। "[5]

यह नज्म फ़िल्म संगीत में सुरों एवं भावों के अप्रतिम ठहराव की बेजोड़ मिसाल है। इसे मुझे लता श्रुति-संवाद में शामिल करना पड़ा, ताकि संगीत के विद्यार्थी इस गीत में लता द्वारा प्रदर्शित ठहराव की अद्भुत किमयागरी को आत्मसात कर सकें।

यह नज़्म पुस्तक में प्रसिद्ध संगीतकार गुलाम मोहम्मद की नुमाइंदगी करती है। गुलाम मोहम्मद और लता मंगेशकर की जोड़ी मेरी बड़ी पसंदीदा रही है। इनके कई गीतों का विश्लेषण मैं अनेक वर्षों से करता आ रहा हूँ। इस जोड़ी के कुल गीतों की संख्या लगभग 70-75 है। प्रत्येक गीत लाजवाब है और लता के सुरों की विस्तृत परिधियों को बड़े अचूक तरीके से प्रस्तुत करता है। लता श्रुति-संवाद में विशिष्ट योजना की अपनी विवशताएँ हैं इसलिए मैं गुलाम मोहम्मद का सिर्फ एक गीत शामिल कर पा रहा हूँ, इसका खेद है। 1965-83 के खंड में अवश्य पाक़ीज़ा के लाजवाब लता-गीतों को समाविष्ट किया जाएगा।

बीकानेर, राजस्थान में जन्मे गुलाम मोहम्मद तालों के उस्ताद थे। तबला, ढोलक और मटका वादक के रूप में उनकी विशेष पहचान रही। उम्र में वे काफ़ी वरिष्ठ थे और बीकानेर से मुंबई काफ़ी पहले आ बसे थे। नौशाद, अनिल बिस्वास जैसे अनेक आधारस्तंभ बना, जब लता ने उनसे 'हम कुछ कहते-कहते रह गए', यह लाजवाब ग़ज़ल गायी। अगले कुछ वर्षों में इस जोड़ी की प्रसिद्ध संगीतकारों के वे सहायक भी रहे थे। सन 1949 की फ़िल्म दिल की बस्ती से ही लता का सुर, उनकी मौसिकी की प्रमुख फिल्में आईं - तबीयत में काफ़ी उतार-चढ़ाव आने लगे, जिसका असर उनके काम पर भी पड़ा। कुंदन, सितारा एवं हुर-ए-अरब इनमें से कई फ़िल्मों में मधुबाला मुख्य नायिका की भूमिका में थीं। कहा जाता है कि सन 1953-54 के पश्चात् गुलाम मोहम्मद की 1955 में प्रदर्शित हुई कुछ फ़िल्में थीं जिनमें लता मंगेशकर के शानदार गीत रहे। ऐसा भी कहा जाता है कि फ़िल्म पाकीज़ा के गीतों की रिकॉर्डिंग सन 1955 से शुरू हुई थी किंतु कई वजहों से फ़िल्म की शूटिंग या निर्माण ही रुक गया, लिहाज़ा, सारे गीतों की रिकॉर्डिंग नहीं हो पाई।

" दुनिया बदल रही है आँसू बहाने वाले
तूफ़ान आँसुओं का पलकों में अब छुपा ले
दिल मेरा तुझ से बोले आँसू बना ले शोले
उम्मीद की किरण से ये दिल का दाग़ धो ले
इन ग़म की आँधियों में मन के दीए जला ले
अब दूर कर अँधेरा चमकेगा फिर सवेरा
तुझसे नज़र मिलाकर भर आया दिल भी मेरा
उजड़ी जवानियों से बिगड़ी को तू बना ले
तू भी तो अब बदल जा ये वक़्त है संभल जा
रोकेगा कौन तुझको एक तीर बनके चल जा
मैं दिल का साज़ छेड़, तू सुख के गीत गा ले।" [6]

सुखदायक, प्रेरक गीत जिससे लता मंगेशकर के मध्य और मंद्र सप्तकों के सुरों का सौंदर्य प्रदर्शित होता है। शंका का नाम लेते ही अक्सर उनकी ऊँची पट्टी के गीतों का स्मरण होता है लेकिन यह गीत भिन्न है। इसे वे सम्पूर्णतः मध्य सीफ़त हुए। कुछेक जगहों पर लता के सुर मंद्र सप्तक में भी ले गए हैं। इस पुस्तक में यह लता-गीत अभिनेत्री पूर्णिमा की नुमाइंदगी करता है।

सत्तर वर्ष हो रहे हैं इस गीत को लेकिन इसके असर में कोई कमी नज़र नहीं आई। असर, चाहे वो बोलों में हो या साहित लता के सुरों के असर में तो कोई कमी होना मुमकिन ही नहीं।
यह गीत कभी दिल को क़रार दे जाता है, तो, कई बार बेकरार भी कर जाता है। गीतकार हसरत जयपुरी के शानदार बोलों की यहाँ में पुरजोर सराहना करना चाहता हूँ, उन्होंने मानवीय जीवन के स्थायी पहलू संघर्ष पर आधारित रचना लिखी डट कर सामना करने की प्रेरणा दी। ऐसा कौन मनुष्य होगा जो संघर्ष से अछूता रहा हो ? लेकिन संघर्ष को मात देना ज़िंदादिली है। प्राचीन काल से हमारे मनीषी विभिन्न माध्यमों से मनुष्य को प्रेरित करते रहे हैं कि संघर्ष को हराना है, इससे हारना नहीं है। कलाओं ने भी इस दृष्टिकोण से अपनी-अपनी भूमिकाएँ निबाही हैं।

गुज़रे दौर के अनेक संगीतकारों ने प्रेरणादायी गीतों के लिए लता के सुरों को उपयुक्त समझा, लिहाज़ा, उनके अनेक गीत भारतीय संगीत की धरोहर हैं जिनसे मनुष्य को जीने के लिए हौसला मिलता है, आगे बढ़ने के लिए स्फूर्ति। लता के इस गीत को इसी शृंखला का गीत माना जा सकता है। इस शृंखला में उनके कई गीत हैं, किरदार जरूर बदले हैं ले करना चाहूँगा।

" गोरी-गोरी चाँदनी हो ~ और पूनम की रात रे
मीठी-मीठी, हो, साजना से होगी मन की बात रे
आज की है रात हो ~ पिया पास मेरे आएँगे
रूठूँगी मैं उनसे वो आ के मनाएँगे, ओ~
गाएँगे. ख़ुशी के गीत हिलमिल साथ रे
मीठी-मीठी, सजना से होगी मन की बात रे
ठंडी-ठंडी पवन सलोनी मन भाए रे
बिंदिया हमारी देखो गिर-गिर जाए रे, ओ
रिमझिम रिमझिम रिमझिम रिमझिम पड़े बरसात रे,
मीठी-मीठी, साजना से होगी मन की बात रे
कर के सिंगार हो, आज उनको रिझाऊँगी
ओढ़ के चुनरिया सजन घर जाऊँगी
मेहँदी से लाल-लाल होंगे मेरे हाथ रे,
मीठी-मीठी, साजना से होगी मन की बात रे ।" [7]

पूरी ईमानदारी के साथ मुझे यह कहना आवश्यक है कि इस गीत को मैंने इसकी अत्यधिक मिठास की वजह से सम्मिलित किया है। लता के सुरों को सुनकर यह कहना लाज़िमी होता है कि विरह, शृंगार जैसी ही मिठास यह भी एक भाव होता है। वैसे मंगेशकर की मिठास के भावों में भी अनेक वर्गीकरण होते हैं और उसमें गीतों के अनेक उदाहरण मिलते हैं लेकिन इस गीत की मिठास में जो अनूठी तीव्रता अनुभव की जाती है, वह मुख्य वजह बनी, इस गीत को लता श्रुति-संवाद में शामिल करने की। यह गौर पुस्तक में गुज़रे दौर की प्रसिद्ध अभिनेत्री सुमित्रा देवी की भी नुमाइंदगी करता है।

फ़िल्म राजा हरिश्चंद्र (1952) की नायिका थीं, सुमित्रा देवी। उस काल में उनके सौंदर्य का अपना रुतबा था। बंग हिन्दी सिनेमा को अनेक नायिकाएँ दीं। यह सिलसिला आज भी बदस्तूर जारी है। पहली पीढ़ी की अभिनेत्री थीं कानन बाला, सुमित देवी दूसरी पीढ़ी की और इनकी तीसरी पीढ़ी की हुई सुचित्रा सेन। फ़िल्मोद्योग में सुमित्रा देवी सौंदर्य के अलाबा जानी जाती थी, अपने आभिजात्य क़िस्म के उच्च एवं शालीन बर्ताव की वजह से। यह गुण लता मंगेशकर के भद्र व्यक्तित्व से मेल खाता था। यहीं केमिस्ट्री सुमित्रा देवी पर फिल्माए गए लता-गीतों से साबित हुई। सुमित्रा देवी की पहली हिंदी फ़िल्म, न्यू थियेटर्स की माय सिस्टर (1944) थी और उनके समक्ष थे, उस दौर के महानायक कुदनलाल सहगल । मशाल, दीवाना, घुंघरू, चोर बाज़ार,

मयूर पंख, जागते रहो जैसी अनेक हिंदी फ़िल्मों में भी सुमित्रा देवी को प्रमुख भूमिकाओं में देखा गया है। विशेष बात यह है कि इन फ़िल्मों में, सुमित्रा देवी पर फिल्माए गए सारे गीत लता मंगेशकर के ही गाए हुए गीत हैं।

इस तरह इन गीतों के माध्यम से मैंने लताजी के सुरों की लाक्षणिकताएँ निरूपित करने का प्रयास किया है।

संदर्भ-संकेत :-

1. लता-श्रुति संवाद .अजय देशपांडे .पृ.14
2.वही .पृ-37
3 .वही .पृ.40
4 .वही .पृ.43
5 .पृ.73
6 .वही .पृ-92
7 .वही .पृ. 122

- **बारा राजस्थान**

लता मंगेशकर के प्रेरक विचार :

1. *व्यक्ति जितना सच्चा होता है, उतना ही वह महान होता है।*
2. *व्यक्ति के भीतर की छुपी भावनाएँ उसके स्वर तंत्रीयों को प्रभावित करती हैं।*
3. *मैंने हमेशा जीवन से प्यार किया है, चाहे मेरी यात्रा कितनी भी उतार-चढ़ाव भरी क्यों न हो।*
4. *किसी के करियर के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध होना चाहिए। अन्यथा, कोई मतलब नहीं है।*
5. *मैं एक शक्ति में विश्वास करती हूँ, और वह है भगवान का हाथ। मैं सभी धर्मों का सम्मान करती हूँ।*
6. *एक गायक की भावनाएँ ही उसके संगीत का मूल आधार बनती हैं।*

देशभक्ति विषयक लता मंगेशकर के गीतों की विवेचना :-

- डॉ तलविंदर कौर

देशभक्ति ही एक मात्र ऐसी भक्ति है जिसकी भक्ति करने के लिए सारे देश की जनता आतुर रहती है। देशभक्ति में कोई जात धर्म या फिर कोई अलग रीति-रिवाज नहीं होते है ,कोई भी देश भक्त हो सकता है, बस दिल में प्रेम भावना होनी चाहिए। अपने देश से हर किसी को प्यार होता है। देश के प्रति सम्मान उसकी रक्षा की भावना हर किसी के मन में होती है। ऐसी भावनाओं को दिल में जगाने का काम कुछ हद तक भारत की आज़ादी के लिए शहीद हुए वीरों की कहानियाँ करती हैं, तो बाकी काम देशप्रेम से भरे गीत कर देते हैं। खासकर, बच्चों के बाल मन पर ये देश भक्ति गीत कुछ गहरी छाप छोड़ जाते हैं। यही कारण है कि हर भारतवासी बचपन से ही अपने देश से भावनात्मक रूप से जुड़ जाता है। इस आर्टिकल में कुछ ऐसे ही देशभक्ति गीत लेकर रखे गए हैं, जो बच्चों के दिलों में जोश भर दे और अपने देश के लिए कुछ करने का जज्बा पैदा करते हैं।

देशप्रेमी अपने देश से अत्यंत प्रेम करते है और अपने देश के प्रति जीने मरने से नहीं डरते। मैं हमेशा से सैनिकों की बहुत इज़्ज़त करता हूँ। आज हम जो अपने घरों में सुरक्षित है केवल अपने सैनिकों की वजह से ही है। आज वो न होते तो हमारी बहन बेटी और हम खुद सुरक्षित नहीं होते। धन्य है वो महान जिसने सैनिकों जैसे वीर जवानों को जन्म दिया है। खैर बात करे की देश भक्ति गीत की। सच में देश भक्ति गीत जो दिल को छु जाती है और आपको रुला भी देते है ऐसे कुछ नीचे लिखे हुए हैं उम्मीद करती हूँ कि आपको ये सभी गीत अच्छे लगेंगे।

आज़ादी के महज 15 सालों के बाद ही भारत के पड़ोसी देश चीन ने 20 अक्टूबर 1962 को भारत पर हमला कर दिया। भारत इस हमले के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं था। भारतीय सेना को चीन के सामने बुरी हार का सामना करना पड़ा। 21 नवंबर 1962 को चीन ने खुद युद्ध की समाप्ति की घोषणा तो कर दी लेकिन भारत इस हार से उबर नहीं पा रहा था। जिसके बाद देश के प्रमुख नेताओं ने देश के टूटे हुए मनोबल को दूर करने के लिए फिल्मी दुनिया के लोगों को इसका उपाय करने को कहा।

जिसके पश्चात कवि प्रदीप ने गीत 'ए मेरे वतन के लोगों ' को लिखा और लता मंगेशकर की मधुर मीठी आवाज़ में इसे कंपोज करवाया। बीते 27 जनवरी को इस गीत ने भारत के इतिहास में अपने 60 साल पूरे किए हैं। रामचंद्र के संगीत निर्देशन व कवि प्रदीप के लिखे इस गाने सबसे पहले लता मंगेशकर ने 27 जनवरी 1963 में गाया था। गाने की प्रस्तुती लता ने दिल्ली

के नेशनल स्टेडियम में भारत के पहले प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के सामने दिया था। गाने को सुन प्रधानमंत्री इतने प्रभावित हुए कि उनकी आंखों में आँसू आ गए।

"ए मेरे वतन के लोगों
तुम ख़ूब लगा लो नारा
ये शुभ दिन है हम सब का
लहरा लो तिरंगा प्यारा
पर मत भूलो सीमा पर
वीरों ने है प्राण गंवाए
कुछ याद उन्हें भी कर लो
जो लौट के घर न आये
ऐ मेरे वतन के लोगों
ज़रा आंख में भर लो पानी
जो शहीद हुए हैं उनकी
ज़रा याद करो क़ुर्बानी
जब घायल हुआ हिमालय
ख़तरे में पड़ी आज़ादी
जब तक थी सांस लड़े वो
फिर अपनी लाश बिछा दी
संगीन पे धर कर माथा
सो गये अमर बलिदानी
जो शहीद हुए हैं उनकी
ज़रा याद करो क़ुर्बानी
जब देश में थी दीवाली
वो खेल रहे थे होली
जब हम बैठे थे घरों में
वो झेल रहे थे गोली
थे धन्य जवान वो आपने
थी धन्य वो उनकी जवानी
जो शहीद हुए हैं उनकी
ज़रा याद करो क़ुर्बानी

कोई सिख कोई जाट मराठा
कोई गुरखा कोई मदरासी
सरहद पर मरनेवाला
हर वीर था भारतवासी
जो खून गिरा पर्वत पर
वो खून था हिंदुस्तानी
जो शहीद हुए हैं उनकी
ज़रा याद करो क़ुर्बानी

थी खून से लथ पथ काया
फिर बंदूक उठाके
दस दस को एक ने मारा
फिर गिर गये होश गंवा के
जब अन्त -समय आया तो
कह गये के अब मरते हैं
खुश रहना देश के प्यारों
अब हम तो सफ़र करते हैं
क्या लोग थे वो दीवाने
क्या लोग थे वो अभिमानी
जो शहीद हुए हैं उनकी
ज़रा याद करो क़ुर्बानी
तुम भूल न जाओ उनको
इस लिए कही ये कहानी
जो शहीद हुए हैं उनकी
ज़रा याद करो क़ुर्बानी। "[1]

यह हिन्दी देश भक्ति गीत है , जो 1962.ई के चीनी आक्रमण के शहीद हुए भारतीय सैनिकों को समर्पित था। यह गीत तब प्रसिद्ध हुआ जब लता मंगेशकर ने इसे नई दिल्ली में गणतंत्र दिवस के अवसर पर रामलीला मैदान में तत्कालीन प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू की उपस्थिति में गाया गया था। " चीन से हुए युद्ध के बाद 27 जनवरी ई.1963 में डेल्ही नेशनल

स्टेडियम में स्वर कोकिला लता मंगेशकर ने दिया था। ऐसा कहा जाता है कि इस गाने को सुनने के बाद नेहरूजी की आँखें भर आई थीं। " [2]

'आनंद मठ' फ़िल्म का 1952 में लता मंगेशकर द्वारा 'वंदे मातरम ' गीत गाया गया था।

"वन्दे ... मातरम्
वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्,
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम् वन्दे मातरम्,
वन्दे मातरम्, वन्दे मातरम्
वन्दे मातरम्
सुजलां सुफलाम् मलयजशीतलाम् शस्यश्यामलाम्
मातरम्... वन्दे
सुजलां सुफलाम् मलयजशीतलाम् शस्यश्यामलाम् । " [3]

" बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय द्वारा संस्कृत बाँग्ला मिश्रित भाषा में रचित इस गीत का प्रकाशन सन् १८८२ में उनके उपन्यास 'आनन्द मठ' में अन्तर्निहित गीत के रूप में हुआ था।"[4] इस उपन्यास में यह गीत भवानन्द नाम के संन्यासी द्वारा गाया गया है। इसकी धुन यदुनाथ भट्टाचार्य ने बनायी थी। "इस गीत को गाने में ६५ सेकेंड (१ मिनट और ५ सेकेंड) का समय लगता है। सन् २००३ में, बीबीसी वर्ल्ड सर्विस द्वारा आयोजित एक अन्तरराष्ट्रीय सर्वेक्षण में, जिसमें उस समय तक के सबसे मशहूर दस गीतों का चयन करने के लिए दुनिया भर से लगभग ७,००० गीतों को चुना गया था और बी०बी०सी० के अनुसार १५५ देशों / द्वीप के लोगों ने इसमें मतदान किया था उसमें वन्दे मातरम् शीर्ष के १० गीतों में दूसरे स्थान पर था। " [5]

बंगाल में चले स्वाधीनता आन्दोलन के दौरान विभिन्न रैलियों में जोश भरने के लिए यह गीत गाया जाने लगा। धीरे-धीरे यह गीत लोगों में अत्यधिक लोकप्रिय हो गया। ब्रिटिश सरकार इसकी लोकप्रियता से भयाक्रान्त हो उठी और उसने इस पर प्रतिबन्ध लगाने पर विचार करना

शुरू कर दिया। सन् १८९६ में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने यह गीत गाया। पाँच साल बाद यानी सन् १९०१ में कलकत्ता में हुए एक अन्य अधिवेशन में श्री चरणदास ने यह गीत पुनः गाया। सन् १९०५ के बनारस अधिवेशन में इस गीत को सरलादेवी चौधरानी ने स्वर दिया।

कांग्रेस अधिवेशनों के अलावा आज़ादी के आन्दोलन के दौरान इस गीत के प्रयोग के काफी उदाहरण मौजूद हैं। लाला लाजपत राय ने लाहौर से जिस जर्नल का प्रकाशन शुरू किया था उसका नाम वन्दे मातरम् रखा। अंग्रेज़ों की गोली का शिकार बनकर दम तोड़नेवाली आज़ादी की दीवानी मातंगिनी हाजरा की ज़ुबान पर आखिरी शब्द "वन्दे मातरम्" ही थे। सन् १९०७ में मैडम भीखाजी कामा ने जब जर्मनी के स्टुटगार्ट में तिरंगा फहराया तो उसके मध्य में "वन्दे मातरम्" ही लिखा हुआ था। आर्य प्रिन्टिंग प्रेस, लाहौर तथा भारतीय प्रेस, देहरादून से सन् १९२९ में प्रकाशित काकोरी के शहीद पं० राम प्रसाद 'बिस्मिल' की प्रतिबन्धित पुस्तक "क्रान्ति गीतांजलि" में पहला गीत "मातृ-वन्दना" वन्दे मातरम् ही था जिसमें उन्होंने केवल इस गीत के दो ही पद दिए थे और उसके बाद इस गीत की प्रशस्ति में वन्दे मातरम् शीर्षक से एक स्वरचित उर्दू गज़ल दी थी जो उस कालखण्ड के असंख्य अनाम हुतात्माओं की आवाज़ को अभिव्यक्ति देती है। ब्रिटिश काल में प्रतिबंधित यह पुस्तक अब सुसम्पादित होकर कई पुस्तकालयों में उपलब्ध है।

लता मंगेशकर ने भारत की नारियों की शौर्यता का भी निम्नलिखित गीत में चित्रण किया है -

" मैं हूँ भारत की नारी, लड़ने मरने को तैयार, मुझे समझो ना कमज़ोर लोगों

उस देश की हूँ संतान, के जिसका नाम है हिंदुस्तान, शहज़ोर बड़ी शहज़ोर
मैं बिजली बनकर दमकूँ, मैं भाला बनकर चमकूँ
कोई है जो हरे मेरा चीर मारूँ खींच के ऐसा तीर
जो लगे कलेजवा पार, लड़ने मरने को तैयार
मैं हूँ झाँसी की शमशीर, मैं हूँ अर्जुन का तीर
मैं सीता का वरदान, दे सकती हूँ बलिदान
मैं भीम की हूँ झंकार, लड़ने मरने को तैयार। "[6]

प्रत्येक अक्षर से शौर्य के भाव अभिव्यक्त करते हुए लता मंगेशकर के स्वर ! पर्दे पर फ़िल्म शुरू होते ही पार्श्व में इस शानदार गीत की धुन बजती है और घुड़सवारी करती हुई आत्मविश्वासी और सुंदर वैजयंतीमाला गीत गाती दिखाई देती है। वैसे तो घोड़ों की टापों को ठेका बनाकर कई गीत बने हैं लेकिन फ़िल्म 'लड़की' के इस गीत की शान ही निराली है।

यहाँ उनका सुर तार सप्तक के षढज पर ही टिका हुआ रहता है जिससे अद्वितीय ठहराव उत्पन्न हुआ है। लता के अव्वल दर्ज़े के इस गीत को लता मंगेशकर के 10-12 सेकेण्ड्स के लाजवाब आलाप की वजह से हमेशा जाना जाता रहा है। संगीतकार सुदर्शनम और धनी राम की जोड़ी ने इंटरल्यूइस में पिरोया है। इसी आलाप को थोड़ा भिन्न स्वरूप देते हुए लता ने इस गीत का अंत भी के साथ इनमें उमंग के भाव लता ने प्रदर्शित किए हैं। यकीन मानिए, लता के सिर्फ आलाप या तानों से भी हम ये आसानी से जान सकते हैं कि गीत के भाव क्या हैं। इस गीत को संगीतकार द्वय ने काली 3 की ऊँची स्केल में रचा है और लता के सुर ज़्यादातर मध्य सप्तक में ही कायन क्षमता को सिर्फ चुनौतियों का इंतज़ार होता रहा है। लता ने इन आलापों द्वारा उनकी श्रेष्ठ गायन क्षमता की गवाही दी है, स्वर सौंदर्य सीमित किए हुए हैं। नारी की शूरवीरता के वर्णन से परिपूर्ण इस गीत की संपूर्ण सुरावली एवं लय लाजवाब है। अभिनेत्री वैजयंतीमाला के जानदार अभिनय ने इसका प्रभाव द्विगुणित कर दिया है। देशभक्ति को जगाने में कई स्त्रियों ने भी अपना योगदान दिया है उनका चित्रण भी लता मंगेशकर ने इस प्रकार के गीतों के माध्यम से किया है।

इस प्रकार इस आलेख में लता मंगेशकर के विभिन्न प्रकार के गीतों के माध्यम से देशभक्ति की भावना को प्रस्तुत किया गया है।

- सहायक आचार्य

समाजशास्त्र विभाग

राजकीय कला स्नातकोत्तर महाविद्यालय कोटा, राजस्थान

संदर्भ-सूची :-

1 .Amar उजाला Ltd. 2017

2 .आज़ादी के मशहूर तराने .पवन झा .बीबीसी .हिन्दी 15 अगस्त 2013

3 .वन्दे मातरम -सुजलाम -सुफलाम .लता मंगेशकर -1952

4 .Vande matram - मूल से 29 अगस्त 2006 को पुरोलिखित -अभिगमन तिथि -29 अप्रैल 2008

5 .The Words Top Ten ' Archlved ' 2006-2008

6 .लता-श्रुति संवाद .अजय देशपांडे . पृ.167

संगीत के क्षेत्र में लता मंगेशकर का योगदान :-

- डॉ मोनिका गर्ग

"लता मंगेशकर (28 सितंबर 1929 - 6 फ़रवरी 2022) इन्दौर रियासत ,सेंट्रल इंडिया एजेन्सी ,बितानी भारत (वर्तमान मध्यप्रदेश ,भारत) "[1] की सबसे लोकप्रिय और आदरणीय गायिका थीं, जिनका छः दशकों का कार्यकाल उपलब्धियों से भरा पड़ा है। हालाँकि लता जी ने लगभग तीस से ज़्यादा भाषाओं में फ़िल्मी और गैर-फ़िल्मी गाने गाए हैं लेकिन उनकी पहचान भारतीय सिनेमा में एक पार्श्वगायिका के रूप में रही है। अपनी बहन आशा भोंसले के साथ लता जी का फ़िल्मी गायन में सबसे बड़ा योगदान रहा है। बचपन में उनका नाम हेमा मंगेशकर थी। वह संगीत निदेशक, निर्माता रही है ,उनका कार्यकाल 1942 से 2022 ई.तक रहा है । उनके पिता का नाम दीनानाथ मंगेशकर तथा माता का नाम शेवन्ती मंगेशकर था । उनकी बहनों के नाम मीना खाड़ीकर, आशा भोंसले, उषा मंगेशकर थे तथा भाई का नाम हृदय नाथ मंगेशकर था । उन्हें राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार, बंगाल फ़िल्म पत्रकार संगठन पुरस्कार, फ़िल्मफ़ेयर सर्वश्रेष्ठ पार्श्व गायिका पुरस्कार, फ़िल्मफ़ेयर विशेष पुरस्कार, फ़िल्मफ़ेयर आजीवन उपलब्धि पुरस्कार प्राप्त हुए थे ।

लता की जादुई आवाज़ के भारतीय उपमहाद्वीप के साथ-साथ पूरी दुनिया में उनके दीवाने हैं। टाइम्स पत्रिका ने उन्हें भारतीय पार्श्वगायन की अपरिहार्य और एकछत्र साम्राज्ञी स्वीकार किया है। भारत सरकार ने उन्हें 'भारतरत्न' से सम्मानित किया था।

"इनकी मृत्यु कोविड से जुड़ी जटिलताओं से 6 फरवरी 2022 रविवार माघ शुक्ल पक्ष पंचमी तिथि वि.स. 2078 (पंचक) को मुम्बई के ब्रीच कैंडी हॉस्पिटल में हुई। वे कुछ समय से बीमार थीं। उनकी महान गायकी और सुरमय आवाज़ के दीवाने पूरी दुनिया में हैं।"[2] प्यार से सब उन्हें 'लता दीदी' कहकर पुकारते हैं। वर्ष 2001 में इन्हें भारत के सर्वोच्च सम्मान 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया ।

संगीत में योगदान -

लता मंगेशकर भारत की सबसे लोकप्रिय और आदरणीय गायिका है, जिनका छः दशकों का कार्यकाल उपलब्धियों से भरा पड़ा है । हालांकि लता जी ने लगभग तीस से अधिक भाषाओं में फिल्मी और गैर – फिल्मी गाने गाए हैं , लेकिन उनकी पहचान भारतीय सिनेमा में एक पार्श्वगायिका के रूप में रही है ।

13 वर्ष की आयु में लताजी ने एक मराठी फ़िल्म के लिए गाना रिकॉर्ड गया। इसी वर्ष इनके पिताजी को दिल का दौरा पड़ने से निधन हो गया। लता जी अपने घर में बड़ी थी तो सारी ज़िम्मेदारी उनके कन्धों पर आ गई।

वर्ष 1945 में लता जी मुम्बई आ गई तथा फिल्मों में गाना गाने लगी। वर्ष 1947 में हिन्दी फ़िल्म 'आप की सेवा में' के लिए भी एक गाना गाया। उस समय फिल्मों में गायिका नूरजहा, शमशाद बेगम, बेगम अख्तर, जोहराबाई आदि का प्रभाव था।

वर्ष 1949 में लता जी ने लगातार 4 हिट फिल्मों में गाने गाए। फ़िल्म बरसात , दुलारी, अन्दाज व महल फिल्में हिट थीं, इसमें से 'महल' फ़िल्म का गाना 'आएगा आने वाला' सुपर हिट हुआ और लता जी ने अपने पैर फ़िल्म इण्डस्ट्री में जमा लिए।

लता जी को सर्वाधिक गीत रिकॉर्ड करने का भी गौरव प्राप्त है। इन्होंने फिल्मी गीतों के अतिरिक्त गैर – फिल्मी गीत भी बहुत ही खूबी के साथ गाया है। इन्होंने गीत, गज़ल, भजन तथा संगीत के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी कला बिखेरी है। गीत चाहे शास्त्रीय संगीत पर आधारित हो या पाश्चात्य धुन पर आधारित हो या फिर लोक धुन पर, सभी में समान रूप से योगदान किया है।

इन्होंने उस समय के सभी प्रसिद्ध संगीतकारों के साथ काम किया है , जिनमें अनिल बिस्वास, सलिल चौधरी, जयकिशन, एस. डी. बर्मन, आर . डी. बर्मन, नौशाद, मदनमोहन, सी रामचन्द्र इत्यादि सभी संगीतकारों ने उनकी गायिकी का लोहा माना।

लता जी ने विभिन्न फिल्मों में भी अपनी गायिकी से चार चाँद लगाए हैं , जिनमें दो आँखें बारह हाथ, दो बीघा जमीन, मदर इण्डिया , मुगल – ए – आजम, महल, बरसात, एक थी लड़की, बड़ी बहन, परख, मधुमती, छाया, हम दोनों, जंगली, जब – जब फूल खिले, अनारकली, अमर प्रेम, गाइड, प्रेमरोग, सत्यम् शिवम् सुन्दरम् आदि हैं।

लता जी ने पुरानी फिल्मों के साथ – साथ नई फिल्मों में भी गाने गाए हैं, जिनमें हिना, रामलखन, देवदास, अमरगीत, राब्ता आदि हैं। लता जी ने युगल गीत भी बहुत खूबी के साथ गाए हैं। इन्होंने मन्ना डे, मुहम्मद रफी, किशोर कुमार, महेन्द्र कपूर आदि गायकों के साथ – साथ दिग्गज शास्त्रीय गायकों में पण्डित भीमसेन जोशी, पण्डित जसराज इत्यादि के साथ भी मनोहारी युगल गीत गाए हैं। गज़ल के बादशाह जगजीत सिंह के साथ इनकी एलबम 'सजदा' ने लोकप्रियता की बुलन्दियों को छुआ।

वर्ष 1962 के भारत – चीन युद्ध के बाद शहीदों को श्रद्धांजलि देने के लिए। एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया था, जिसमें तत्कालीन प्रधानमन्त्री पण्डित जवाहरलाल नेहरू भी उपस्थित

थे। इसमें लता जी द्वारा गाए गए गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगों को सुन कर सब लोग भाव – विभोर हो गए थे। पण्डित नेहरू की भी आँखें भर आई थीं।

लता जी गुलाम हैदर साहब को अपना 'गॉडफादर' मानती हैं। लता जी ने गायन के अतिरिक्त फ़िल्म निर्माता के रूप में विविध अवसरों पर चार फिल्मों का भी निर्माण किया था। सबसे पहले वर्ष 1953 में मराठी फ़िल्म 'वाडई' बनाई थी। इसी वर्ष इन्होंने संगीतकार सी. रामचन्द्र के साथ मिलकर हिन्दी फ़िल्म 'झंझार' का निर्माण किया था। तत्पश्चात् वर्ष 1955 में हिन्दी फ़िल्म 'कंचन' का निर्माण किया। वर्ष 1990 में इनकी निर्मित फ़िल्म 'लेकिन' हिट हुई थी।

लता जी ने पाँच फिल्मों का संगीत निर्देशन किया था। सभी मराठी फिल्में थीं। इनकी बतौर संगीत निर्देशक पहली फ़िल्म ' राम और -पाव्हना' (1960) थी। अन्य मराठी फिल्मों में टिटुका मेलेवा (1962), साहित्यांजी मंजुला (1963), साधु मानसे (1965) व तबाड़ी मार्ग (1969) थीं।

सम्मान / पुरस्कार – लता मंगेशकर

लता जी को फिल्मों में योगदान के लिए विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें से कुछ प्रमुख पुरस्कार निम्नलिखित हैं –

फ़िल्म फेयर पुरस्कार (1958, 1962, 1965, 1969, 1993 और 1994)

राष्ट्रीय पुरस्कार (1972, 1975 और 1990)

महाराष्ट्र सरकार पुरस्कार (1966 और 1967)

– वर्ष 1969 में पद्म भूषण

– वर्ष 1974 में दुनिया में सबसे अधिक गीत गाने का गिनीज बुक रिकॉर्ड

– वर्ष 1989 में दादा साहब फाल्के पुरस्कार

– वर्ष 1993 में फ़िल्म फेयर का लाइफटाइम अचीवमेण्ट पुरस्कार

– वर्ष 1996 में स्क्रीन का लाइफटाइम अचीवमेण्ट पुरस्कार

– वर्ष 1997 में राजीव गांधी पुरस्कार

– वर्ष 1999 में एन. टी. आर. पुरस्कार

– वर्ष 1999 में पद्म विभूषण

- वर्ष 1999 में जी सिनेमा का लाइफटाइम अचीवमेण्ट पुरस्कार

- वर्ष 2000 में आई . आई . ए . एफ . का लाइफटाइम अचीवमेण्ट पुरस्कार

- वर्ष 2001 में स्टारडस्ट का लाइफटाइम अचीवमेण्ट पुरस्कार

- वर्ष 2001 में भारत का सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारतरत्न'

- वर्ष 2001 में नूरजहाँ पुरस्कार

इस प्रकार उन्हें कई पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

प्रत्येक व्यक्ति के आवाज़ की प्रकृति (टिंबर) भिन्न होती है, अतएव, लता जी अपनी आवाज़ को, अभिनेत्री की आवाज़ के अनुसार मॉड्यूलेट करके ही गीत गाती रही हैं। अनेक गीतों में उन्होंने दो अभिनेत्रियों को एक ही गीत में अपना सुर दिया है। उन गीतों को लता जी ने अपने गायन में दो मुख्तलिफ अंदाज़ या एप्रोच से गाया है। इस लेख में ऐसे गीतों का भी विश्लेषण किया गया है। बहुत से पुराने लता-गीतों के वीडियो उपलब्ध नहीं हैं, मजबूरी में उनके बारे में हमें सिर्फ कयास लगाना पड़ा है। यह तथ्य उजागर करना अति आवश्यक है कि लेख में सम्मिलित दौर की कई फ़िल्मों के वीडियोज़ हमने हमेशा के लिए गवाँ दिए हैं।

एक शीर्ष गायिका जो एक समय मधुबाला, नरगिस और नूतन जैसी अव्वल दर्ज़े की अभिनेत्रियों को अपना सुर देती थी, वह चाँद उस्मानी, कामिनी कदम और रूपमाला जैसी कम प्रसिद्ध या अनजान अभिनेत्रियों को भी लगातार अपना सुर देती रही। लता मंगेशकर ने सर्वोत्कृष्ट गायिका की प्रतिष्ठा ई.1949 में ही पा ली थी और वे चाहती तो, इन अभिनेत्रियों के लिए गाने मना भी कर सकतीं लेकिन उन्होंने वजह कभी भी किसी गीत गाने से मना किया हो, ऐसा मुझे ज्ञात नहीं है। सीमित पहचान रखने वाली अभिनेत्रियों का मनोबल, लता मंगेशकर द्वारा उन पर फ़िल्माए हुए गीत गाने से कितना बढ़ा होगा ? क्या इस बढ़े हुए मनोबल की वजह से इन अभिनेत्रियों के अभिनय का स्तर भी नहीं बढ़ा होगा? क्या भारतीय कला का कुल स्तर ही लता मंगेशकर की इस पहल से बढ़ा नहीं होगा? यही सारे बिंदु उन कम प्रसिद्ध संगीतकारों पर भी हू-ब-हू लागू होते हैं, जिनके लिए लता जी ने हजारों गीत गाए हैं।

लता जी के हॉर्मोनिक्स में सम्मिलित होने वाले महत्वपूर्ण आयाम है, खटके या कण स्वर, गमक, मींड, हरकत या मुकरियाँ। लता जी के आलाप या तानों की क्या बात करें! क्या यूँ ही उस्ताद बड़े गुलाम अली खान कह गए थे कि लता कभी बेसुरी होती ही नहीं !

इसीलिए जब कोई कहता है कि लता जी की आवाज़ बड़ी सुरीली है तो उसका तात्पर्य होता है कि लता जी के सुरों में बसने वाली श्रुतियाँ सुरीली हैं। हॉर्मोनिक्स से जुड़े हुए इन सारे पहलुओं को व्यवस्थित तरीके से प्रस्तुत करने हेतु, लेख में चयनित गीतों के नोटेशन्स या स्वर-लेखन भी दिए गए हैं ताकि संगीत के विद्यार्थी और संगीत प्रेमी, पुस्तक के प्रामाणिक प्रयास का यथोचित लाभ हो सके। सुरों के प्रति सत्य-निष्ठा, बुद्धिमत्ता और लगन लता जी की आवाज़ के प्रमुख तत्व रहे हैं। क्या यह भी एक तथ्य नहीं है कि पिछले 75 सालों से उभरती हुई कोई भी गायिका लता मंगेशकर बनने की ही चाह पाले हुए हैं। लिहाज़ा, लता मंगेशकर एक विशेषण भी है और संज्ञा विशेष भी है। यह मुक़ाम किसी को यूँ ही नहीं मिलता ! अक्सर सामान्य श्रोता यह कहता हुआ नज़र आता है कि उसे लता मंगेशकर के गीत बड़े पसंद आते हैं लेकिन वह यह नहीं बता पाता है कि उसे लता जी की गायकी के कौन से पहलू पसंद हैं। उससे यह अपेक्षा करना भी ग़लत है। वह सिर्फ़, लता जी के सुरों से उत्पन्न निर्मल या ईश्वरीय आनंद अर्जित करने के लिए उन्हें सुनता है और उनके गाए हुए प्रत्येक शब्द, बल्कि अक्षर से उसे उच्च कोटि का आनंद मिल जाता है। इस पुस्तक को लिखने की एक वजह यह भी है कि अगर उन श्रोताओं को सरल भाषा में लता जी की गायकी के सौंदर्य स्थलों से भी परिचित करवाया जाए तो उच्चकोटि के आनंद को परमानंद में रूपांतरित किया जा सकता है।

फ़िल्म संगीत की गायिका होने के नाते लता जी गज़ब व्यावसायिक नैतिकता का पालन करती रही हैं। किसी संगीतकार को रिकॉर्डिंग के लिए समय दे दिया तो उसका पालन वे हर हालत में करती रहीं। संगीतकार द्वारा रिकॉडिंग स्टूडियो बुक करने और साज़िन्दों आदि की टीमों का प्रबंध करने के बाद लता जी द्वारा कभी भी न तो रिकॉर्डिंग मुल्तवी की गई और न ही कैंसिल। उन्हें संगीतकारों को होने वाले आर्थिक नुकसान का भरपूर आभास रहा करता था।

मैं समझती हूँ कि लता जी ने अपने गायन से संगीतकार, गीतकार, अभिनेत्री, निर्माता, निर्देशक और थियेटर्स के लेकर कबाड़ी, आम दर्शक एवं श्रोता के साथ भी भरपूर न्याय किया है। गायन में लता जी, जैसे-जैसे ऊँचे मानक स्थापित करती गई, वैसे-वैसे श्रोताओं की अपेक्षाओं के भी मानक ऊँचे होते गए। लता मंगेशकर ने कुल मिलाकर भारतीय कला का स्तर बढ़ाया है। संदर्भ और परिप्रेक्ष्य में उनके गायन के सभी पहलुओं को समीक्षा और टिप्पणी के माध्यम से सहेजने का प्रयास इस लेख में किया गया है।

जैसे विभिन्न संगीतकारों के संग लता मंगेशकर के गायन का साथ प्रसिद्ध रहा है, वैसे ही गीतकारों के साथ उनके विश्लेषण को भी ध्यानाकर्षण की ज़रूरत है। लता जी के लिए स्वर -पक्ष एवं भाव-पक्ष दो संतानों की भाँति रही हैं। लता जी ने अपने गायन में जितनी मज़बूती से

संगीत-पक्ष रखा है ,उसी मज़बूती से प्रत्येक गीत में बोलों एवं भावों का भी पक्ष रखा है। इस लेख के माध्यम से उन महान गीतकारों एवं उनकी अमर रचनाओं को याद करने का विनम्र प्रयत्न किया गया है जो अपनी थाती अगली पीढ़ियों के हवाले कर, अतीत की गहराइयों में कहीं विश्राम कर रहे हैं।

जब गीतकारों को यह पता चलता था कि उनके लिखे हुए बोलों को लता मंगेशकर गाने वाली हैं, तब वे शब्द या अक्षर पर अपना पूरा ध्यान केंद्रित कर दिया करते थे। यह एक बड़ी वजह है कि लता जी के गीतों के बोल भी बड़े उत्तम हैं। जिन गीतों में बोलों का स्तर और ऊँचा मिला, वहाँ लता जी के सुरों ने कमाल के भाव प्रस्तुत किए हैं। भावों की लाजवाब अभिव्यक्ति करते हुए क्या वे कोई सांगीतिक योजना अमल में लाती थीं? जैसे शास्त्रीय संगीत में रियाज़ का महत्व होता है और गायक वह सुर अपने गले में उतारता है, उसी तरह सुगम संगीत में, लफ़्ज़ों की अदायगी की भी बड़ी अहमियत होती है ताकि भावों की अपेक्षित अभिव्यक्ति हो सके।

लताजी का यह सिलसिला पिछले 75 साल निरंतर जारी है। इस बात में कोई शक नहीं किसी भी गीत में अन्तर्निहित प्रत्येक पक्ष को लता जी अपने सुरों से अप्रतिम रूप में कैसे पेश किया करती रही है? ये गीत की परिस्थितियों से, स्वयं को समर्पण के साथ जोड़ लिया करती हैं, अतएव, उनकी गायकी से उत्पन्न होनेवाले भावा- प्रभावों में कभी भी कृत्रिमता नज़र नहीं आई है। हालांकि, कभी-कभी यूँ देखा गया है कि उनके गाए गीत को पर्दे पर प्रस्तुत करने वाली अभिनेत्रियों के अभिनय में ज़्यादा कृत्रिमता या ओवर एक्टिंग नज़र आई है। लता जी एक दिन में 3-4 गीत रिकॉर्ड किया करती रही है, तब उन महान संगीतकारों की बेजोड़ रचनाओं की बारीकियाँ कैसे अपने मनोमस्तिष्क में रखती होगी? विविध सांगीतिक बारीकियों के प्रस्तुतिकरण में कभी उनसे चूक क्यों नहीं हुई? न कभी उनसे लफ्जों का उच्चारण गड़बड़ावा, न कभी ताल की मात्रा फिसली और नहीं कभी जज्बातों के इज़हार में कोई कमी आई। लता जी का कोई भी गीत कभी टूटा हुआ नज़र क्यों नहीं आया? सुरों का निराला निरंतर प्रवाह उनके गीतों से अनुभव किया जाता रहा है। मिसाल के तौर पर, अंतरों का स्थायी के साथ बहुत ही सुंदर सिंक्रोनाइज़ेशन लता जी के आलाप / मींड या तान लेते हुए सुरों ने सदैव किया है। संगीतकारों को कभी इस पहलू की चिंता करने की ज़रूरत ही नहीं पड़ी। अनेक संगीतकार यह भी कहते थे कि लता जी को हम सिर्फ नोटेशन्स दे देते हैं, संगीत की महीन खूबसूरतियाँ वे खुद ही गूंथ देती हैं।

प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक पिता मास्टर दीनानाथ मंगेशकर के असमय निधन से कैशोर्य काल में लता जी ने इतने दुर्दिन देखे और संघर्ष के दिनों में इतना दुःख सहन किया कि उस दौर के उनके

पीड़ा-गीतों में भावों की सच्चाई श्रोता को आश्चर्यचकित नहीं करती बल्कि उसके अन्तर्मन को गहराई तक भिगो देती है। जब कभी संगीत में ऑप्टिमाइजेशन या अनुकूलन के कोण की बात करते हैं, लता मंगेशकर, के सुरों को ही हम शिद्दत से याद करते हैं। मानवीय सुरों के ताने-बाने में लता जी ने लगभग अतुलनीय कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

आज के दौर में फ़िल्मी संगीत में भारतीयता का प्रभाव समाप्तप्राय है लेकिन लता जी के गाए प्रत्येक अक्षर से सिर्फ़ भारतीयता ही छलकती हुई दिखाई देती है। मेरा यह दावा है कि लता मंगेशकर ने फ़िल्मी संगीत में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत को जीवित रखा है वरना जो चतुर्दिक् सांगीतिक आक्रमण हमारे फ़िल्मी गीतों पर, ख़ास तौर से, 1957 के पश्चात् बढ़ा, उससे लोगों की रुचि भी संक्रमित होने लगी थी। ये लता जी के दैवीय सुर ही हैं जो भारतीय शास्त्रीय संगीत की आत्मा को फ़िल्म संगीत में अछूती और उज्ज्वल बनाए रखे हुए हैं। लता जी के गीतों के विश्लेषण में भारतीय संगीत के खज़ाने की कुंजी भी छिपी हुई है।

मेरा मानना है कि लता के बराबर की गायिका कोई नहीं हुई। लता ने चित्रपट संगीत को लोकप्रिय बनाया। आज बच्चों के गाने का स्वर बदल गया है। यह सब लता के कारण हुआ है। चित्रपट संगीत के विविध प्रकारों को आम आदमी समझने लगा है तथा गुनगुनाने लगा है। लता ने नयी पीढ़ी के संगीत को संस्कारित किया तथा आम आदमी में संगीत विषयक अभिरुचि पैदा करने में योगदान दिया। आम श्रोता शास्त्रीय गायन व लता के गायन में से लता की ध्वनि मुद्रिका को पसंद करेगा।

आम आदमी को राग के प्रकार, ताल आदि से कोई मतलब नहीं होता। उसे केवल मस्त कर देने वाली मिठास चाहिए। लता के गायन में वह गानपन् सौ फीसदी मौजूद है। लता के गायन की एक और विशेषता है-स्वरों की निर्मलता। नूरजहाँ के गानों में मादकता थी, परंतु लता के स्वरों में कोमलता और मुग्धता है। यह अलग बात है कि संगीत दिग्दर्शकों ने उसकी इस कला का भरपूर उपयोग नहीं किया है। लता के गाने में एक नादमय उच्चारण है। उनके गीत के किन्हीं दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा सुंदर रीति से भरा रहता है। दोनों शब्द एक-दूसरे में विलीन होते प्रतीत होते हैं। मेरा मानना है कि लता के करुण रस के गाने ज़्यादा अच्छे नहीं हैं, उसने मुग्ध शृंगार की अभिव्यक्ति करने वाले मध्य या द्रुतलय के गाने अच्छे तरीके से गाए हैं। अधिकतर संगीत दिग्दर्शकों ने उनसे ऊँचे स्वर में गवाया है।

मेरा मानना है कि शास्त्रीय संगीत व चित्रपट संगीत में तुलना करना निरर्थक है। शास्त्रीय संगीत में गंभीरता स्थायी भाव है, जबकि चित्रपट संगीत में तेज, लय व चपलता प्रमुख होती है। चित्रपट संगीत व ताल प्राथमिक अवस्था का होता है और शास्त्रीय संगीत में परिष्कृत रूप।

चित्रपट संगीत में आधे तालों, आसान लय, सुलभता व लोच की प्रमुखता आदि की विशेषताएँ होती हैं। चित्रपट संगीत गायकों को शास्त्रीय संगीत उचित जानकारी जरूर होनी चाहिए। लता जी के पास यह ज्ञानाधिक था।

लता के तीन-साढ़े तीन मिनट के गान और तीन-साढ़े तीन घंटे की शास्त्रीय महफिल का कलात्मक व आनंदात्मक मूल्य एक जैसे हैं। उसके गानों में स्वर, लय व शब्दार्थ का संगम होता है। गाने की सारी मिठास, सारी ताकत उसकी रंजकता पर आधारित होती है और रंजकता का संबंध रसिक को आनंदित करने की सामर्थ्य से है। लता का स्थान अव्वल दरज़े के खानदानी गायक के समान है। किसी ने पूछा कि क्या लता शास्त्रीय गायकों की तीन घंटे की महफिल जमा सकती है? लेखक उसी से प्रश्न करता है कि क्या कोई प्रथम श्रेणी का गायक तीन मिनट में चित्रपट का गाना इतनी कुशलता और रसोत्कटता से गा सकेगा? शायद नहीं।

खानदानी गवैयों ने चित्रपट संगीत पर लोगों के कान बिगाड़ देने का आरोप लगाया है। मेरा मानना है कि चित्रपट संगीत ने लोगों के कान सुधारे हैं। मेरी दृष्टि में हमारे शास्त्रीय गायक आत्मसंतुष्ट वृत्ति के हैं। वे कर्मकांड को आवश्यकता से अधिक महत्व देते हैं, जबकि चित्रपट संगीत लोगों को अभिजात्य संगीत से परिचित करवा रहा है।

लोगों को सुरीला व भावपूर्ण गाना चाहिए। यह काम चित्रपट संगीत ने किया है। उसमें लचकदारी है। उस संगीत की मान्यताएँ, मर्यादाएँ, झंझटें आदि निराली हैं। यहाँ नवनिर्माण की गुंजाइश है। इसमें शास्त्रीय रागदारी के अलावा लोकगीतों का भरपूर प्रयोग किया गया है। संगीत का क्षेत्र विस्तृत है। ऐसे चित्रपट संगीत की बेताज सम्राज्ञी लता जी है। उसकी लोकप्रियता अन्य पाश्र्व गायकों से अधिक है। उसके गानों से लोग पागल हो उठते हैं। आधी शताब्दी तक लोगों के मन पर उसका प्रभुत्व रहा है। यह एक चमत्कार है जो आंखों के सामने है।

उनके गायन में निम्नलिखित विशेषताएँ दिखाई देती हैं -

1. सुरीलापन-लता जी के गायन में सुरीलापन है। उनके स्वर में अद्भुत मिठास, तन्मयता, मस्ती तथा लोच आदि हैं, उनका उच्चारण मधुर गूंज से परिपूर्ण रहता है।

2. स्वरों की निर्मलता-लता जी के स्वरों में निर्मलता है। लता का जीवन की ओर देखने का जो दृष्टिकोण है, वही उसके गायन की निर्मलता में झलकता है।

3. कोमलता और मुग्धता-लता जी के स्वरों में कोमलता व मुग्धता है। इसके विपरीत नूरजहाँ के गायन में मादक उत्तान दिखता था।

4. नादमय उच्चार - यह लता जी के गायन की अन्य विशेषता है। उनके गीत के किन्हीं दो शब्दों का अंतर स्वरों के आलाप द्वारा सुंदर रीति से भरा रहता है। ऐसा लगता है कि वे दोनों शब्द विलीन होते-होते एक-दूसरे में मिल जाते हैं। लता के गानों में यह बात सहज व स्वाभाविक है।

5. शास्त्र- शुदधता-लता जी के गीतों में शास्त्रीय शुद्धता है। उन्हें शास्त्रीय संगीत की उत्तम जानकारी है। उनके गीतों में स्वर, लय व शब्दार्थ का संगम होने के साथ-साथ रंजकता भी दिखाई देती है। हमें लताजी की गायकी में उपर्युक्त सब प्रकार की विशेषताएँ दिखाई देती हैं। उन्होंने देशप्रेम, भक्ति, शृंगार तथा विरह इत्यादि प्रत्येक प्रकार के गीत गाए हैं। उनका हर गीत लोगों के मन को छू लेता हैं। वे गंभीर या अनहद गीतों को सहजता से गा लेती हैं। एक तरफ 'ए मेरे वतन के लोगों ' गीत से पूरा देश भावुक हो उठता है तो दूसरी तरफ 'दिलवाले दुल्हनियाँ ले जाएँगे ' फ़िल्म के अल्हड़ गीत युवाओं को मस्त करते हैं। हकीकत में गायकी के क्षेत्र में लता जी सर्वश्रेष्ठ है।

"चंदा रे जा रे जा रे, पिया से संदेसा मोरा कहियो जा

मोरा तुम बिन जिया ना लागे रे पिया,

मोहे इक पल चैन ना आए

किस के मन में जाए बसे हो, हमरे मन में अगन लगाए

हमने तोरी याद में बालम, दीप जलाये दीप बुझाये

फिर भी तेरा मन ना पिघला, हमने कितने नीर बहाए, चंदा, चंदा रे जा रे

घड़ियाँ गिन-गिन दिन बीतत हैं, अँखियों में कट जाए रैना

तोरी आस लिए बैठे हैं, हँसते नैना रोते नैना

हमने तोरी राह में पितम, पग-पग पे हैं नैन बिछाए, चंदा, चंदा रे जा रे। "[3]

इस गीत को रचे हुए आज 72 साल से भी ऊपर हो गए हैं ,फिर भी अब तक लोकप्रिय है। इसका एक स्पष्ट कारण है, इस गीत की अपूर्व मिठास, लता जी का अद्भुत प्रस्तुतीकरण, उनके गायन की अकल्पित ऊँचाई। लता को देवी सरस्वती माना जाता है और उसके पीछे उनकी साधना है, संघर्ष है, श्रम है।

लता जी की आवाज़ में विलक्षण बारीकियाँ रही हैं, सुरों की परिधियाँ अप्रतिम रही हैं, यही वजह है कि आम श्रोता भी उनके सुरों के प्रशंसक बनते चले गए। यही सरलता, शालीनता उन्होंने अपने जीवन में भी अपनाई और वे लता मंगेशकर के रूप में एक जीवित किंवदन्ती बन गई।

प्रेम धवन लिखित इस गीत के मूल भाव नायिका के प्रतीक्षा के हैं इसलिए वे तात्कालिक हैं। इन मूल भावों के अलावा कहीं चाँद से अर्ज़ है तो कहीं शिकायत है। कहीं तड़प है, कहीं उम्मीद भी। कुल मिलाकर गीत में प्रेयसी के अल्हड़पन और बेताबी के सुकोमल भाव हैं। इस अवस्था में दिल तेज़ धड़कता है, अतः गीत की लय को तेज़ रखते हुए, लता के सुरों के उतार-चढ़ाव इसी तर्ज़ में पिरोए गए हैं।

मुखड़े को सम्पूर्णतः मध्य और मंद्र सप्तकों में रचा गया है। एक बेहतरीन बोल आलाप 'चंदा रे जा रे जा रे' से लता जी ने गीत की शुरुआत की है। पहले ही अक्षर चंदा को खटका लगाते हुए, एक सुंदर मींड से वे चाँद से अर्ज़ करती हैं। पहले जा पर एक खूबसूरत हरकत और रे पर, फिर एक मींड लेते हुए अर्ज़ की अभिव्यक्ति में तीव्रता उत्पन्न की है। मुखड़े के पहले लफ़्ज़, चंदा को उन्होंने आंदोलित कर चाँद से अर्ज़ की है। सुर-क्रीड़ा से वे भावाभिव्यक्ति को किस तरह प्रभावी बनाती रही हैं, यह गीत इसकी एक बेजोड़ मिसाल है। दूसरे जा रे के पश्चात् उनके द्वारा लिया हुआ पॉज़ बेहतरीन है जिससे ऐसा लगता है, मानो अब नायिका चाँद को आदेश भी दे रही है। और कमाल की बात है कि इसी जा पर तबले की पहली थाप (सम) पड़ती है। अब तो ताल भी शामिल हो जाता है भावाभिव्यक्ति में जिया की गमक-युक्त अदायगी और आए का आलाप दिल को लूट लेता है जहाँ लता ने, चाँद के मार्फत नायिका की शिकायत नायक को प्रेषित की है। इन लफ़्ज़ों की अदायगी में लता ने बड़ी सुंदरता से गुस्से के भाव भी दर्शाए हैं।

गीत के दो अंतरे हैं और दोनों की स्वर-रचना समान ही है। पहले अंतरे के जाए बसे हो और फिर भी तेरा मन ना खंडों में लता जी ने तार सप्तक में ख़ूबसूरती से नायिका की अपेक्षित भावों की अभिव्यक्ति की है। तेरा लफ़्ज़ की अदायगी कसावट से भरी हुई है। यहाँ लता जी के सुर तार सप्तक के ऋषभ पर होते हैं और उस मुकाम पर एक बेजोड़ हरकत लेते हुए मध्यम तक पहुँचकर नायिका की शिकायत व्यक्त करते हैं। पिघला पर खटका लाजवाब है। हमने कितने नीर बहाए में लता के सुर बड़ी सुंदरता से टुकड़ों-टुकड़ों में पॉजेस लेते हुए नीचे मध्य सप्तक में आकर नायिका की व्यथा सुनाते हैं। यह इस गीत का शानदार सौंदर्य स्थल बना है। चंदा के पश्चात लिया हुआ पॉज़ बेमिसाल है और वहीं पड़ती है, तबले की खूबसूरत थाप (सम)। कैसे कोई भूले इन गीतों को! इस गीत की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि शिकायत, तड़प में भी उम्मीद

के भाव लता ने पिरोए हैं। सन 1948 से उन्होंने अपने बहुआयामी सुर का परिचय देना शुरू कर दिया था।

गीत जल्दी ख़त्म होने का मलाल क्या होता है, यह हमसे ज़्यादा भला कौन समझेगा ? यह वह ज़माना था जब केवल रेडियो सीलोन ही ऐसे गीत बजाया करता था। आल इंडिया रेडियो की उर्दू सर्विस ज़रूर ऐसे गीत बजाया करती थी लेकिन उनके कार्यक्रमों की संख्या सीमित थी इसलिए ऐसे गीत नियमित सुनाई देने की सम्भावना भी बहुत कम हुआ करती थी। रेडियो सीलोन ने हमारी इस विरासत को जिंदा रखा, हम श्रोताओं का परिचय दिन-प्रतिदिन इन विशिष्ट गीतों से करवाते गए। सन् 2004 में जब फ़िल्म ज़िद्दी की प्रिंट हाथ लगी, तब जाकर मुझे यह पता चला कि जिस गीत को हम रेडियो सीलोन पर सुनते थे, वह असल में साउंडट्रैक वर्शन से काफी अलग था। उदाहरण के लिए, साउंडट्रैक वर्शन में, दूसरे अंतरे में लता गाती हैं, बैठे हम और ग्रामोफ़ोन वर्शन में गाती हैं, बैठे हैं। इन दो बिन्दुओं के अलावा, लफ़्ज़ों की अदायगी में भी कई बदलाव हैं। दोनों वर्शन्स का अंत भी पूरी तरह से भिन्न है।

साउंडट्रैक वर्शन को सुनकर ऐसा आनंद हुआ जैसे एक नया लता-गीत हाथ लगा हो। मेरी यह धारणा है कि लता का प्रत्येक अनसुना गीत जीवन में ख़ुशियाँ लेकर आता है। मुमकिन है कि आज भी ऐसे कई लता-गीत होंगे जो हमारे हाथ अभी लगे ही नहीं हैं।

महान संगीतकार खेमचंद प्रकाश हमारे फ़िल्मसंगीत की दुनिया में वटवृक्ष की तरह थे। ऐसे वटवृक्ष जिसने अपने साये तले नन्हें अंकुरों को संरक्षण दिया जो आने वाले समय में पल्लवित और पुष्पित हुए। कुछ प्रमुख नाम हैं-नौशाद, मदन मोहन, जय देव, भोला श्रेष्ठ जैसे अनेक संगीतकार और लता मंगेशकर, किशोर कुमार जैसे गायकों की लम्बी कतार। जो भी खेमचंद प्रकाश जी के संपर्क में आता था, उनकी संगीत की समझ एवं प्रतिभा से प्रभावित हो जाता था। सुर, लय और ताल का जो अपूर्व संगम उनके संगीत में था, उसके प्रभाव को कई संगीतकारों ने भविष्य की अपनी रचनाओं में सफलतापूर्वक उतारा। यूँ कहा जाए कि खेमचंद प्रकाश की विरासत को जीवित रखा। उनकी रचनाओं को संगीत का पैमाना समझा जाता रहा है। दुःख की बात है कि उन्हें सिर्फ 43 वर्ष की अल्पायु प्राप्त हुई। 10-12 सालों के संक्षिप्त सक्रिय संगीत-जीवन में उन्होंने अभूतपूर्व सांगीतिक चमत्कार दिखाए। हम श्रोताओं का दुर्भाग्य रहा कि लता का सुर उनकी जिंदगी में आखिरी वर्षों में आया और दोनों सिर्फ 3 फ़िल्में ही साथ कर पाए।

लता मंगेशकर नामक हीरा खेमचंद प्रकाश के हाथ लगा, सन 1947 की फ़िल्म आशा से यक़ीन जानिए उन्होंने किशोरी लता से 5 बेहतरीन एकल गीत गवाए। कितना भरोसा रहा होगा उन्हें लता की गायन प्रतिभा पर! कहते हैं कि पूरी फ़िल्मी दुनिया अचरज में पड़ गई थी। इसी फ़िल्म

का 'दूर जाए रे, राह मेरी आज तेरी राह से' गीत भी उस समय काफ़ी लोकप्रिय हुआ था। इस तरह एक नवोदित कलाकार (लता मंगेशकर) ने फ़िल्मी दुनिया में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज कराई।

बॉम्बे टॉकीज़ की फ़िल्म ज़िद्दी (1948) बेहद कामयाब हुई। इसी फ़िल्म के लता जी गीत, 'जादू कर गए किसी के नैना' और 'मुझे ओ बेवफ़ा हम जिंदगी का आसरा समझे', ये दो एकल गीत भी बेहतरीन हैं और लता जी के सुरों के लिए हर स्थान पर चुनौती पेश करते हैं। लता जी की आवाज़ की खूबियों को भली-भाँति जानने वाले श्रेष्ठ संगीतकार थे खेमचंद प्रकाश, उनके संगीत निर्देशन में एक निराली लता प्रस्तुत हुई हैं।

'बेदर्द तेरे दर्द को सीने से लगा के
रो लेंगे तसव्वुर में तुझे पास बिठा के '

यह गीत देश के बँटवारे के पहले या तुरंत बाद रिकार्ड किया गया था। इस तरह लता मंगेशकर ने 90 से भी ज़्यादा फिल्मों में गीतों के साथ संगीत के क्षेत्र में अपना विशिष्ट योगदान दिया है।

सहायक आचार्य
इतिहास विभाग
राजकीय कला महाविद्यालय कोटा

संदर्भ- संकेत :-

1. The Indian Express 28 September 2016 मूल से 28 सितम्बर, 2016 को पुरोलेखित अभिगमन तिथि 28 September-2016

2. BBC News हिंदी 06.02.2022 अभिगमन तिथि

3 .लता-श्रुति संवाद -अजय देशपांडे-पृ.4

++++++

लता मंगेशकर के प्रसिद्ध दर्द भरे गीत :- एक अनुशीलन

- डॉ हिमानी भाटिया

लता मंगेशकर के प्रसिद्ध कई गाने हैं, जो अपने आप में अनोखे हैं। लता मंगेशकर, यह नाम सुनते ही कानों में एक मीठी मधुर आवाज़ शहद की मानिंद घुलने लगती है। एक विनम्र मुस्कुराती प्रतिमूर्ति आँखों के समक्ष उभरने लगती है। स्वत: ही हमारा मन श्रद्धा से भर उठता है। उनके सम्मान में जितना श्रेष्ठ लिखा जाए कम ही लगता है।

अरबों-खरबों जनता को समेटती इस धरा पर ऐसे विलक्षण जादू विरले ही मिलते हैं। उनकी सुरीली आवाज़ का दिव्य-अमृत हमारे कानों में पड़ता है और हम समूची कायनात की इस सबसे विशिष्ट आवाज़ के प्रति नतमस्तक हो जाते हैं।

लता मंगेशकर ने हमेशा 'क्वांटिटी' की बजाय 'क्वॉलिटी' को महत्व दिया, इसलिए उनके द्वारा गाया लगभग हर गीत अपने आप में अनोखा है, बेहतरीन है, सुनने लायक है। उन्होंने हजारों गाने गाए और उनमें से चंद गीतों को सर्वश्रेष्ठ कहना नाइंसाफी होगी। कई गीत ऐसे भी हैं जो कुछ कारणों से लोकप्रिय नहीं हो पाए, फिर भी उम्दा हैं।

समय-समय पर कई गीतकारों, संगीतकारों, अभिनेताओं ने लता के श्रेष्ठ गीतों की सूची बनाने की कोशिश की है, लेकिन उनके सामने भी यही समस्या रही है कि किसे शामिल करें और किसे छोड़ें। वैसे तो पचास और साठ का दशक फ़िल्म संगीत के लिहाज से स्वर्णिम काल माना जाता है, लेकिन यहाँ हमने हर दौर के लता द्वारा गाए गीतों को शामिल करने की कोशिश की है। पेश है उनके श्रेष्ठ प्रसिद्ध गीत :

गाने	फ़िल्म
उठाए जा उनके सितम	अंदाज
हवा में उड़ता जाए	बरसात
आएगा आएगा आएगा आने वाला	महल
घर आया मेरा परदेसी	आवारा
तुम न जाने किस जहाँ में	सज़ा
ये जिंदगी उसी की है	अनारकली
मन डोले मेरा तन डोले	नागिन
मोहे भूल गए साँवरिया	बैजू बावरा

यूँ हसरतों के दाग	अदालत
जाएँ तो जाएँ कहाँ	टैक्सी ड्राइवर
प्यार हुआ इकरार हुआ	श्री 420
रसिक बलमा	चोरी चोरी
ऐ मालिक तेरे बंदे हम	दो आँखे बारह हाथ
आ लौट के आजा मेरे गीत	रानी रूपमती
प्यार किया तो डरना क्या	मुगल ए आजम
ओ बसंती पवन पागल	जिस देश में गंगा बहती है
ज्योति कलश छलके	भाभी की चूड़ियाँ
अल्लाह तेरो नाम	हम दोनों
पंख होते तो उड़ आती रे	सेहरा
बिंदिया चमकेगी	दो रास्ते
चलते चलते	पाकीजा
सुन साहिबा सुन	राम तेरी गंगा मैली
कबूतर जा जा	मैंने प्यार किया
मेरे हाथों में नौ-नौ चूड़ियाँ है	चाँदनी
यारा सीली सली	लेकिन
दीदी तेरा देवर दीवाना	हम आपके है कौन
मेरे ख्वाबों में जो आए	दिलवाले दुल्हनिया ले जाएँगे
दिल तो पागल है	दिल तो पागल है
जिया जले जाँ जले	दिल से
हमको हमीं से चुरा लो	मोहब्बतें

" आएगा आएगा आएगा आएगा आनेवाला

आएगा आएगा आनेवाला, आएगा आएगा आएगा

खामोश है ज़माना, चुपचाप हैं सितारें

आराम से है दुनिया, बेकल हैं दिल के मारे

ऐसे में कोई आहट इस तरह आ रही है।

जैसे कि छल रहा हो मन में कोई हमारे

या दिल धड़क रहा है, इक आस के सहारे

आएगा आएगा आएगा आएगा आएगा आनेवाला

...लेकिन ये कह रहे हैं, दिल के मेरे इशारे ।" [1]

'महल ' फ़िल्म के इस गाने में लता जी ने यहाँ पर दर्द से पीड़ित नायिका का वर्णन किया है ।

"ओ ~ मुझे किसी से प्यार हो गया

प्यार हो गया, दिल बेक़रार हो गया

दर्द चाहा था हमने छिपाना

हाए ये क्या किया ओ सलोने पिया, मोरा धड़के जिया । " [2]

फ़िल्म बरसात भारतीय फ़िल्मी इतिहास की पहली फ़िल्म बनने जा रही थी जो आउटडोर में शूट हुई। यह फ़िल्म राजकपूर की नई और व्यापक सोच की पहचान बनने वाली थी, जो बिना शक बनी भी। बरसात में संवाद, बेहतरीन संतुलन भी दिखाई दिया। इसके संवाद एवं पटकथा, बँटवारे के पश्चात् कुछ ही समय पूर्व लाहौर से मुंबई लौटे , सागर ने लिखे थे। बरसात अदाकारा निम्मी की पहली फ़िल्म थी, जो गुज़रे दौर की प्रसिद्ध गायिका वहीदन बाई की बेटी थी। फ़िल्म बरसात ,लता मंगेशकर के भी सुरों की बरसात थी। लता जी के स्वच्छंद भावों की प्रस्तुति की गई है।

'सलोनी ' फ़िल्म के गीत की संवेदना इस प्रकार है -

" मुझे दर्द तूने ये क्या दिया

ना मैं जी सकूँ, ना मैं मर सकूँ

मेरा बस चले तुम्हें आ मिलूँ, मेरा बस चले मैं भुला ही दूँ

मेरी बेबसी ज़रा देख तू , ना ये कर सकूँ , ना वो कर सकूँ

मेरी बेबसी का जो बस चले, तुम्हें जा के मेरा पयाम दे

मैं जो ज़िंदा हूँ तो बस इस लिए तेरा इंतज़ार ही कर सकूँ। "[3]

लता के गाए सैकड़ों गीत ऐसे हैं जो दर्द से भरे हुए हैं लेकिन साथ ही बेहद मधुर भी हैं। लिहाज़ा, उन्हें दर्द भरे मधुर गीत कहना कतई अनुचित न होगा। संगीतकार बसंत प्रकाश रचित इस लाजवाब गीत को ऐसे गीतों की सूची में ऊपरी स्थान देना आवश्यक है। इस गीत में बहुत कुछ है, जिसके कारण यह बार-बार सुने जाने के लिए बाध्य करता है। इस नज़ाकत भरे गीत में नायिका के मन की दुविधा और घुटन लता ने प्रस्तुत की है जिसे संगीतकार बसंत प्रकाश ने राग बागेश्री के सुरों में पिरोया है। प्रस्तुत गीत में अनेक भाव लता ने बेहद प्रभावकारी ढंग से अभिव्यक्त किए हैं जिनमें इंतज़ार, उम्मीद, अर्ज़ ,दर्द और शिकायत शामिल हैं। इन्हीं विशेषताओं के चलते मैंने इस लेख में सम्मिलित करना योग्य समझा।

"दुनिया बदल रही है आँसू बहाने वाले
तूफ़ान आँसुओं का पलकों में अब छुपा ले
दिल मेरा तुझ से बोले आँसू बना ले शोले
उम्मीद की किरण से ये दिल का दाग़ धो ले
इन ग़म की आँधियों में मन के दीए जला ले
अब दूर कर अँधेरा चमकेगा फिर सवेरा
तुझसे नज़र मिलाकर भर आया दिल भी मेरा
उजड़ी जवानियों से बिगड़ी को तू बना ले
तू भी तो अब बदल जा ये वक़्त है संभल जा
रोकेगा कौन तुझको एक तीर बनके चल जा
मैं दिल का साज़ छेड़ूँ, व सुख के गीत गा ले। "[4]

सुखदायक, प्रेरक गीत जिससे लता मंगेशकर के मध्य और मंद्र सप्तकों के सुरों का सौंदर्य प्रदर्शित होता है। शंकर का नाम लेते ही अक्सर उनकी ऊँची पट्टी के गीतों का स्मरण होता है लेकिन यह गीत भिन्न है। इसे वे सम्पूर्णतः मध्य हुए, कुछेक जगहों पर लता के सुर मंद्र सप्तक में भी ले गए हैं। इस पुस्तक में यह लता-गीत अभिनेत्री पूर्णिमा की नुमाइंदगी करता है।

सत्तर वर्ष हो रहे हैं इस गीत को लेकिन इसके असर में कोई कमी नज़र नहीं आई। असर, चाहे वो बोलों में हो या संगीत- लता के सुरों के असर में तो कोई कमी होना मुमकिन ही नहीं।

यह गीत कभी दिल को क़रार दे जाता है, तो, कई बार बेक़रार भी कर जाता है। गीतकार हसरत जयपुरी के शानदार बोलों की यहाँ मैं पुरजोर सराहना करना चाहता हूँ, उन्होंने मानवीय जीवन के स्थायी पहलू संघर्ष पर आधारित रचना लिखी, डट कर सामना करने की प्रेरणा दी। ऐसा कौन मनुष्य होगा जो संघर्ष से अछूता रहा हो? लेकिन संघर्ष को मात दे ज़िंदादिली है। प्राचीन काल से हमारे मनीषी विभिन्न माध्यमों से मनुष्य को प्रेरित करते रहे हैं कि संघर्ष को हराना है, इससे हारना नहीं है। कलाओं ने भी इस दृष्टिकोण से अपनी-अपनी भूमिकाएँ निबाही हैं।

"जिया लहर-लहर लहराए के मन ललचाए,
गीत कोई गाए रे, सपन मेरे जीवन के मुस्काए
कोई छुप-छुप नैन मिलाए कि पास बुलाए रे
मेरी कलि-कलि खिल जाए, नज़र झुक जाए, हुस्न शरमाए रे
धड़क जिया, हो मन मोरा पंछी बन उड़ जाए
अब चमक चाँदनी रातें, होंगी रातें,
अब हिल-मिल उनसे बातें, होंगी बातें
वो कहेंगे मुझसे रानी, बड़ी मेहरबानी,
इधर तो आओ तड़प जिया जाए
कहूँगी, तोहे लाज-शरम नहीं आए
मैंने गिन-गिन बरस बिताए, के दीप जलाए रे
कोई मुझको अपनी बनाए, के प्यार जताए
रहा ना अब जाए रे, सहा ना अभी जाए
तो कोई मोरे नैनों की निंदिया चुराए रे। "[5]

चंचलता, अल्हड़पन, असमंजस, बेफ़िक्री... यौवन के स्थायी भावों का सौन्दर्य बिखेरता यह तेज़ लय - इस गीत की स्वर - रचना और लता मंगेशकर का गायन सुनकर भला कौन होगा जो अपने युवाकाल में न पहुँच जाए।

प्रस्तुत गीत में नायिका की चंचलता एवं बेफ़िक्री को बड़ी खूबसूरती से संगीतकार द्वय इ. संकर शास्त्री एवं बी. एस. ने प्रस्तुत किया है। इस गीत की अवधि कम है लेकिन लम्बाई, उस दौर के किसी भी गीत से ज़्यादा है, यही इस गीत की विशेषता है।

युवाकाल मतलब, चंचलता... हर काम की हड़बड़ाहट ! कुछ तत्परता, कुछ दुविधा, कम विचार और अधिक जोश ही तो होते हैं जवानी के दिन। उम्र का यह वह दौर है जब दिन, महीने, साल जल्दी-जल्दी बीतते हैं। बस, इसी को मद्देनज़र रख गीत की लय बेहद तेज़ रखी गई है। उस दौर के गीतों की रचना में पहले फ़िल्म की सिचुएशन का अध्ययन किया जाता था, तब यथोचित संगीत नियोजन निर्मित किया जाता था। इस पुस्तक में विशेष तौर पर संगीत-नियोजन एवं उस पर लता के लाजवा पर विस्तार से लिखा गया है।

"रोते-रोते गुज़र गई रात रे,
आई याद तेरी हर बात रे
नींद भी मेरी ना मेरी हो सकी रो सकी
रोके शबनम भी ना ये ग़म धो सकी
थी मैं तेरी पर ना तेरी हो सकी
ख़्वाब की दुनिया उजड़ कर रह गई
छीन ली सूरज ने घर की रौशनी
चाँद से होती है दूर अब चाँदनी
प्यार की घड़ियाँ बहुत याद आएँगी
याद आकर रात-दिन तड़पाएँगी
तुमको ये तन्हाइयाँ डस जाएँगी
मेरी ख़ातिर अश्क़ बरसाना ना तुम
दिल की बुझती आग भड़काना ना तुम
मेरी बर्बादी पे मिट जाना ना तुम। "[6]

इंतज़ार और तड़प के भावों को उद्धृत करते हुए इस ग़मग़ीन गीत के स्वभाव के अनुरूप एस. डी. बर्मन ने कामोद जो खमाज थाट में वर्गीकृत होता है, को चुना। शृंगार रस से भरपूर इस राग का विपुल उपयोग, बंगाल से आए संगीतकारों जैसे अनिल बिस्वास, एस. डी. बर्मन और हेमंत कुमार आदि ने अपनी धुनों में किया। बुज़दिल फ़िल्म के इस गाने में लता जी ने नायिका की तड़पन को चित्रित किया है।

"कैसे तुम बिन कटेगी उमरिया
मोहे इतना बता दो साँवरिया, रे ओ
अपनी आँखों में किसको बसाए हुए
... मन के राजा ना लटो नगरिया, रे ओ। "[7]

ऐसी मिठास से भरी सुरीली अर्ज़ एवं तक़रार से भला कौन न पिघल जाए! लता अपने सुरों से भावों की बेजोड़ अभिव्यक्ति हुए श्रोताओं के दिलों के तार छेड़ देती हैं। प्रस्तुत गीत में तो उन्होंने अर्ज़ एवं तकरार के अलावा, नटखट भाव भी अभिव्यक्त किए हैं जो गीत की ऊँचाई को हमारी सोच से भी ऊपर कर देते हैं। सुर-सागर में लहरों की तरह अठखेलियाँ लेता लता का स्वर और भावों पर अनुपम पकड़, उनकी गायकी के महत्वपूर्ण अंग रहे हैं। इस लेख में ऐसे प्रत्येक पक्ष पर विचार किया गया है जो सुगम संगीत के गायक-गायिकाओं के लिए उपयोगी हो सकता है। लता मंगेशकर के सुरों में बसी संगीत की बारीकियों की विस्तृत चर्चा इसमें की गई है।

इस लेख में वर्णित गीत की रचना बेमिसाल है। जब ऐसी रचनाएँ लता के हाथ लगती थीं तो वे अपनी वैविध्यपूर्ण गायकी से उसे अमर बना देती थीं। इसीलिए तो आज 70 सालों बाद भी इन गीतों के गर्भ में सौंदर्य स्थलों को ढूंढ कर समझने का प्रयास किया जा रहा है। इस गीत की ताल योजना भी यादगार है। जहाँ लता पॉज लेती है, वहीं तबला भी पॉज़ लेता है। एक लिहाज़ से यह गीत, लता के सुरों और तबले की थापों के बीच विशुद्ध जुगलबंदी लगता है तो दूसरे लिहाज़ से लगता है मानो लता की मीठी तकरार भरे सुरों में तबले की थापों का अनुमोदन शामिल हो।

प्रस्तुत गीत का प्रारंभ लता ने जिस लाजवाब आलाप से किया है, वही इस गीत का शानदार समाँ बाँधता है। इस आलाप से गमक गायकी की झलक भी दिखाई देती है। शानदार लय के साथ, मुखड़े को महान संगीतकार दत्ता कोरगांवकर ने मध्य सप्तक में रचा है। शुरुआती आलाप के पश्चात् एक सुंदर मींड लेते हुए, शब्द का महत्व उजागर करते हुए, श्रोताओं का दिल जीता जाता है। मुझे यक़ीन है, परदे पर भी नायक होश खो देता हुआ नज़र आता होगा। मोहे इतना बता खंड की स्वर-रचना और उस पर किया हुआ अमल लाजवाब है ।

इस प्रकार मदमस्त फ़िल्म के गाने में दर्द की बात की गई है -

"सुनाएँ हाल-ए-दिल क्या हम हमारा
मुक़द्दर बन गया दुश्मन हमारा
ख़िज़ाँ बन कर उजाड़ा बेरहम ने
यह लहराता हुआ गुलशन हमारा
गिराकर आग बादल की घटा से
जलाता है ये दिल सावन हमारा । " [8]

लता ने अपने मृदुल एवं करुण स्वरों से नायिका की तड़प को अभिव्यक्त करते हुए श्रोताओं को बहुत सघनता से संवेदिक किया है। यह गीत लता-श्रुति संवाद में प्रसिद्ध अरेंजर एवं संगीतकार वी. बलसारा और गीतकार मधुकर राजस्थानी की नुमाइंदगी करता है।

इसके अलावा उन्होंने चोरबाज़ार, टैक्सी ड्राइवर, मधुरमिलन, ये बस्ती ये लोग, सजनी, मिलन, कंगन, ब्लैक कैट, कीचक वध इत्यादि फिल्मों में भी प्रेम के दर्द के गीत गाए हैं।

इस तरह से प्रस्तुत लेख में लता मंगेशकर के गानों में दर्द भरे गीतों का अनुशीलन किया गया है।

- **बारां**

संदर्भ-सूची :-

1.महल.श्रुति-संवाद .अजय देशपांडे .पृ.10

2 .वही.पृ.21

3 .वही .पृ.109

4 .वही .पृ.99

5 .वही .पृ.89

6 .वही .पृ.62

7 .वही .पृ.53

8 .वही .पृ.177

लता मंगेशकर का जीवन संघर्ष

- **डॉ. दत्तात्रेय गौतम**

लता मंगेशकर अब नहीं रही। वे अपने करोड़ों फैंस और शुभचिंतकों को छोड़कर, रविवार 06 फरवरी 2022 को इस दुनिया को अलविदा कह गई। लता मंगेशकर को उनके करोड़ों फैंस याद कर रहे हैं। उन्हें सोशल मीडिया के माध्यम से श्रद्धांजलि दे रहे हैं।

लता मंगेशकर का वास्तविक नाम हेमा हरिदकर था। लता दीदी को लोग उनके वास्तविक जीवन से बहुत ही कम जानते थे। खास बात तो यह है कि उनके गाए गीत प्रशंसकों को उनके वास्तविक जिंदगी तक पहुंचने ही नहीं देता।

लता मंगेशकर का देशभक्ति गीत 'ए मेरे वतन के लोगों' दिल को छू लेता है।

लता दीदी के इस देशभक्ति गीत को सुनकर भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पंडित जवाहरलाल नेहरू बच्चों की तरह फूट-फूट कर रोने लगे थे। आज भी इस देशभक्ति गीत को लोग गर्व से सुनते हैं।

लता मंगेशकर का जन्म 28 सितंबर 1929 को हुआ। उनका जन्म मंगेश नामक गांव में होने के कारण नाम लता मंगेशकर पड़ गया। छोटी - सी उम्र में ही उनके पिताजी का निधन हो गया। पिताजी के गुज़रने के बाद घर की ज़िम्मेदारी लता दीदी के कंधे पर आ गई। परिवार की स्थिति बिल्कुल बिगड़ गई । उस स्थिति में वह अपनी पढ़ाई छोड़कर उन्होंने अपने छोटे भाई-बहनों को पढ़ाया।

लता दीदी कभी स्कूल नहीं गई। वह घर पर ही रहकर पढ़ती थी। छोटी सी उम्र से ही लता अपने पिता के साथ मराठी संगीत नाटक में कार्य किया करती थी। 14 वर्ष के हो जाने के बाद वह नाटकों में अभिनय करने लगी।

आज के इस लेख में मैं आप सभी को लता मंगेशकर जी के पूरे जीवन के बारे में बताऊँगा कि कैसे लता मंगेशकर जी अपने जीवन में सफल हुई। लता मंगेशकर जी को बहुत सारे लोग बचपन में कहा करते थे कि तुम अपने जीवन में कुछ नहीं कर पाओगी। तुम्हारी आवाज़ एक दम पतली है। तुम गाना गा नहीं पाओगी, ऐसा उन्हें बोल दिया गया था।

लता मंगेशकर जी जब 13 वर्ष की थी तो उनके पिता का निधन हो गया, लता मंगेशकर जी को 33 वर्ष की उम्र में ज़हर देकर मारने की कोशिश की गई, तमाम मुसीबतों को पार करते हुए लता मंगेशकर जी भारत रत्न बनीं ।

लता मंगेशकर जी ने इतनी सारी बाधाओं को पार करते हुए हार कभी नहीं मानी। लता मंगेशकर जी ने अपनी जीवन यात्रा में तकरीबन पचास हज़ार गाने गाए। मैं इस लेख में आप सभी को बताऊंगा कि आप अपने जीवन में लता जी के बारे में पढ़कर आगे कैसे बढ़ सकते हैं।

कहा गया है कि - आप सीखेंगे नहीं तो जीतेंगे कैसे?

लता मंगेशकर जी के पिता दीनानाथ मंगेशकर जी एक ड्रामा कंपनी चलाते थे। दीनानाथ मंगेशकर जी के घर बेटी का जन्म हुआ तो उनका नाम उन्होंने हेमा रखा था। दीनानाथ मंगेशकर जी जो ड्रामा कंपनी चलाते थे उसका नाम था 'भाव बंधन' और उस नाटक में किरदार निभा रही थी लतिका, लतिका नाम दीनानाथ मंगेशकर जी को बहुत ही पसंद था और उन्होंने अपनी बेटी का नाम हेमा से बदलकर लता रख दिया।

दीनानाथ जी का नाम हारडल्कर था और उन्होंने हारडल्कर को बदलकर उसकी जगह मंगेशकर कर लिया क्योंकि वह गोवा के मगेशी के रहने वाले थे । लता जी की जीवन यात्रा में संघर्ष है । हम सभी इसको पढ़कर आगे बढ़ सकते हैं। हम अपने जीवन में भी सुधार ला सकते हैं, सीखने के लिए बहुत कुछ है।

लता मंगेशकर जी महान ऐसे ही नहीं बन गई, उन्हें बहुत ही मेहनत करनी पड़ी । अपने महान शिखर पाने के लिए पहली बात जो लता मंगेशकर के जीवन से सीखने को मिलती है वह है कि अगर हम कोई काम करते हैं या किसी भी चीज़ में आपको कोई रिजेक्ट कर दें अर्थात् आप का कोई मज़ाक उड़ाए, आपको उस पर ध्यान नहीं देना है। यह नहीं सोचना है कि मेरे साथ यह क्या हो रहा है बल्कि हमें और अधिक मेहनत करनी है अपने जीवन में आगे बढ़ने के लिए।

सुधार कराने उसी टाइम उनके पिता जी पीछे आकर खड़े हो गए । उनकी मम्मी थी उनको यह कहने लगे कि मैं बाहर के बच्चे को संगीत सिखाता हूँ और मेरे घर में मेरी बेटी संगीत में कितनी रुचि रखती है, हमारे घर में ही गवैया हैं।

लता मंगेशकर जी के पिता जी ने लता जी को भी संगीत की शिक्षा देना शुरू कर दिया। शास्त्रीय संगीत के बहुत बड़े प्रशंसक थे दीनानाथ मंगेशकर जी लेकिन वे नहीं चाहते थे कि उनकी बेटी फिल्मों में गाना गाए । जब 13 साल की थी लता मंगेशकर जी तभी उनके पिताजी इस दुनिया को छोड़ कर चले गए और परिवार की जो आर्थिक स्थिति थी बहुत ही खराब होने लगी ।

लता मंगेशकर जी को मजबूरी में फिल्मों में गीत गाना शुरू करना पड़ा । उनको छोटे-छोटे किरदार भी करने पड़े ।

1983 का विश्व कप जब भारत ने जीता था क्रिकेट देखना लता मंगेशकर जी को बहुत ही अच्छा लगता था। 1983 में जब टीम इंडिया वर्ल्ड कप जीता था तो बोर्ड के पास खिलाड़ियों को देने के लिए पैसे नहीं थे बोर्ड के अध्यक्ष चाहते थे कि वैसे ही नाम दिया जाए लेकिन पैसा तो है ही नहीं। लता मंगेशकर जी ने दिल्ली में कॉन्सर्ट किया था जिसके लिए उन्होंने कोई फीस नहीं लिया ।

उस कॉन्सर्ट से जो पैसे मिले लगभग 20 लाख रुपए उस ज़माने में लता मंगेशकर जी को मिले तो उसके बाद हर एक खिलाड़ी को ₹100000 बोर्ड की तरफ से दिया गया। लता मंगेशकर जी अपने जीवन में चाहती थी कि-" मैं जितना कमा रही हूँ उसका कुछ हिस्सा लोगों की मदद में जाना चाहिए जब यह कोरोना काल आया तो उन्होंने अपनी तरफ़ से रिलीफ फंड में मदद की है।" [3]

लता मंगेशकर जी से सीखने वाली बात है कि आप हमेशा अपने जीवन में शिक्षार्थी बनिए। आप शिक्षार्थी नहीं बनेंगे तो आप अपने जीवन में सीखेंगे कैसे?

'ग़दर, द हीरो' मूवी में जिन्होंने कंपोज किया है उत्तम सिंह साहब। वे कहते हैं कि मनोज कुमार की फ़िल्म पेंटर बाबू में लता मंगेशकर जी के गाने में मैंने वॉल्यूम बजाया था। एक एल्बम बना था ओम साईं राम जिसमें लता जी के 12 गाने थे। वे कभी थकती नहीं थी। पहले 7 से 8 बार पहले रिहर्सल करते थे, उसके बाद में गाना रिकॉर्ड करती थी। कभी भी पूछती ही नहीं थी कि दोबारा से टेक हम क्यों ले रहे हैं। यश चोपड़ा जी को लता मंगेशकर जी अपना छोटा भाई मानती थी।

एक मूवी थी "दिल तो पागल है" उसने जो गाने रिकॉर्ड हो रहे थे तो उत्तम जी कहते हैं कि हम इनको टुकड़ों में रिकॉर्ड कर ले रहे हैं। एक-एक अंतरा ऐसे-ऐसे करके रिकॉर्ड कर लेते हैं। लता मंगेशकर जी कहती थीं कि पूरा गाना एक ही साथ क्यों नहीं है? लता मंगेशकर जी कभी थकती नहीं थी ।

गाना गाते समय लता मंगेशकर जी हमेशा अपने जीवन में सीखना चाहती थीं। कुछ न कुछ अपने अंदर सुधार लाना चाहती थी। इतनी महान गायिका होने के बाद भी लता मंगेशकर जी ने अपने जीवन में सीखना नहीं छोड़ा। इसी बात ने लता मंगेशकर जी को महान बना दिया।

लता मंगेशकर जी से पूछा गया कि- "आप अपने अगले जन्म में लता बनना पसंद करेंगी?"तो लता जी ने कहा, 'लता बनना पसंद नहीं करूँगी।' जो इंटरव्यू ले रहे थे उन्होंने पूछा, 'ऐसा क्यों?' लता मंगेशकर जी ने जवाब दिया, 'मंगेशकर की परेशानियाँ सिर्फ लता ही जानती है,

आप सभी को मालूम है कि लता मंगेशकर जी ने अपने जीवन में कितना संघर्ष किया, कितनी परेशानियाँ उठाईं, यह लता जी ही जानती थीं।" [4]

लता जी क्रिकेट की बहुत ही बड़ी फैन थी। सुनील गावस्कर साहब, सचिन तेंदुलकर, एम एस धोनी, ये सभी लता मंगेशकर जी के फेवरेट क्रिकेटर थे। एम. एस. धोनी के जब रिटायरमेंट की बात चल रही थी तो लता मंगेशकर जी ने ट्वीट किया। एम. एस. धोनी को लता मंगेशकर जी ने कहा, 'जी नमस्कार, एम. एस. धोनी जी आजकल मैं सुन रही हूँ कि आप रिटायरमेंट लेना चाहते हैं, ऐसा मत कीजिए देश को आपके खेल की ज़रूरत है और मैं भी रिक्वेस्ट कर रही हूँ कि आप अपने मन में रिटायरमेंट का विचार न लाएँ।'

इतनी सहज सरल विनम्र थी लता मंगेशकर जी जिन्होंने हर एक्ट्रेस के लिए गाना गाया। लता मंगेशकर जी का सिंगिंग करियर 80 साल से भी ज़्यादा चला और मैं इस लेख में आप सभी को यह बताना चाहता हूँ कि आप सभी को कोई भी इमोशन आपको एक्सप्रेस करना हो तो लता मंगेशकर जी के गाने सुने उनसे बेहतर कोई और गाने हैं ही नहीं।

लताजी ने लगभग तीस से अधिक भाषाओं में फ़िल्मी और गैर फ़िल्मी गाने गाए हैं। उनकी पहचान विश्व गायिका के रूप में हो चुकी है।

- सहायक आचार्य हिंदी विभाग

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बारा राजस्थान

कभी भी सफलता के लिए यह ज़रूरी नहीं कि
शुरुआत हमेशा अच्छी ही हो!
बस ज़रूरी है तो उस काम के प्रति
खुद का समर्पण।

- लता मंगेशकर

लता मंगेशकर : भारत भाव की महान यात्री

- डॉ साकेत कुमार सहाय

कला के प्रति प्रतिबद्धता एवं समर्पण का उत्कृष्ट उदाहरण है-भारतरत्न लता मंगेशकर का सम्पूर्ण व्यक्तित्व। व्यक्ति अपने जीवन में इन्हीं सब गुणों का तो आकांक्षी रहता है जो लता जी के अनुकरणीय व्यक्तित्व में समाहित रहे। भारतीय जनमानस के रगों में बीते सात दशकों से लता दीदी के गीतों का रस झंकृत हो रहा है। सुख-दुख, हर्ष-विषाद, भक्ति-अध्यात्म, राष्ट्रप्रेम सभी कुछ के रंग, भाव उनके गीतों में बेहद स्पष्टता से झलकते हैं। लता जी सही अर्थों में भारत कोकिला बनकर रही। आज भी पूरा भारत उनके 'ऐ मेरे वतन के लोगों' गीत से जाग उठता है और राष्ट्रीय भक्ति-भाव से परिष्कृत हो उठता है।

28 सितम्बर, 1929 को इन्दौर में जन्मी लता मंगेशकर के गानों में अद्भुत सौंदर्य बोध था। उनके गानों से हम सभी को प्रेम,वात्सल्य के प्रति शानदार सौंदर्य बोध मिलता है। 'ओ सजना बरखा, बहार आई, रस की फुहार लाई' जब भी सुनता हूँ लगता है कि प्रकृति के प्रति इतना सहज प्रेम एक समर्पित कलाकार ही कर सकता है। लता मंगेशकर के लिए संगीत ही जीवन था।

'नाम गुम जाएगा, चेहरा ये बदल जाएगा। मेरी आवाज़ ही पहचान है, गर याद रहे।' यह गीत लोग कभी नहीं भूल सकते और लता जी का व्यक्तित्व भी इस गीत से झलकता है। लता जी की अद्भुत सफलता ने उन्हें फ़िल्म जगत की सबसे सशक्त महिला के रूप में स्थापित किया था। लता जी को सर्वाधिक गीत रिकार्ड करने का भी गौरव प्राप्त है। लता जी की प्रतिभा को पहचान मिली वर्ष 1947 में "आपकी सेवा में" फ़िल्म में गाने का अवसर पाकर। वर्ष1949 में आपके द्वारा गाया गीत "आएगा आने वाला" से आपके प्रशंसकों की संख्या दिनों-दिन बढ़ने लगी। आपने अपने समय के सभी प्रसिद्ध संगीतकारों के साथ काम किया। अनिल बिस्वास, सलिल चौधरी, शंकर जयकिशन, एस. डी. बर्मन, आर. डी. बर्मन, नौशाद, मदनमोहन, सी. रामचंद्र जैसे महान संगीतकारों ने आपकी प्रतिभा का लोहा माना। लता जी ने दो आँखें बारह हाथ, दो बीघा ज़मीन, मदर इंडिया, मुग़ल ए आज़म, महल, बरसात, एक थी लड़की, बड़ी बहन जैसी चर्चित फ़िल्मों में अपनी आवाज़ के जादू से इन फ़िल्मों की लोकप्रियता में चार चाँद लगाए।

बेहद सरल एवं सहज जीवन के प्रति लता जी सदैव आग्रही रही। यदि कोई लता जी के घर जाता तो उसे वे अपने माता-पिता की तस्वीर और घर में बना अपने आराध्य का मन्दिर दिखाती

थी। बस इन्हीं चीज़ों से उन्हें लगाव था। सफलता की राह कभी भी आसान नहीं होती है। लता जी को भी अपना स्थान बनाने में बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। कई संगीतकारों ने तो उन्हें शुरू-शुरू में पतली आवाज़ के कारण काम देने से साफ़ मना कर दिया था। उस समय की प्रसिद्ध पार्श्व गायिका नूरजहाँ के साथ लता जी की तुलना की जाती थी। लेकिन अपनी लगन और प्रतिभा के बल पर आप भारत की स्वर कोकिला के रूप में ख्यात हुई।

स्वर कोकिला लता दीदी ने 30 हज़ार से अधिक गाने 36 भाषाओं में गाकर 80 वर्ष तक देश को अपनी आवाज़ के जादू से मोहित किया। "तुम अगर जाओ, कभी जाओ, कहीं वक़्त से कहना ज़रा वो ठहर जाए वहीं वो घड़ी वहीं रहे, ना जाए ना ना जिया लागे ना" इस प्रकार के भावपूर्ण गीत से लता जी ने न जाने कितने संगीत प्रेमियों को जागृत किया। न जाने कितने लोगों को प्रेरित व प्रोत्साहित किया। उन्होंने संगीत की ताकत को जन-जन तक पहुँचाया।

कुमार गंधर्व के शब्दों में ''लता जी की विशेषता थी स्वर की निर्मलता। लता जी की आवाज़ मानवीय संबंधों की रूपरेखा देती है। संगीत के प्रति उनकी दीर्घ साधना एवं समर्पण का ही परिणाम रहा कि आज उनका नाम किसी भी संगीत प्रेमी के लिए नया, अनसुना या अनजाना नहीं है। वे संगीत जगत के क्षितिज के उस सितारे के समान हैं जो अनंत आकाश की बुलंदियों पर सदा चमकती रहेंगी। लता दीदी का नाम संगीत जगत में हमेशा ही बड़े आदर और सम्मान से लिया जाएगा। आज भले ही लता दीदी हमारे बीच नहीं हैं परन्तु अपनी वाणी के माध्यम से वे सदा हमारे हृदय में अमर हैं।

सफलता की राह कभी भी आसान नहीं होती है। शायद ही कोई ऐसा होगा, जो उनकी आवाज़ के जादू से अछूता रहा होगा। अपनी समर्थ आवाज़ एवं सशक्त स्वर साधना के बल पर लताजी सीधे लोगों के दिलों में प्रवेश कर जाती थीं। कभी न भूलने के लिए। लता दीदी को 'संपूर्ण पार्श्व गायिका इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने अपने दौर की जितनी भी प्रमुख अभिनेत्रियों के लिए गाया, अपनी ओर से उस अभिनीत चरित्र को भी आवाज़ की संपूर्णता के साथ समाहित किया। यही कारण है कि सुधी श्रोता उल्लेख गीत से पहले ही ताड़ जाते थे कि यह गाना अमुक पर फिल्माया जाएगा। उनकी इस विशेषता को उनके द्वारा गाए गानों से बखूबी समझा जा सकता है। लताजी की आवाज़ में विशिष्टता रही, वे जीवनपर्यंत गरिमामय बनी रही, उन्होंने अपने गाए गीतों से इसे खूब चित्रित किया।
अभिनेत्री मीना कुमारी के व्यक्तित्व में दर्द, उदासीनता, गरिमा और विक्षिप्तता का समन्वय था। लता जी ने मीना कुमारी के इस जटिल व्यक्तित्व को 'दिल अपना और प्रीत पराई' फ़िल्म

के शीर्षक गीत में तो चित्रित किया ही, उसी फ़िल्म के सदाबहार गीत 'अजीब दास्तां है ये, कहाँ शुरू, कहाँ खत्म' में तो उन्होंने जैसे अभिनेत्री मीना कुमारी को ही साकार कर दिया। मीना कुमारी के बारे में यह भी कहा जाता था कि प्रेम के प्रति उनका समर्पण अलौकिक है। लताजी मीना कुमारी की इस अलौकिकता को 'हम तेरे प्यार में सारा आलम खो बैठे, तुम कहते हो कि ऐसे प्यार को भूल जाओ' को लौकिक रूप में प्रस्तुत करती हैं।

अभिनेत्री नूतन अपने समय की महान नायिका थीं। कहा जाता है नूतनजी की मुस्कान में चुम्बकीय आकर्षण था और समग्र व्यक्तित्व में दर्द भरी सादगी। लताजी ने अपने गीतों से उनके सादगी भरे दर्द को 'छोड़ दे सारी दुनिया किसी के लिए, ये मुनासिब नहीं आदमी के लिए (सरस्वतीचंद्र) और 'तेरा जाना... दिल के अरमानों का लुट जाना (अनाड़ी) में बताया ही, साथ ही उनकी मुस्कान भी 'तेरे घर के सामने के 'ये तन्हाई हाय रे हाय जाने फिर आए ना आए, थाम लो बाहें में बड़े दिलचस्प तरीके से दर्शाई। दरअसल इस गीत में एक पंक्ति आती है- 'आज समय आया, मैंने तुझे पाया, मैं लता हूँ तेरे प्यार की। अब लता जी जैसी अंतर्मुखी गायिका को गीत में खुद अपना नाम लेना पड़े, तो वे मुस्कुराएँगी कि नहीं? उनकी यही सहज मुस्कान नूतन के चेहरे पर हूबहू चस्पा हो ही जाती है।

साठ के दशक की प्रमुख नायिका सायरा बानो के लिए उनके द्वारा गाए गए कुछ गीत जैसे 'काश्मीर की कली हूँ मैं गीत से लेकर 'तुम्हें और क्या दूँ मैं दिल के सिवाए, तुमको हमारी उमर लग जाए (आई मिलन की बेला), 'दिल विल प्यार व्यार मैं क्या जानूँ रे (शागिर्द), 'उनसे मिली नज़र के मेरे होश उड़ गए (झुक गया आसमान) और 'भाई बत्तुर भाई बत्तुर अब जाएँगे कितनी दूर (पड़ोसन) तक के माध्यम से दर्शकों के सामने साक्षात् उपस्थित कर दिया।

अभिनेत्री रेखा पर फिल्माए उनके गानों को याद करें तो लता जी ने 'घर फ़िल्म में रेखा की सुंदरता, तो लता है। चंचलता और गंभीरता जैसे बहुविध किरदारों को 'तेरे बिना जिया जाए ना और 'आजकल पाँव जमीं पर नहीं पड़ते मेरे जैसे गीतों में उसी अंदाज में प्रस्तुत किया। यही नहीं, लताजी ने नर्गिस की अल्हड़ता 'पंछी बनूँ, उड़ती फिरूँ, मस्त गगन में (चोरी चोरी), हेमा मालिनी की शोखी 'ए बी सी डी छोड़ो (राजा जानी), श्रीदेवी का जोश 'मैं तेरी दुश्मन, दुश्मन तू मेरा (नगीना), डिम्पल की मासूमियत 'अक्सर कोई लड़की इस हाल में (बॉबी) दर्शाने में कहीं चूक नहीं की।
प्रसंगवश यह बताना भी गैर ज़रूरी न होगा कि सत्तर के दशक की प्रखर अभिनेत्री जया बच्चन को जब 'अभिमान' में एक गायिका का रोल मिला, तो शूटिंग से पहले वे लताजी की रिकॉर्डिंग

देखने गई और वहाँ उन्होंने यह नोट किया कि लता जी गाते समय कैसी दिखती हैं, क्या पहनती हैं और उनके हाव-भाव कैसे हैं। उसके बाद जया बच्चन ने लता जी की ही तरह सफ़ेद साड़ी पहनी, लता जी की ही तरह लंबी चोटी बनाई और एक गायिका के रूप में दर्शकों के समक्ष उतनी ही गरिमा से उपस्थित हुई। फ़िल्म के 'पिया बिना, 'अब तो है तुमसे और 'तेरे मेरे मिलन की ये रैना गीतों में यह तय कर पाना मुश्किल हो जाता है कि लता जी जया के लिए गा रही हैं या जया बच्चन लता जी के लिए अभिनय कर रही हैं।

अपनी गायिकी से हिंदी सिनेमा को विश्व पटल पर जीवंत करने वाली लता मंगेशकर ने अपनी कला–साधना से हिंदी गीतों को नया आयाम दिया। महान शास्त्रीय गायक पंडित कुमार गंधर्व लता जी के गायन पर कहते हैं। 'बरसों पहले की बात है। मैं बीमार था। उस बीमारी में मैंने सहज ही रेडियो लगाया और अचानक एक अद्वितीय स्वर मेरे कानों में पड़ा। स्वर सुनते ही मैंने अनुभव किया कि यह स्वर कुछ विशेष है, रोज का नहीं। यह स्वर सीधे मेरे कलेजे से जा भिड़ा। मैं तो हैरान हो गया। मुझे समझ में नहीं आ रहा था कि यह स्वर किसका है। गाना समाप्त होते ही गायिका का नाम घोषित किया–लता मंगेशकर। नाम सुनते ही मैं चकित हो गया। मन-ही-मन एक संगति पाने का अनुभव भी हुआ। सुप्रसिद्ध गायक दीनानाथ मंगेशकर की अजब गायकी एक दूसरा स्वरूप लिए उन्हीं की बेटी की कोमल आवाज़ में सुनने का अनुभव हुआ।' वे आगे लिखते हैं - 'कोकिला का निरंतर स्वर कानों में पड़ने लगे तो कोई भी सुनने वाला उसका अनुकरण करने का प्रयत्न करेग। यह स्वाभाविक ही है।'

लता दीदी ने भरपूर जीवन जिया। 93 वर्ष का वैशिष्ट्य एवं विविधतापूर्ण जीवन जीने वाली लता जी को लगभग पाँच पीढ़ियों ने मंत्रमुग्ध होकर सुना है। जब उनकी गुड़ियों के साथ खेलने की उम्र थी, तभी उनके पिता ने अपने अंतिम समय में घर की बागडोर उनके हाथों में थमाई थी। तेरह वर्ष की अल्पायु में ही लता दीदी के कंधे पर चार छोटे भाई-बहनों के लालन-पालन की जिम्मेवारी थी। लताजी ने अपना समस्त जीवन इन चारों के कल्याण में समर्पित कर दिया।

लता दीदी ने कभी अपने एक साक्षात्कार में साक्षात्कारकर्ता के यह पूछे जाने पर कि 'क्या वे फिर से लता मंगेशकर के रूप में दुबारा जन्म लेना चाहेंगी?' तो लता दीदी ने उत्तर में कहा था कि वे इस धरती पर दुबारा नहीं आना चाहेंगी।' वास्तव में लता मंगेशकर जैसी शख्सियत बार-बार जन्म नहीं लेती। संगीत प्रेमी, आपको यूँ ही न भूला ना पाएँगे, आप अपने अनुकरणीय कृतित्व से युगों तक जीवंत रहेंगी, आपका हर गीत, आपकी मधुर आवाज़ हम सभी

को आपको याद करने पर मजबूर करेगी। कहीं पढ़ा था, 'भूतपूर्व क्रिकेट कप्तान दिलीप वेंगसरकर कहते हैं, मेरी जिंदगी में अवसाद के कई क्षण आए हैं और लता जी के रुहानी स्वर ने ही मुझे उनसे उबारा है।'

लता मंगेशकर की आवाज़ में गाए हुए गाने फ़िल्म की जान हुआ करती थी। उन्होंने सबसे ज़्यादा हिंदी फिल्मों के गानों में ही अपनी आवाज़ दी थी। लता मंगेशकर का आखिरी गाना 'फ़िल्म रंग दे बसंती' का 'लुका छिपी' था। उनकी आखिरी हिंदी एल्बम की बात करें तो वह फ़िल्म 'वीर-जारा' थी। इसमें लता मंगेशकर ने 'तेरे लिए हम हैं जिए', 'ऐसा देस है मेरा', 'हम तो भई जैसे हैं', 'दो पल रुका ख्वाबों का कारवां' गानों को अपनी सुरीली आवाज़ से सजाया था।

भारत कोकिला लता दीदी अपने कार्य के साथ ही राष्ट्र, समाज, संस्कृति के प्रति सदैव समर्पित रही। कहते हैं लता जी के कंठ में साक्षात् वाग्देवी निवास करती थीं। जिसे कई पीढ़ियों ने अनुभूत किया। लता जी कहती थी 'उन्हें अपनी कला से ज़्यादा अपनी मेहनत पर भरोसा है।' लता जी की यही जीवन शैली उन्हें प्रेरक बनाती है। आज वे नहीं है परंतु उनकी मधुर एवं पवित्र आवाज़ हम सभी के बीच जीवंत है। उन्हीं की आवाज़ में 'नाम गुम जाएगा,चेहरा ये बदल जाएगा, मेरी आवाज़ ही पहचान है, गर याद रहे।' यह गीत सही मायने में भारत की 'स्वर कोकिला' लता मंगेशकर पर सही बैठता है।

प्रसिद्ध ग़ज़ल गायक जगजीत सिंह ने कहा था कि "बीसवीं सदी की तीन बातें याद रखने लायक हैं, एक चांद पर आदमी की जीत, दूसरा बर्लिन की दीवार का टूटना और तीसरा लता का जन्म।" यह सच है भारतीय संगीत उद्योग को लता मंगेशकर ने अपना अतुलनीय योगदान दिया, जिसे कभी भुलाया नहीं जा सकता है।

पटना

---

1. **संदर्भ- लता जी पर आधारित विविध अखबार**
2. **संदर्भ स्रोत : दैनिक समाचार पत्र, इंटरनेट व अन्य पत्र – पत्रिकाएँ**
   (बिहार) – 8000001

लता मंगेशकर के गीतों में विरह की भावना :-

- डॉ भावना शर्मा

लता जी का जन्म 28 सितम्बर 1929 इंदौर मध्यप्रदेश में हुआ । उनके पिता का नाम दीनानाथ मंगेशकर तथा माता का नाम शेवंती मंगेशकर था। 92 वर्ष की आयु में 6 फरवरी 2022 को मुंबई में उनका निधन हो गया । लता मंगेशकर के पिता एक क्लासिक गायक थे। लता मंगेशकर को गायन की कला विरासत में अपने पिता से ही मिली थी, वे उन्हीं से सीखा करती थी।

लता जी ने मात्र 5 साल की उम्र में पहला काम अपने पिता के एक नाटक में किया था। इसके बाद वे ट्रेनिंग लेती रही और 13 साल की उम्र में 1942 में एक मराठी फ़िल्म के लिए गाना रिकॉर्ड किया। फ़िल्म रिलीज़ हुई लेकिन किसी कारणवश फ़िल्म से गाना हटा दिया गया, इस बात से लता जी बहुत आहत हुई। उसी साल लता जी के पिता के दिल का दौरा पड़ने से मौत हो गई। लता जी अपने घर में सब भाई बहनों में बड़ी थी, तो सारी ज़िम्मेदारी उनके कंधों पर आ गई। विनायक दामोदर एक फ़िल्म कंपनी के मालिक थे, जो दीनानाथ जी के अच्छे मित्र थे, उनके जाने के बाद उन्होंने लता जी के परिवार को संभाला ।

लता मंगेशकर जी का पहला गाना फ़िल्म का नाम गाने के बोल गजभाऊ (मराठी फ़िल्म) माता एक सपूत की दुनिया बदल दे तू (हिंदी गाना) 1943 । 1945 में लता जी मुंबई आ गई और अमानत अली खान से ट्रेनिंग लेने लगी । लता जी ने 1947 में हिंदी फ़िल्म 'आप की सेवा में' के लिए भी एक गाना गाया, लेकिन किसी ने उनको नोटिस नहीं किया । उस समय गायिका नूर जहान, शमशाद बेगम, ज़ोहाभई अम्बलेवाली का दबदबा था, बस यही गायिका पूर्ण रूप से सक्रीय थी, उनकी आवाज़ भारी व अलग थी, उनके सामने लता जी की आवाज़ काफी पतली और दबी हुई लगती थी । 1949 में लता जी ने लगातार 4 हिट फिल्मों में गाने गाए और सब में उनको सराहा गया । बरसात, दुलारी, अंदाज व महल फ़िल्में हिट थी, इसमें से महल फ़िल्म का गाना 'आएगा आनेवाला' सुपर हिट हुआ और लता जी ने अपने पैर हिंदी सिनेमा में जमा लिए।

लता मंगेशकर को मिले प्रमुख अवार्ड (Lata Mangeshkar Singing Awards) -

- सिविलियन अवार्ड 1969 में लता जी को पहली बार देश की सरकार द्वारा देश का 3rd नंबर के अवार्ड 'पद्म भूषण' से सम्मानित किया गया ।

- 1989 में लता जी को हिंदी सिनेमा के सर्वोच्च अवार्ड दादा साहेब फाल्के अवार्ड से सम्मानित किया गया।
- 2001 में लता जी को देश का सबसे बड़ा सम्मान 'भारत रत्न' ने सम्मानित किया गया।
- 2008 में लता जी को स्वतंत्रता की 60वीं वर्षगांठ पर वॉन टाइम अवार्ड फोर लाइफटाइम अचिवेमेंट्स के लिए देश की सरकार द्वारा सम्मानित किया गया।

नेशनल फ़िल्म अवार्ड :

- परिचय (1972) – बेस्ट प्लेबैक सिंगर
- कोरा कागज (1974) – बेस्ट प्लेबैक सिंगर
- लेकिन (1990) – बेस्ट प्लेबैक सिंगर

फ़िल्म फेयर अवार्ड -फ़िल्म फेयर अवार्ड में पहले प्लेबैक सिंगर के लिए अवार्ड नहीं होता था, लता जी ने इसका विरोध किया और 1958 से यह अवार्ड जोड़ा गया। इसके बाद लता जी को 6 बार इस अवार्ड से सम्मानित किया गया।

इसके अलावा लता जी को और भी बहुत से अनगिनत अवार्ड मिले। महाराष्ट्र सरकार के द्वारा उन्हें महाराष्ट्र भूषण व महाराष्ट्र रत्न से भी सम्मानित किया गया। लता जी को इसके अलावा 250 ट्रोफी व 150 गोल्ड मैडल प्राप्त है। लता जी ने लगभग सभी बड़े निर्माता निर्देशक के साथ काम किया है।

पहले वे नूर जहान की तरह गाने की कोशिश करती थी, लेकिन समय के साथ लता जी ने अपनी आवाज़ में पहचान पा ली। लता जी ने नौशाद अली, अनिल विश्वाश, मदद मोहन, एसडी बर्मन, शंकर जयकिशन जैसे महान म्यूज़िक डायरेक्टर के साथ काम किया है। लता जी के आने के बाद फ़िल्म इंडस्ट्री का मेकओवर हो गया था, फिल्मों में गानों को नयापन मिला। 50's में लता जी की छोटी बहन आशा जी भी फ़िल्मी दुनिया में आ गई, दोनों बहनों की आवाज़ में बहुत अन्तर था, लेकिन एक ही जगह काम करने के कारण दोनों के बीच तुलना बहुत की जाती थी। लेकिन काम को दोनों बहनों ने अपने रिश्ते के बीच नहीं आने दिया।

लता जी ने प्रसिद्ध गायक मोहम्मद रफ़ी, मुकेश व किशोर जी के साथ ढेरों गाने गाए। लता जी का गायकी को लेकर लालसा देखते ही बनती थी। मोहम्मद रफ़ी व एसडी बर्मन के साथ कुछ अनबन के चलते लता जी ने इनके साथ काम करने को मना कर दिया। रफ़ी के साथ उनके

मनमुटाव को संगीतकार जयकिशन ने ठीक किया था, लेकिन बर्मन के साथ उनके रिश्ते नहीं ठीक हुए और 1972 के बाद से दोनों ने कभी साथ काम नहीं किया।

लता मंगेशकर के 1960 की प्रसिद्ध फ़िल्म के गाने फ़िल्मों के नाम के साथ गाने के बोल इस प्रकार हैं -

1. मुग़ल ए आज़म (1960) प्यार किया तो डरना क्या

2. दिल अपना प्रीत पराई (1960) अजीब दास्ताँ है ये

3. गाइड(1965) आज फिर जीने की तम्मना है, गाता रहे मेरा दिल (किशोर कुमार जी के साथ)

4. ज्वेल थीफ(1967) होंठों पे ऐसी बात

इन चारों फ़िल्मों के गाने आज भी लोग याद करते हैं, और सुने जाते हैं। इसके अलावा भूत बंगला (1965), पति पत्नी (1966), बहारों के सपने (1968), अभिलाषा (1969) जैसी फिल्मों के गाने भी फेमस हुए थे। 1963 में लता जी ने उस समय प्रधान मंत्री रहे नेहरु जी के सामने देश का सबसे चहिता गाना 'ये मेरे वतन के लोगों' गाया। इसे सुन नेहरु जी के आंसू छलक आये थे। लता मंगेशकर के 1970 की फेमस फ़िल्मों के गाने -

फ़िल्मों के नाम के साथ गाने के बोल इस प्रकार हैं -

पाकीज़ा (1972) इन्हीं लोगों ने, चलते चलते

प्रेम पुजारी (1970) रंगीला रे

शर्मीली (1971) खिलते है गुल यहाँ

अभिमान (1973) पिया बिना, तेरी बिंदिया रे

परिचय(1973) बीती ना बिताई

नीलू कादली - चेकाडली

कोरा कागज़ - रूठे रूठे पिया

सत्यम शिवम् सुंदरम

रुदाली दिल हुम हुम करे

इस समय लता जी को 2 नेशनल अवार्ड मिले। इसके साथ ही लता जी देश विदेश में लाइव कॉन्सर्ट भी करती थी।

लता मंगेशकर के 1980 के गाने इन फिल्मों से हैं -

सिलसिला

चांदनी

राम लखन

मैंने प्यार किया

एक दूजे के लिए

हीरो

लता मंगेशकर के 1990 के लोकप्रिय गाने इन फिल्मों से हैं –

लेकिन

दिल वाले दुलहनिया ले जाएँगे

दिल तो पागल है

हम आपके हैं कौन

मोहब्बतें

वीर ज़ारा

लम्हे

डर

लता मंगेशकर जी इस समय अपने स्वास्थ के चलते ज़्यादा गाने नहीं गा पाती हैं , 2000 के बाद से उन्होंने गिने चुने गाने ही गाए, इसमें लगान फ़िल्म का 'ओ पालन हारे' रंग दे बसंती 'लुका छिपी' व बेवफा का 'कैसे पिया'। लता जी एक लीजेंड है, जिस पर हर भारतवासी गर्व करता है। लता जी क्रिकेट की बहुत बड़ी फैन है, उनके पसंदीदा खिलाड़ी सचिन है। सचिन

उन्हें अपनी माँ की तरह मानते हैं। लता जी के और गाने सुनने के लिए हम सब बेक़रार रहते हैं।

लता जी आजीवन अविवाहित रही। उनके कई गीतों में विरह की भावना दिखाई देती है जैसे - " हुई ये हमसे नादानी तेरी महफ़िल में आ बैठे ज़मीं की ख़ाक़ होकर आसमां से दिल लगा बैठे हुआ खून-ए-तमन्ना इसका शिक़वा क्या करे तुमसेना कुछ सोचा ना कुछ समझा जिगर पे तीर खा बैठे ख़बर क्या थी गुलिस्ताँ-ए-मुहोब्बत में भी ख़तरे हैं जहाँ गिरती है बिजली हम उसी डाली पे जा बैठे ना क्यों अंजाम-ए-उल्फ़त देखकर आँसू निकल आएं जहां को लूटने वाले खुद अपना घर लुटा बैठे।"

प्रेम का एक अनन्य पार्श्व है, विरह प्रेम के मोती की आब , विरह की अनुभूति ही बढ़ाती है। यह गीत विरहावस्था की व्याख्या बड़ी मुलामियतसे करता है। व्यापक दृष्टिकोण से प्रस्तुत ग़ज़ल को देखें तो लगता है कि गीतकार ने नायिका के शिकवे को शब्द दिए हैं। यदा-कदा शिकायत में पश्चाताप भी शामिल होता है लेकिन इस ग़जल के शिकायत में पछतावे के साथ त्याग के भी भाव गुम्फित हैं। लता मंगेशकर ने अपने सुरों की माया से ग़ज़ल में निहित भावों को बहुत प्रभावशाली बना दिया है। यह गज़ल संगीतकार सरदार मलिक और अभिनेत्री चित्रा की लता श्रुति-संवाद में नुमाइंदगी करती है। लता के गीतों से फ़िल्मों की पहचान होती रही है, इस बात की जीती- जागती मिसाल यह फ़िल्म (भी) है। इस फ़िल्म में इसी आला दर्ज़े का एक और लता-गीत संगीतकार सरदार मलिक ने स्वरबद्ध किया हुआ है। वह गीत था चलता रहे ये कारवाँ। यह जानते हुए भी कि ये फिल्में बड़ी ही मामूली हैं और सफलता अर्जित करने की क्षमता नहीं रखती हैं, फिर भी ये महान लोग गीत, संगीत या अन्य किसी कलात्मक पक्ष के साथ कोई समझौता नहीं करते थे।

इस अकादमी में भारतीय संगीत, नाटक से जुड़े हुए भी अनेक लोग आते थे। सुमित्रानंदन पंत जैसे हिन्दी छायावादी कविता के प्रणेता भी उनमें शामिल थे। संगीतकार जयदेव ने भी कुछ वर्ष इसी अकादमी में गुज़ारे थे। सरदार मलिक और गुरु दत्त बड़े अच्छे मित्र बने। अलमोड़ा में रहते हुए सरदार मलिक ने भारतीय एवं पश्चिमी नृत्य की विधिवत शिक्षा ग्रहण करते हुए, उसकी बारीकियाँ भी सीखीं। सरदार मलिक, मैहर घराने के जनक महर्षि बाबा अलाउद्दीन खान को अपना गुरु समझते थे, हालांकि उन्ह से कभी शास्त्रीय संगीत की विधिवत शिक्षा नहीं ली। खान साहब के सुपुत्र उस्ताद अली अकबर खान के साथ उनके बड़े न सम्बन्ध रहे। वे जीवन भर खुद को खान साहब का एकलव्य समझते रहे और उम्दा संगीत देते हुए अपने गुरु का सम्मान बढ़ाते हैं। बड़े स्वाभिमानी स्वभाव के थे, नतीजा यह हुआ कि उन्हें काफ़ी कम फ़िल्में मिलीं और वह

भी दूसरे दर्ज़े की। लेकिन सरदार मलिक ने अपने संगीत का वही आला दर्ज़ा रखते हुए कई शानदार गीत रचे जिन्हें आज भी शिद्दत से याद किया और सुना जाता है। लता के साथ उनके सिर्फ़ 12 ही गीत रहे लेकिन इन सबका मयार शानदार हैं।

सरदार मलिक ने इस ग़ज़ल को सफ़ेद 4 की ऊँची स्केल में रचते हुए लता के सुर अधिकतर मध्य सप्तक और कुछ खहाँ में तो मंद्र सप्तक में भी रचे हैं। प्रत्येक संगीतकार ने, लता मंगेशकर के सुरों पर सिचुएशन और अभिनेत्रिओं के मुताबिक गीत रखे जिसकी वजह से लता के गीतों में विलक्षण विविधता महसूस होती है। ग़ज़ल में राग मांज खमाज का प्रभाव दिखाई देता है लेकिन कई जगह सुर मिश्र भी हैं।ताल कहरवा में इसे निबद्ध करते हुए ग़ज़ल के महत्वपूर्ण शब्दों कोतबले की सम पर रचा है ताकि भावों का गहरा प्रभाव निर्मित हो सके।

मुखड़े (स्थाई) को लता ने बड़ी नज़ाकत से मंद्र सप्तक से उठाते हुए, हुई पर भावों का एक बेहतरीन ठहराव उत्पन्न करते हुए, ग़ज़ल का ग़मगीन समाँ बांधा है। हमसे पर ली हुई हरकत और नादानी पर ली हुई तान जो मध्य सप्तक से मंद्र सप्तक की ओर जाती है, से नायिका की मानसिक अवस्था परिलक्षित होती है। 'आ बैठे' लफ़्ज़ों को विभिन्न पद्धतियों से गाते हुए, अपने सुरों की बेहतरीन नक्काशी लता ने प्रस्तुत की है। 'आ' पर एक मींड गाई है और 'बैठे' पर पहले हरकत और तत्पश्चात मींड गाई है। मुख से अंत में 'आ बैठे' को मुख्तलिफ़ अंदाज में गाते हुए लता ने कमाल कर दिया है। इस ग़ज़ल के मुखड़े में दो पंक्तियाँ हैं जिनकी स्वर रचना समान है इसलिए दूसरी पंक्ति के बोलों पर भी लता के सुर श्रोताओं पर असर करते हैं।

ग़ज़ल में तीन अंतरे हैं, तीनों के मूल भाव समान हैं और गीतकार शकील बदायूँनी ने बोलों में आहिस्ता-आहिस्ता भावों की तीव्रता बढ़ाई है। पहले दोनों अंतरों की स्वर रचना काफी हद तक समान है, हालांकि लफजों के छंद को देखकर सरदार मलिक ने थोड़ा बहुत बदलाव किया है। पहले अंतरे में हुआ को एक ही स्वर (गंधार) पर रचा गया है तो खून-ए-तमन्ना की भी एक ही (पंचम) पर रचते हुए भावों का खूबसूरत ठहराव उत्पन्न किया गया है। तमन्ना पर लता द्वारा ली हुई मींड लाजवाब है। शिकवा को लता ने दो विभिन्न अंदाज़ में गाते हुए नायिका की शिकायत श्रोताओं के दिल में दर्ज़ करा दी है। पहले आवर्तन में उन्होंने हरकत ली है तो दूसरे में खटके लगाए हैं। वैसे शिकवा क्या करें तुमसे इस संपूर्ण खंड को ही लता ने 2 भिन्न प्रारूप में गाया है। कहने की ज़रूरत नहीं है कि ये दोनों बेहतरीन हैं।

तीसरे अंतरे में सरदार मलिक, भावों की तीव्रता को देखते हुए अंतरे को लगभग मध्य सप्तक के ऊँचे सुरों से उठाते हुए, लता के सुर को तार सप्तक में ले गए हैं। यहाँ लता का प्रत्येक सुर श्रोताओं के दिलों को चीरता हुआ चला जाता है। हर एक लग्न की अदायगी जज़्बात से भरपूर

है। तार सप्तक में एक बेमिसाल तान लेते हुए लता के सुर जिस अंदाज़ में अंजाम लफ़ज की अदायगी करते हैं, वह करिश्मा सिर्फ़ लता ही करती आ रहीं हैं। यह सब करते हुए लता के सुर नायिका के वही भाव अभिव्यक्त करते हैं। उल्फ़त पर लता के सुरों ने तार सप्तक के षड्ज पर रहते हुए भावों के जिस ठहराव का निर्माण किया है, और देख पर हरकत ली है उसे श्रोता मूल नहीं पाता है। यह ग़ज़ब का कारनामा है कि लता ने आए और हाए पर दो बेमिसाल स्वर-आंदोलन प्रस्तुत किए हैं। आए पर पंचम का और हाए पर गंधार का आंदोलन है। अंत में फिर एक बार आ बैठे पर ठहराव उत्पन्न करते हुए गायन है। इस दौरान लता के सुर मध्य सप्तक के षढज पर रुके हुए सुनाई देते हैं और इसी मोड़ पर यह ग़ज़ल खत्म होती है। लता मंगेशकर ने शब्दों की सुरीली एवं भावपूर्ण अदायगी से इस ग़ज़ल को यादगार बना दिया है। चूँकि भावों में शिकायत और त्याग दोनों सम्मिलित हैं, लता ने अपने वॉइस टेक्सचर में कभी पैनापन लाया है तो कभी नज़ाकत। 1950 के दशक में अभिनेत्री चित्रा पर लता के फ़िल्माए गए अनेक गीतों की प्रिंट्स आज उपलब्ध नहीं हैं लेकिन उनके 1960 के दशक के कुछ लता- प्रिंट्स उपलब्ध हैं। यह गीत बेशक, उनके जीवन का सर्वोत्कृष्ट गीत होगा, लिहाज़ा इसे शामिल किया गया है। " बेदर्द ज़माने से शिक़वा ना शिकायत है हम दर्द के मारों की क़िस्मत है, ये क़िस्मत है भीगी हुई पलकों में छोटी सी कहानी है एक दर्द की दुनिया है, कहने को जवानी है साजन से जुदा हो कर, ये रुठी हुई उल्फ़त है हम दर्द के मारों की क़िस्मत है, ये क़िस्मत है आँखें भी तरसती हैं, अरमान भी मचलते हैं ये दिल भी धड़कता है, आँसू भी निकलते हैं मरना भी नहीं बस में, मरने की सी हालत है हम दर्द के मारों की क़िस्मत है, ये क़िस्मत है ।" [2] टूटे हुए दिल की आह! फ़िल्म में दिल तो टूटा हुआ होगा नायिका का और आह निकली है लता मंगेशकर के सुरों से। यही लता की विशेषता रही है, जी-जान लगाकर वे अपेक्षित भावों को उत्पन्न करती रही है। मेरे मुताबिक लता के सर्वोत्कृष्ट 20-25 दर्द भरे गीतों में इस गीत का आसानी से शुमार किया जा सकता है।

चूँकि इस फ़िल्म की प्रिंट उपलब्ध नहीं है, फिर यही संभ्रम है कि यह गीत किस पर चित्रित हुआ होगा। लता मंगेशकर के निग़ार सुल्ताना पर फ़िल्माए गए अन्य गीतों की तुलना से जाए तो इस गीत में लता का वॉइस टेक्सचर उन गीतों से पूर्णतया मेल खाता हुआ नज़र आता है। लिहाज़ा, इसे निग़ार सुल्ताना पर फ़िल्माया गया होगा ऐसा माना जा सकता है।

इन ग़मगीन बोलों के लिए संगीतकार दत्ता कोरगांवकर ने अत्यंत उपयुक्त राग भैरवी के सुरों को आधार बनाया है, हालांकि स्वर मिश्र हैं। दत्ता कोरगांवकर गुज़रे दौर के एक महान संगीतकार थे जिन्होंने कई कालजयी गीतो की रचना की है। मास्टर विनायक की फ़िल्म 'बड़ी माँ' (1945) में नूरजहाँ के गाए हुए 3 गीतों से उन्होंने लोकप्रियता की बुलंदियों को छुआ। के. दत्ता के बारे

में ऐसा भी कहा जाता रहा है कि उन्हें ज्योतिष विद्या में बड़ी रुचि थी और वे अपना काफ़ी समय इसे दिया करते थे। शायद मास्टर कृष्णराव के बाद, के. दत्ता लता मंगेशकर के जीवन-काल के दूसरे सबसे वरिष्ठ संगीतकार रहें होंगे। फ़िल्म 'बड़ी माँ' में लता मंगेशकर ने अभिनय भी किया था और के. दत्ता ने लता से एक एकल और एक युगल गीत गवाया था। चूँकि वह नूरजहाँ का दौर था, लता मंगेशकर के इन गीतों को लोगों ने ज़्यादा तरजीह नहीं दी। सन 1949 आने के लिए लता मंगेशकर को बस चार और साल इंतज़ार करना था, जब वे संगीत के क्षितिज पर छा जाने वाली थीं। उनके जीवन में संघर्ष अभी थमे नहीं थे, बल्कि चरम पर थे। इसी फ़िल्म में एक और बेहतरीन लता-गीत साजन से पहली बार भी है जो एक शृंगार गीत है। लता मंगेशकर ने संगीतकार के. दत्ता के संगीत निर्देशन में केवल 15 गीत गाए और प्रस्तुत पुस्तक में इस जोड़ी का यह दूसरा गीत है। फ़िल्म बड़ी माँ के पश्चात् सन 1948 में सुरेंद्र और मुनब्बर सुल्ताना अभिनीत फ़िल्म मेरी कहानी में के. दत्ता ने लता से 2 एकल गीत गाए थे। निसार सुल्ताना की फ़िल्म दामन (1951) में उन्होंने लता मंगेशकर और आशा भोंसले से युगल गीत गवाया था ये रुकी हवाएं। उसी तरह लता-रफी का एक युगल गीत याद आने लगी दिल दुखाने लगी भी बड़ा सुंदर है, लता जब चाँदनी रात अब सता लगी पंक्ति गाती है तो दर्शक आंदोलित हो उठते हैं और इस पंक्ति के लता के सुरों में बसने वाले राम से प्यार करने लगते है। लता के चकोरी का चंदा से प्यार इस एकल गीत में तो लता की आवाज़ शहद को भी मिठास में पीछे छोड़ देती है। तिरूलीला, गाए लता, गाए लता यह एक लाजवाब मस्ती भरा गीत है। सन 1956 में प्रदर्शित फ़िल्म हरिहर-भक्ति लता के. दत्ता की जोड़ी की आखिरी फ़िल्म रही जिसमें लता के गीत थे चंदा का रंग लिए (तलत युगल गीत) और आँख में आँसू जिया में।

प्रस्तुत गीत के प्रमुख भाव हैं नायिका की दर्द भरी आह! लता मंगेशकर ने खूबसूरत बोलों वाले इस गीत को लफ्जों की बेजोड़ अदायगी से इंसाफ दिया है। शायद गीतकार पंडित फाणी को भी इस बात का ज़रूर अहसास रहा होगा। वे लता मंगेशकर ही क्या जो किसी को मायूस करें? चाहे वह गीतकार, संगीतकार, अभिनेत्री हो या फिर सुनने वाले। गीतकार पं.फाणी के विषय में मेरे पास कोई भी अधिकारिक जानकारी मौजूद नहीं है। बस इतना पता है कि उन्होंने के दत्ता के लिए कई गीत लिखे हैं। नूतन की पहली फ़िल्म 'हमारी बेटी' (1950) का 'दिल का मिलना कितना' यह लता-गीत भी उन्हीं का लिखा हुआ है जिसे स्नेहल भाटकर ने स्वरबद्ध किया है।

मुखड़े में पूर्वांग और उत्तरांग का एक बेहतरीन तालमेल संगीतकार के. दत्ता ने बैठाया है। पहली पंक्ति मध्य सप्तक में रची दूसरी पंक्ति के हम दर्द के मारों की, किस्मत इस खंड में लता के सुर तार सप्तक में जाकर नायिका के दर्द को पुरजोर तरी करते हैं। किस्मत है ये किस्मत है खंड में लता के सुर फिर मध्य सप्तक में आकर विचरण करते हताशा बयाँ करते हैं। मुखड़े के पहले

लबज बेदर्द पर ही बेहद खूबसूरती से एक लाजवाब मींड लेते हुए लता ने इस गीत के ग़मगीन भावों का मुज़ाहिरा किया है। ज़माने से पर एक खटका लगाते हुए अपने सुरों को नीचे लाकर लता श्रोताओं से वाह-वाही बटोर लेती है। शिकायत हैं पर उन्होंने एक बेजोड़ हरकत लेते हुए नायिका की भावनाओं को लाजवाब तरीके से पेश किया है। हम दर्द के मारों की पर तो लता के सुर तार सप्तक पर ही टिके हुए दिखाई देते हैं जिससे एहसासों का एक लाजवाब ठहराव उत्पन्न हुआ है। मुखड़े के खंड में नायिका की विवशता के जबरदस्त भाव लता ने प्रदर्शित किए हैं। यहाँ पर लता एक ग़ज़ब की तान लेती हैं और अपने सुर सौन्दर्य का तोहफा देती हैं। यह उतरती तान है जो मध्य सप्तक से मंद्र सप्तक की ओर आती है। जितनी आसानी से लता का स्वर मध्य से तार सप्तक की ओर चला जाता है, उतनी ही आसानी से वह नीचे भी उतरता है। यह मुम्किन तभी हो पाता है। जब गायक का रियाज़ मजबूत होता है।

जिस गीत का मुखड़ा ही ऐसा मोहक रचा गया हो, तो अंतरे की फिर क्या बात! दोनों अंतरों की रचना एक समान है। अंतरों में भी पहली दो पंक्तियों में लता के सुर मध्य सप्तक में सीमित किए हुए हैं तो अंतिम दो पंक्तियों में तार सप्तक के मध्यम को छूते हुए नज़र आते हैं ताकि भावों की अभिव्यक्ति में शिद्दत उत्पन्न हो सके। जी हाँ, काली 1 के तार सप्तक का मध्यम! पहले अंतरे की पहली पंक्ति के पलकों में के को पर हरकत और में अक्षर पर लता ने मींड ली हुई है। एक दर्द की दुनिया है पर फिर लता ने मींड लेकर एक लाजवाब हरकत ली है। कहने को जवानी है, में है के पश्चात लता ने एक खूबसूरत पॉज़ लिया है। साजन पर एक छोटा आलाप लेते हुए लता के सुर मध्य सप्तक के षढज से सीधे तार सप्तक के गंधार को छूते हैं। तीसरी पंक्ति के साजन से जुदा हो कर, ये रुठी हुई उल्फ़त -इस संपूर्ण खंड में जब लता के सुर तार सप्तक में सुरीला विचरण करते हुए नायिका के भावों को प्रस्तुत करते हैं तब श्रोता स्वयं को लता के भावों से मंत्रमुग्ध होता हुआ महसूस करता है। लता मंगेशकर अपने सुरों से किसी भी प्रकार के भावों का जादू बिखेरती रही हैं, यह गीत इस बात का बेजोड़ उदाहरण है। आनंदित हो उठे होंगे गीतकार भी लता मंगेशकर की बेजोड़ गायकी पर! ऐसी नायाब प्रस्तुति ही गीतकारों को भी अपेक्षित होती है। इस गीत में बसी लता मंगेशकर की सुरीली नक्काशी, इसे प्रस्तुत लेख के योग्य बनाती है।

" दिल जलेगा तो ज़माने में उजाला होगा

हुस्न जर्रों का सितारों से निराला होगा। " [3]

यहाँ सम्पूर्ण गीत में भाव विषाद के हैं और भावों में तीव्रता अधिक है ।

" हाय जिया रोए-रोए ,पिया नहीं आए

इक मैं ही जागूँ ,सारा जग सोए।"[4]

यहाँ एक बिरहिन के दिल को चीरता हुआ विलाप का वर्णन है।

" मुस्कुराओ की जी नहीं लगता

पास आओ के जी नहीं लगता। "[5]

इस गीत में घर लौटे उदास पति को , खुश करने का प्रयत्न करती पत्नी द्वारा गाए इस प्रणय प्रसंग में मनुहार के मिलने के मीठे भाव हैं।

" मेरी दास्ताँ मुझे ही , मेरा दिल सुना के रोए

कभी रोके मुस्कुराए , कभी मुस्कुराके रोए।"[6]

यहाँ लताजी की उदासी का निरूपण है। इस प्रकार इस शोधालेख में मैंने लताजी के विभिन्न गीतों के माध्यम से उनके विरह वर्णन को चित्रित किया है।

हिंदी विभाग सहायक आचार्य

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय बारां

संदर्भ - सूची :-

1.लता-श्रुति संवाद -अजय देशपांडे -पृ-205

2 .वही .पृ.211

3 .वही .पृ.243

4 .वही .पृ.267

5 .वही .पृ.275

6 .वही .पृ.375

पूर्णिका

- गोर्वद्धन सिंह फौदार

गीत लताएँ लता जी की
संघर्षों बाद जग फैली थी
पाईं लाखों उपलब्धियाँ
पार्श्वगायिका सुप्रसिद्ध थी।
शान्त साधारण थी साक्षात
मूरत माता सरस्वती की
स्वर साम्राज्ञी कण्ठ कोकिला
कर्णप्रिया वह हस्ती थी।
मीना, उषा, आशा की प्यारी
धड़कन भाई हृदयनाथ की
तीनों लोकों की थी श्रद्धा
जन-जन के कण-कण में थी।
दादा साहेब फाल्के अलंकार
पद्मभूषण पद्मविभूषण
भारत रत्न से अलंकृत
जगत की प्यारी दीदी थी।
सुरम्य कण्ठ को लगा विराम
स्वर्ग चली करने विश्राम
माघ शुक्ल पक्ष पंचमी तिथि
दीदी लता की अशुभ घड़ी थी।
'सच्चिदानन्द' शोक न करना
पन्नों पर इतिहास के है लिखा
स्वर साधिका सुरों की मल्लिका
आई कभी इस धरा पर थी।

एक तू ही भरोसा, एक तू ही सहारा

- लता मंगेशकर

आजा के सब मिलके रब से दुआ माँगे
जीवन में सुकून चाहे, चाहत में वफ़ा माँगे
हालात बदलने में अब देर न हो मालिक
जो दे चुके फिर वह अंधेर न हो मालिक ।
एक तू ही भरोसा, एक तू ही सहारा...
इस तेरे जहाँ में नही कोई हमारा
हे ईश्वर या अल्लाह, ये पुकार सुन ले
हे ईश्वर या अल्लाह है दाता (2)
हमसे न देखा जाए बरबादियों का समा
उजड़ी हुई बस्ती में ये तड़प रहे इंसान
नन्हें जिस्मो के टुकड़े लिए खड़ी है एक माँ
बारूद के धुएँ में तू ही बोल जाए कहाँ
एक तू ही भरोसा, एक तू ही सहारा...
नादाँ है हम तो मालिक, क्यों दी हमें यह सज़ा
यहाँ है सभी के दिल में नफ़रत का ज़हर भरा
इन्हें फिर से याद दिला दे सबक वोही प्यार का
बन जाए गुलशन फिर से काँटो भरी दुनिया
एक तू ही भरोसा...मेरी पुकार सुन ले...
हे ईश्वर या अल्लाह, ये पुकार सुन ले
हे ईश्वर या अल्लाह है दाता (2)
मेरी पुकार सुन ले, मेरी पुकार सुन ले
मेरी पुकार सुन ले...

फिल्म - पुकार

ISSN 1694-4100

Vasant 158, September 2023
Designed & Printed at the Publishing & Printing Department
Mahatma Gandhi Institute, Moka - Republic of Mauritius.